र पुस्तक-मालाकी चौथी पोथी

अंदमानकी गूँज

अनुवादक, सिद्धनाथ माधव लोंढे

र' पुस्तक-मालाकी चौथी पोथी

अंदमानकी गूंज

अनुवादक, सिद्धनाथ माधव लोंढे

[प्र]णवीर' पुस्तकमालाकी ४ थी पुस्तक

अंदमानकी गूंज

अथवा

[वीर]-श्रेष्ठ सावरकरजीके, कालेपानीकी जेलसे, अपने भाईके नाम लिखे हुए पत्र।

अनुवादक

सिद्धनाथ माधव लोंढे।

प्रकाशक

'प्रणवीर'-पुस्तक-माला कार्यालय,

धनतोली नागपुर

[सर्वा]धिकार रक्षित } १९२४ { मूल्य दस आने डाकखर्च ३ आने।

हीरालाल रामचन्द्र चाण्डक द्वारा 'समाज सेवक' प्रेस, नागपुर
में मुद्रित और
'प्रणवीर'-पुस्तक-माला कार्यालय, धनतोली, नागपुरकी ओरसे
प्रकाशित

परिचयके दो शब्द

बॅरिस्टर विनायकराव सावरकरके विचारोंका यह संग्रह हिन्दी पाठकोंकी सेवामें उपस्थित करते हुए हमें हर्ष होता है। बारह वर्ष तक कालेपानीकी नरक-यातनाएं सहते हुए, एक वर्षमें एक दिन मिलने वाली सहूलियतका लाभ उठाकर श्री० सावरकरजीने जो पत्र अपने छोटे भाई बाल सावरकरको लिखे थे, उन्हींका यह संग्रह है। मूल चिट्ठियाँ अंग्रेजीमें लिखी गयी हैं, जेलके अधिकारियोंकी कलम और कतरनीकी करामातसे उनका बहुत कुछ भाग कट-छंट चुका है, फिर भी जो अंश बचा है वही इस 'कैदी' की ज्वलन्त देशभक्ति की साक्षी देनेके लिए पर्याप्त है। इनमेंसे पहले तीन तथा अंतिम पत्र मराठी पद्योंमें हैं, शेष सब अंग्रेजीमें लिखे हुए हैं। नागपुरके वकील श्री० विश्वनाथ विनायक केलकर महोदयने इन पत्रोंको 'An Echo from Andamans' शीर्षकसे अंग्रेजीमें प्रकाशित किया, किन्तु उससे केवल देशी भाषा जानने वालोंका कोई लाभ न देखकर यह हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो रहा है। मराठी भाषामें भी अभीतक इन पत्रोंका अनुवाद-संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है, अतएव हमें आशा है कि केवल हिन्दी-भाषा-भाषी ही नहीं वरन राष्ट्र-भाषाको समझनेवाले अन्य-भाषा-भाषी सज्जन भी इससे लाभ उठा सकेंगे।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, श्री. विनायकरावके पत्र कोरे घरू व्यवहारकी चिट्ठियां नहीं हैं; उनमें अनेक विषयोंपर उनके वि-

चार भी भरे पडे हैं। पाठकोंको सुगमताके लिए पुस्तकके अंतमें अक्षरानुक्रमसे अनुक्रमणिका लगा दी गयी है, जिसके द्वारा किसी भी विषयके विचारोंको तुरंत देखा जा सकता है। "An Echo from Andamans" में यह सुगमता उपलब्ध नहीं है।

'मध्यभारत प्रेस,' खण्डवा।
२५ नवम्बर १९२४ } सिद्धनाथ माधव लोंढे।

निर्देश-पत्र

—*—

वीर-श्रेष्ठ विनायकराव सावरकर

अंदमानकी गूंज

पहला पत्र

—*—

(सन १९०९ के जून मासमें श्री० गणेशपंत सावरक
बॅ० विनायकराव सावरकरके बडे भाई, को आजन्म काले पानी
कठोर दंड दिया गया था। थोडे ही समय बाद इनके कनिष्ठ भ्रा
'बाल'—नारायण सावरकर—को भी लार्ड मिंटोपर चलाये
बमके मामलेमें, अवस्थाके १९ वें वर्षमें सजा हुई। ये दोनों
चार श्री० गणेशपंतकी धर्म-पत्नी स्वर्गीया देवी यशोदाबाईने
देवर विनायकरावको विलायत लिख भेजे। उस समय विना
पर लंदनके ' टाइम्स ' आदि समाचारपत्र टीका टिप्पणी कर
और उन्हें षडयंत्र-कारियोंके प्रमुख बतलाकर उनकी गिरफ
लिए सरकारसे कह रहे थे। ऐसे अवसरपर विनायकरावजीको
भावजका पत्र मिला। अपनी निराधार एवं कष्ट-संत्रस्त दुखी
जको उन्होंने जल्दी जल्दीमें सांत्वनाका संदेश लिख भेजा
समय विनायकरावजीकी अवस्था २५ वर्षकी थी। विना
जीने जो पत्र लिखा था वह मराठीमें पद्यमय था। उसका
अनुवाद नीचे दिया गया है।)

वीर-श्रेष्ठ विनायकराव सावरकर

अंदमानकी गूंज

पहला पत्र

(सन १९०९ के जून मासमें श्री० गणेशपंत सावरकर, बॅ० विनायकराव सावरकरके बडे भाई, को आजन्म काले पानीका कठोर दंड दिया गया था। थोडे ही समय बाद उनके कनिष्ठ भ्राता 'बाल'—नारायण सावरकर—को भी लार्ड मिंटोपर चलाये गये बमके मामलेमें, अवस्थाके १९ वें वर्षमें सजा हुई। ये दोनों समाचार श्री० गणेशपंतकी धर्म-पत्नी स्वर्गीया देवी यशोदाबाईने अपने देवर विनायकरावको विलायत लिख भेजे। उस समय विनायकराव पर लंदनके 'टाइम्स' आदि समाचारपत्र टीका टिप्पणी कर रहे थे और उन्हें षडयंत्र-कारियोंके प्रमुख बतलाकर उनकी गिरफ्तारीके लिए सरकारसे कह रहे थे। ऐसे अवसरपर विनायकरावजीको अपनी भावजका पत्र मिला। अपनी निराधार एवं कष्ट-संत्रस्त दुखी भावजको उन्होंने जल्दी जल्दीमें सांत्वनाका संदेश लिख भेजा। उस समय विनायकरावजीकी अवस्था २५ वर्षकी थी। विनायकरावजीने जो पत्र लिखा था वह मराठीमें पद्यमय था। उसका हिन्दी अनुवाद नीचे दिया गया है।)

सान्त्वना

जिसे तूने अपने बालककी तरह पाला, और माताका भी स्मरण नहीं होने दिया, वही तेरा भाई, श्रीमती वत्सल भावज ! तुझे नमस्कार करता है। तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ, समाचार जाने। पत्र पाकर प्रसन्नता और संतोष हुआ। हम लोगोंका वंश धन्य है ! निश्चय ही वह ईश्वरका अंश मालूम होता है क्योंकि राम-सेवाका किंचित पुण्य हमें सद्भाग्यसे प्राप्त हुआ है।

संसारमें अनेक फूल फूलते हैं और सूखकर गिर जाते हैं। किसने इन फूलोंकी गिनती की है? परन्तु जिस फूलको गजेन्द्रने अपनी सुंडासे तोडा, जो श्रीहरिकी सेवाके लिए नष्ट हुआ, वह कमल-पुष्प अमर होगया, मोक्षदायी बन गया और पवित्र हो गया। उस पुण्यात्मा गजेंद्रकी और मुक्त होनकी इच्छा रखने वाले भारत-की अवस्था समान है ! करुणा-रवके साथ भारत-माता ईश्वर-श्याम श्रीरामकी याचना कर रही है। वही हमारी माता अपने उद्यानमें आती है, अपने सुन्दर फूलोंपर मोहित होती है और श्री चरणोंपर उन फूलोंको तोडकर समर्पण करती है। अहोभाग्य हैं हमारे वंशके ! निश्चय ही वह ईश्वरी अंश है ! इसी लिए राम-सेवाका पुण्य-लेश हमें प्राप्त हुआ है।

मां, इसी तरह सब फूलोंको तोडकर श्रीराम-चरणोंपर अर्पण कर दो ! इस नश्वर नर-देहकी कुछ सार्थकता होवे। वह वंश-लता अमर है, जो देवकार्यके लिए निर्वंश होती है और जिसके लोक-हित-परि-मलका सुगंध दिगंत-व्यापी हो जाता है। नवरात्रिके नवीन कालके

लिए, मा ! वत्सले ! हमारे अनन्त सुकोमल फूलोंकी माला बनाओ ! नव-मालाके पूर्ण होनेपर, नवरात्रिके समाप्त होनेपर, विजय-लक्ष्मी, कुलदेवी पुण्यमयी काली प्रकट होगी !

मेरी भावना ! मेरी स्फूर्ति ! तू धीरजकी मूर्ति है। तू पहलेसे ही प्रतिज्ञा कर चुकी है कि रामसेवा-व्रतको पूर्ण करूंगी। महान कार्य का बीड़ा उठाया है, अब महानता धारण करनी चाहिए। ऐसा कार्य करना चाहिए जो संतोंको पसन्द आये। भावना ! ऐसा कार्य होना चाहिए जिससे हमारे अनन्त पूर्वज सर्वेश्वर, तथा आनेवाली अनंत पीढ़ियां धन्य धन्य कह उठें !

दूसरा पत्र

—*—

(श्रीमती स्वर्गीया यशोदाबाईके पति गनेशपंत सारे जीवनके लिए बिछुड चुके थे। अपने निजी पुत्रकी तरह पाला हुआ छोटा देवर 'नाल' षडयंत्रके भीषण आरोपके लिए अभियुक्त था। तथापि भावजको आशाका एक दूरस्थ किरण दिखाई देता था कि बॅरिस्टरी पास किया हुआ उसका दूसरा देवर आवेगा और निराशाकी अंधेरी रातमें उसका सहायक होगा। परन्तु १९१० के मार्च मासमे, अवस्थाके २६ वें वर्षमें, श्रीयुत विनायकराव भी विलायतमें गिरफ्तार किये गये और किये गये हिन्दुस्थानको गुलामीसे मुक्त करने के सशस्त्र आन्दोलनके आरोपमें, जो सरकारके कानूनके अनुसार देहान्त दण्डसे दण्डनीय था। अपनी पूजनीय प्यारी भावजको यह समाचार देना आवश्यक था। इस जीवनमें फिरसे भावजसे भेंट होनेकी आशा न थी। इस लिए अपनी गिरफ्तारीके समाचारोंका दिव्य एवं आकर्षक मर्म प्रकट करनेके लिए श्री० विनायकराव सावरकरने ब्रिक्स्टन जेलसे अपनी भावजको अपना अंतिम सन्देश—मृत्यु-पत्र लिख भेजा। यह मृत्युपत्र भी पद्यमें है, जिसका हिन्दी अनुवाद नीचे दिया है)

मृत्युपत्र

वैशाख मासका चंद्र नभमें हास्य कर रहा था। उसकी धवल चंद्रिका मकानोंपर प्रकाश डाल रही थी। जिस जाईकी

लताको 'बाल'ने जल-सिंचन किया था वह अपने छोटे फूलोंकी महकसे फूल रही थी। ऐसे समय सभी आप्त-जन घर आये थे। उस समय हमारा घर गोकुलकी तरह आनंदमग्न हो रहा था। उन नवयुवकोंकी आदर्श दीप्ति, शुचिता, और धृति देखकर स्वयं कीर्ति भी नाचती थी। नवयौवनके प्रेमसे हम लोगोंके हृदय-पुष्प खिल रहे थे और उदात्त सभ्यताकी गंधसे सुगंधित हो रहे थे। दिव्य लता और वृक्षोंसे हमारा घर उद्यानकी तरह शोभा पाता था और उसे गांवके लोग 'धर्म-शाला' कहते थे। ऐसे समय प्यारी भावज! तू बड़ी कुशलताके साथ भोजन बनाती थी जो तेरे प्रेमके कारण अधिक ही रसाल बनता था। हम लोग बातचीत करते हुए चांदनेमें भोजन करने बैठते थे। उस समय कभी कभी श्री रामचन्द्रके बनवासकी कथा निकल पड़ती, इटली देशके स्वतंत्र होनेका इतिहास कोई कहने लगता, वीरवर तानाजीके वीर गीत हम लोग गाने लगते और कभी कभी चित्तौरगढ और पूनेके शनिवार वाडेकी बातें करने लगते। ऐसे समय अपनी इस भूमाताका—इस दास्यताके बंधनसे जकड़ी हुई, दुष्मनोंके शरोंसे छिन्न-भिन्न, प्रिय अनाथ माताका—स्मरण हो आता और उसके दुःखसे द्रवित-हृदय होकर, कई नवयुवकोंको, उसके विमोचनके लिए मैं उपदेश दिया करता था। प्यारी भावज! वह रम्य समय, वह प्रिय-जनोंका मधुर सहवास, वह चंद्र-प्रकाश, वे नव-कथाएं, वे स्मरणीय रातें, देशभूमिको बन्ध-मुक्त करनेका वह दिव्य उद्देश्य, उसकी पूर्तिके लिए किये गये उग्र उग्र निश्चय, आदि बातोंका तुझे स्मरण है? तुझे स्मरण है, देवि वहिनी! तुझे स्मरण है, उस समय युवक-संघने कहा था "हम बाजीप्रभु बनेंगे" और युवतियोंने

भी गर्वके साथ कहा था, "हम भी चित्तौरकी वीरांगनाएं बनेंगी।"
बहिनी! हमने व्रत अंधेपनसे स्वीकार नहीं किया है। आज तकका
इतिहास जिसको प्रकट रूपसे दिव्य ग्राहक कहता है उसी सतीके
व्रतको, प्यारी भावज! हमने सोच समझकर ही धारण किया है!

देखि बहिनी! उस समय प्रिय जनोंके साथ जो प्रतिज्ञाएं
हुई थीं, उन्हें स्मरण करो और आजकी अवस्थाको देखो। तुम
देखोगी कि पूरे आठ साल भी नहीं होने पाये कि हमारा उद्देश्य
इतना अधिक सफल हो गया है। ऐसे समय, बताओ, मनको हर्ष
क्यों न हो? देखो, कन्याकुमारीसे लेकर हिमालय तक इस देशमें
हलचल मच गयी है और वह (देश) दीनताका त्याग कर वीरताको
धारण कर रहा है! रघुवीरके चरणोंमें भक्तोंकी भीड़ लगी हुई है और
उधर यज्ञकुण्डमें हुताशन भी प्रदीप्त हो रहा है! उस यज्ञके करनेके
लिए जो लोग दीक्षा ले चुके हैं, उनकी परीक्षाका अवसर आया
है और रघूत्तम प्रभु पूछते हैं—"समस्त संसारके मंगलके लिए,
कहो इस अग्निमें कौन अपनी आहुति डालनेके लिये तैयार है?"
साध्वी भाभी! इस दिव्यार्थ निमंत्रणको पाकर, हमने गर्जकर कहा
'हमारा कुल प्रस्तुत है'। यह कहकर हमने ईश्वरी सम्मान प्राप्त
किया है! हम लोग पहले कह चुके थे कि हमारे देह धर्म
के लिए न्यौछावर किये जायंगे। भाभी! वह कहना अर्थहीन नहीं
था। अनंत यातनाओंको सहककर भी हमारा धैर्य नहीं टूटा और
निष्काम कर्म-योग भी हमारा खंडित नहीं हुआ! उस समय प्रिय
जनोंके साथ जो प्रतिज्ञाएं की थीं, तुम देखोगी अपनी कृतिसे आज

वे सत्य हो गयी हैं। अपनी मांको बंध-विमुक्त करनेके लिए, प्रज्वलित अग्निकुंडमें अपना स्वार्थ जलाकर हम आज कृतार्थ हो गये हैं।

मेरी मातृभूमि! तेरे चरणोंपर मैं अपना मन अर्पण कर चुका हूं। मेरा वक्तृत्व, वाग्वैभव, मेरी नयी कविता—वधू, सभीको तेरे चरणोंपर अर्पण कर चुका हूं। मेरे लेखोंके लिए भी तेरे सिवाय अन्य विषय नहीं है। तेरे स्थंडिलपर प्यारे मित्र-संघको डाल चुका हूं; अपना यौवन, देह भोग आदि सभी दे चुका हूं। तेरा कार्य नीति भरा, सब देवताओं द्वारा सु-संमत है, इसी लिए तेरी सेवामें ही मुझे रघुवीरकी सेवा दिखाई दी। तेरे स्थंडिलपर गृह, धन, आदि सभी चढा चुका हूं। प्रज्वलित अग्निमें अपनी भावज पुत्र कांता और अतुलधैर्य ज्येष्ठ भ्राताको भी अर्पण कर चुका हू और अब मैं स्वयं अपना देह भी चढानेके लिए प्रस्तुत हूं। यही क्या! यदि हम सात भाई भी होते तो भी तेरी बलि-वेदीपर मैं उन्हें चढा देता। इस भारत भूमिके तीस करोड सन्तान हैं। जो मातृभक्तिमें लगे हुए सज्जन हैं, वे धन्य हैं। यह हमारा कुल भी उन्हींमें एक ईश्वरांशकी तरह है। निर्वंश होकर भी हमारा वंश अखंड होगा।

वंश चाहे अखंड हो चाहे न हो, पर मातृ-भूमि! हमारे हेतु परिपूर्ण होवें। प्रज्वलित अग्निमें, मातृ-बन्धन-विमोचनके लिए ही अपना स्वार्थ जलाकर हम कृतार्थ हो गये हैं। प्यारी भावज! इस तरह सोचकर अपने कुलकी दिव्यता वर्धन कीजिए। श्री पार्वतीने हिमालय जैसे पर्वतपर तप किया है और कई राजपूतनियें

हंसते २ जल चुकी हैं। प्यारी भावज ! भारतीय ललनाओंका वह बल और तेज आज नष्ट नहीं हुआ है। इस बातको प्रमाणित करने के लिए, भावज ! तुम्हारा समस्त व्यवहार वीरांगनाकी तरह ही होना चाहिए। देवि, यहांसे मेरा तुझे यही सन्देश है। मैं तेरा बालक हूं, तेरे वत्सल चरणोंको यहीसे प्रणाम करता हूं। मेरा प्रेम पूर्वक प्रणाम स्वीकार करो। मेरी प्यारी पत्नीको आलिंगन कह देना। आजतकका इतिहास जिसको प्रकट रूपसे 'दिव्य दाहक' कहता है, उसी सतीके व्रतको, प्यारी भावज ! हमने सोच समझकर धारण किया है।

तीसरा पत्र

—*—

(यह पत्र सावरकरजीने पैरिसमें अपने मित्रों और सहका-कारियोंको उस समय लिखा था, जब वे गिरफ्तार किये जाकर हिन्दु-स्थान भेजे जानेवाले थे। यह ब्रिक्स्टन जेल लंदनमें सन १९१० में लिखा गया था। यह और इसके आगेके सभी पत्र अंग्रेजी भाषामें लिखे गये हैं। यह पत्र काव्यमय है और सावरकरजीका हृद्गत प्रकट करता है।)

मेरे मित्रो, मधुर मित्रताके रेशमी डोरोंसे हमारे हृदय बँधे हुए हैं। मातृ-धर्मके दिव्य संस्कारसे हमारी मित्रता अधिक मधुर व वृद्धिगत हो रही है। मित्रो! तुम्हें अंतिम प्रणाम, कोमल-ता भरा हुवा प्रणाम, जो सुगंधको जागृत करनेवाले ओस-बिंदुओंकी तरह है। मित्रो! प्रणाम! प्रणाम!

[२]

परमात्माके निश्चित किये कार्य करनेके लिए हम जुदा होते हैं। हम कभी कीर्तिके तरंगोंपर लहराते रहेंगे। कभी दुनियाको दिखाई देंगे, कभी अदृश्य होंगे! ऊंचे या नीचे, जिस कार्यमें परम पिता हमें लगा देगा, उसे ही सर्वश्रेष्ठ समझकर, यही मानकर कि हमारे जीवनका यही एकमात्र उद्देश्य था कि हम उस कार्यमें जुटे रहें, उसीमें लगे रहनेके लिए हम लोग जुदा होते हैं!

जैसे किसी श्रेष्ठ पूर्वीय नाटकमें सभी मृत या जीवित पात्र उपसंहारके समय एकत्र होते हैं, वैसे ही हम सब नाटक-पात्र, इतिहासके विस्तृत रंग-मंचपर, मानवी—संसारके दर्शकोंके सामने, तालियों द्वारा किये गये स्वागतके मध्यमें, एक बार फिर एकत्र होंगे। मनुष्य जाति हमारे प्रति कृतज्ञता प्रगट करेगी और हमारे स्वागतसे पहाड और घाटियां गूंज उठेंगी ! तब तकके लिए प्यारे मित्रो, प्रणाम !

मेरे शरीरकी तुच्छ विभूति (राख) चाहे जहां पडे—चाहे अदमानके दुःखी नालेमें, जिसका रोता हुआ प्रवाह उसके रूखेपन की आवाज सुनाता है, और चाहे गंगाके स्फटिक तुल्य प्रवाहमें, जिसमें आकाशस्थ तारे मध्य-रात्रिमें नृत्य करते हैं—परन्तु जब विजयकी तुरही प्रकट करेगी कि 'श्रीरामने अपने प्रिय पात्रोंके सिर पर विजयका सुनहला मुकुट रखा है ! दुरात्माकी हार हुई और वह उस गहरे समुद्रकी तहमें भगा दिया गया जिससे वह उत्पन्न हुआ था। अरे देखो तो, वह हमारी हिंद-माता मनुष्य जातिको सन्मार्ग बतलानेके लिए प्रकाश-स्तम्भकी तरह गौरवके साथ खडी है ! धर्म-वीर साधुओ तथा सिपाहियो ! उठो, वह युद्ध जीत लिया गया है जिसमें तुम लडे थे और लडते लडते मरे थे !!!, तब वह चमक और दमकसे हिल जायेगी।

तबतकके लिए, प्यारे मित्रो ! प्रणाम !

निद्रा-रहित होकर माताकी उन्नतिका ध्यान रखो और उन्नतिकी नाप कामके प्रयत्नसे या किये हुए कामसे न करो, परन्तु

कष्टोंके परिमाणसे करो—देखो कि हमारे लोगोंने कितना बलिदान किया है। काम तो एक प्रकारका अवसर है, परन्तु बलिदान नियम-बद्ध है। विशाल नये राज्यकी स्थापना बलिदानकी इसी मजबूत बुनियाद पर हो सकी है—पर वह बड़ा तभी हो सकता है जब शहीदोंकी राखमें ही उसकी जड़ जमे। जबतक परमात्मा जीवन वापिस न ले ले, जबतक ईश्वरीय आज्ञाका पालन न हो चुके, तबतक माताकी विजयके लिए प्रयत्न करो और हिन्दकी पुष्प-माला अथवा विजयीका मुकुट धारण करो।

चौथा पत्र

—*—

(सन १९१० के दिसम्बरका महीना था। दूसरे ही दिन मुकद्दमेका निर्णय होकर फांसी अथवा काले पानीकी सज़ाका प्रसाद मिलने वाला था। यह बात भी मालूम हो चुकी थी कि अभियुक्त देशभक्तोंमें विनायकराव सावरकरको कठोरतम दण्ड दिया जायगा और उसीमें उनके जीवनका अंत होगा। निश्चय केवल इसी बातका होना था कि उनके जीवनका अंत वध-स्तम्भ पर होगा अथवा उससे अधिक कष्ट-प्रद कारावासमें। उस दिन अपने जीवनका अंत सन्निकट आया जानकर सावरकरजीने अपनी मातृभूमि तथा देश-भाइयोंके पास मातृ-ऋणकी पहिली किश्तके तौर पर "पहिला हप्ता" शीर्षक कविता भेजी थी। यह पद्य-सन्देश उन देशभक्त अभियुक्तोंके हाथ भेजा गया था जिनके छूटनेकी सम्भावना थी। मूल मराठी पद्यका हिन्दी अनुवाद नीचे दिया है)

पहिली किश्त

मां! अपने इस अबोध बालककी अल्प-स्वल्प सेवा सच्ची जान स्वीकार कर! मां, हम बहुत ऋणी हो गये हैं। अपने स्तनका दूध पिलाकर तूने मां, हमें धन्य कर दिया है। उस ऋणकी पहिली किश्त, मां, आज मैं तप्त-स्थण्डिल पर अपना देह अर्पण करके चुकाता हूं। मैं फिरसे जन्म धारण करूंगा और तेरे दास्य-वि-

मुक्ति-हवनमें फिरसे अपने देहकी आहुति दूंगा। तेरा सारथि कृष्ण है और सेनापति श्रीराम। तेरी सेना तीस करोड है। मेरे विना तेरा काम न रुकेगा। दुष्टोंका दलन करके तेरे वीर सैनिक हिमालयके उच्च शिखरपर अपने हाथों विजयका सुनहला झण्डा फहरायंगे। तथापि, मां, अपने इस अबोध बालककी अल्प-स्वल्प सेवा स्वीकार कर।

पांचवां पत्र

—*—

(सन १९११ में बॅरिस्टर विनायकराव सावरकरको दो जन्म का कालापानी दिया जा चुका था। उनके बडे भाई श्री० गणेश-पंतको भी कालापानी दिया गया था। दोनों भाई अंदमानकी काल कोठरीमें देशभक्तिके उपहारका स्वाद ले रहे थे! छोटे भाई नारायण-राव सावरकर हिन्दुस्थानकी जेलमें ६ मासका कठिन कारावास भुगत रहे थे। ऐसे समय उनके कुटुम्बमें कोई भी पुरुष बाहर न था जिसे वे पत्र लिखते। अन्य लोग उनसे पत्र-व्यवहार करनेमें डरते थे, क्योंकि उनके साथ पत्र-व्यवहार करनेवाला व्यक्ति सरकार की निगाहमें आ जाता था और पुलिसकी सन्देह भरी नजरोंका शिकार होता था। इस लिए सावरकरजीने यही उचित समझा कि जबतक उनके छोटे भाई जेलसे मुक्त होकर किसी काम-धंधेमें न लग जायं तबतक किसीसे पत्र-व्यवहार ही न किया जाय, क्योंकि ऐसा करना एक तरहसे पत्र-व्यवहार करनेवाले व्यक्तिको आफतमें डालना था। आगे दिये हुए पत्र सभी अंदमानकी नारकी जेलसे भेजे गए थे। जेलके रक्षकोंकी सावधान दृष्टिकी चलनीसे ये पत्र निकले हैं। श्री० सावरकरजीको वर्षसे एक बार एक पत्र लिखनेकी इजाजत थी।)

ॐ

ता. १५–१२–१२

प्रियतम बन्धु!

आज १८ महीनोंके बाद मुझे कलम और दावातको हाथ लगानेका अवसर मिल रहा है। इस हिसाबसे हर

कोई आदमी पढने–लिखनेकी कला शीघ्र ही भूल सकता है। इस विलम्बके कारण तुम्हे बहुत चिन्ता हुई होगी परन्तु गत जुलाईमें (बडे भाई) बाबाकी चिट्ठी तुम्हें मिली होगी। मैंने सोचा कि हम दोनोंके एकही समय तुम्हें दो पत्र लिखनकी अपेक्षा, यह बात तुम्हें अधिक संतोष देगी, कि मैं कुछ महीनों बाद तुम्हें पत्र भेजूं। मुझे बडी प्रसन्नता हुई जब यह मालूम हुआ कि तुम मेडिकल काले-जमें भर्ती हो गये हो और तुम्हारा अध्ययन अच्छी तरह चल रहा है। तुम्हें वैद्यकके अध्ययनमें रुचि है ? मैं तो इस विषयको बहुत अच्छा समझता हूं। मेरी सलाह है कि तुम केवल औषधि-शास्त्र ही न सीखो, वरन शरीर-शास्त्रको भी अपने अध्ययनका विशेष विषय ब-नाओ। इस शास्त्रको केवल धन्दा ही न समझो वरन अपने जीवन का अध्ययन बनाओ। दया और परोपकारके लिए इस शास्त्रका क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। समस्त संसारमें इसकी प्रतिष्ठा है। जंगली असभ्य जातियां तथा सभ्य आर्य जातियां, दोनों इसका आदर करती हैं। शरीर-मंदिरमें आत्माका निवास है। अतए आत्माके अध्ययनके बाद शरीर-शास्त्रके अध्ययनका ही दर्जा है।

गत वर्ष तुमने जो पुस्तकें चुनी थीं वे बडी सुंदर थीं। मोरो-पंत, भारत, विवेकानंद–सभी प्रतिष्ठाप्राप्त ग्रंथ थे। मैंने जो पुस्तकें मंगवाई थीं उनमें ' ज्ञेय मीमांसा ' और ' अज्ञेय मीमांसा, नहीं आयीं–क्यों ? इस वर्षके लिए भी मैंने एक फेहरिस्त भेजी है, परन्तु १० रुपयोंसे अधिक उनके लिए खर्च मत करना। यदि फेहरिस्तके पुस्तकोंका मूल्य उक्त रकमसे अधिक हो तो नीचेसे

पुस्तकें छोडते चले जाना। यह आवश्यक नहीं है कि सभी पुस्तकें नयी हों। अगर चाहो तो पुरानी भी भेज सकते हो।

भला यह तो बताओ, बंगाल तुम्हें पसंद आया या नहीं ? पूजा-की छुट्टियोंके बाद इस समय तुम कलकत्ते पहुंच गये होगे और पूरे बंगाली बाबू बन गये होगे। कहीं मराठी भाषा तो नहीं भूल गये ? पर इसका ध्यान रखना कि तुम कहीं और कुछ न खो बैठो। मुझे भय है कि शायद किसी दिन मुझे यह समाचार सुन पडे कि चतुर बंगालियोंमेंसे किसीने तुम्हारा हृदय चुरा लिया। मैं तो भाई, इस बातके लिए बडा इच्छुक हूं कि तुम मेरे लिए एक नन्हीसी बंगाली भावज लाओ। हिन्दुओंके अंतर्प्रान्तीय विवाहोंका मैं प्रबल पक्षपाती हूं, परन्तु साथ ही अपने देशकी वर्तमान अवस्थामें यूरोपकी लडकियोंसे शादी करनेका मैं पूरा पूरा विरोधी हूं।

प्यारे बाल, अब कुछ मेरी यहांकी हालत भी सुन लो। मेरा स्वास्थ्य तो अच्छा है। जबसे इस जेलमें आया हूं, मुझे कभी कोई बडी बीमारी भी नहीं हुई और मैं अपना वज़न भी उतना ही रख सका हूं जितना मेरे यहां दाखिल होनेके समय था। शरीर और मनसे मेरा काम ठीक चल रहा है। कुछ दृष्टियोंसे तो मेरा स्वास्थ्य इतना अच्छा पहले भी नहीं था। जेलका जीवन भलाई बुराई दोनोंके लिए एक अद्वितीय अवसर है। उसके अंदर घुसते समय मनुष्य जैसा रहता है, वैसा बाहर निकलते समय रह ही नहीं सकता। या तो वह सुधरकर निकलता है या बिगडकर, या तो देव बन जाता है या दानव ! मेरे भाग्यसे, मेरे मनने अपने

आपको बहुत जल्दी इस नयी परिस्थितिके अनुकूल बना लिया है। मुझे आश्चर्य होता है कि इतना बेचैन और कार्यतत्पर रहनेवाला तथा देश-विदेशोंमें घूमते रहनेवाला स्वभाव, यहांकी, मुश्किलसे १२ फीट लम्बी कोठरीको, इतनी जल्दी कैसे घर सरीखा मानने लगा। मनुष्य जातिको विधाताकी यह दयामय देन है कि मनुष्यका मन परिवर्तनशील जीवन-परिस्थितिके साथ अपने आपको मिला-जुला लेता है और परिस्थितिके अनुरूप आकार धारण कर लेता है।

प्रातःकाल और संध्याकालको मैं थोडासा प्राणायाम करता हूं और तब चेतना-विहीन होकर मीठी गहरी निद्रामें मग्न हो जाता हूं। वह विश्राम कितना शांत एवं नीरव होता है! इतना शांत, कि सुबहके समय जब मैं जागता हूं, तब बडी देरतक मुझे इस बातका भान ही नहीं रहता कि मैं कैदकी कोठरीमें एक लकडीके तख्तेपर लेटा हुआ हूं। मनुष्य-जातिके समस्त सर्व-साधारण उद्देश्य एवं आकर्षकताएं मुझसे असंग हो चुकी हैं, अतएव मेरी विवेक-बुद्धि यह जानकर प्रसन्न रहती है कि मैं उस परम पिताके झंडेके नीचे सेवा कर चुका हूं और किसी हेतुसे कर चुका हूं। स्थिर तथा संतोषदायी मानसिक समानता मेरी आत्मामें भरी हुई है और वह मेरे मनको गहरी शांतिमें सुला देती है। इसके विपरीत भी कभी हो जाता है पर साधारण नियम यही है। वास्तवमें यदि मैं सहसा बंबई या लंदनके बीचमें डाल दिया जाऊं, तो मुझे 'शाकुन्तल' के ऋषिकी तरह कहना पडेगा—' जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव।' लोगोंसे भरा हुआ वह स्थान मुझे आगसे घिरे हुए घरकी भांति लगता है!

इतनेपर भी, आजाग्रह गप्पोंको सुनकर, तुम्हारे हृदयसे सम्भव है, कभी यह निश्वास निकल पड़े, 'फिर भी, तुम्हारा जीवन जेलके बाहर अधिक उपयोगी एवं तेजस्वी होता!' ऐसी अवस्थामें तुम्हें स्मरण रखना चाहिए कि बाहर रहनेवाले निःसन्देह बहुत कार्य करते हैं, परन्तु जो लोग जेलकी चहारदीवारीके अंदर काम करते हैं, वे उनसे अधिक कार्य करते हैं। और आखिर प्यारे भाई, क्या कष्ट-सहन भी एक कार्य नहीं है? वह कार्य बहुत बड़ा है, क्योंकि वह सूक्ष्म है।

जब सुबहके ५ बजे घंटी बजती है तब मैं सोकर उठता हूं। उसकी आवाज सुनते ही मुझे भासित होता है, मानो किसी ऊंचे विद्यालयमें ऊंचे अध्ययनके लिए मैं प्रविष्ट हुआ हूं। तब १० बजे तक हम अपना अपना कड़ा काम करते हैं। मेरे हाथ पांव यंत्रकी तरह काम किया करते हैं। और मेरा मन सब पहरेदारोंकी निगाह बचाकर सुबहकी ठंडी हवा खानेके लिए जाता है। पहाड़ियों और घाटियोंपर मधुर रसों, एवं श्रेष्ठ पदार्थोंका आस्वादन करता हुआ, पुष्पवेष्टित मधुपोंकी तरह, मेरा मन घूमता रहता है। इसके पश्चात मैं (कविताकी) नयी रचनाएं करता हूं। तब हम भोजन करके १२ बजे फिर काम शुरू कर देते हैं। शामके ४ बजेसे विश्राम मिलता है, उसी समय पठन आदि होता है। यहांके जीवनका यही दैनिक क्रम है।

पत्रोत्तरमें कृपया मुझे बतलाना कि हमारी मातृभूमिका क्या हाल है। कांग्रेसमें मेल हुआ या नहीं? अलाहाबादमें सन १९१०

में कांग्रेसने राजनैतिक कैदियोंके छुटकारेका प्रस्ताव स्वीकृत किया था, अब भी प्रति वर्ष वह इस प्रकारके प्रस्ताव स्वीकृत करती है या नहीं ? टाटाका लोहेका कारखाना, स्टीम नेविगेशन कंपनी अथवा कोई नया पुतलीघर या इसी तरहका कोई नया स्वदेशी कारखाना खुला है ? चीनी प्रजातंत्रका क्या हाल है ? यह क्या असम्भव कल्पना अमलमें आई नहीं जान पड़ती ? इतिहासका यह अद्भुत रम्य प्रसंग, चीनका एक दिनका काम नहीं था ! इतना ही क्या ? सन १८५० से चीनी लोग उसके लिए जी-जानसे प्रयत्न करते रहे हैं। जबतक सूर्योदय नहीं हो जाता तबतक संसार नहीं जानता कि सूर्य किस मार्गसे यात्रा करता है। ईरान, पुर्तगाल और मिश्रका क्या हाल है ? दक्षिणी अफ्रिकाके हिन्दुस्थानियोंकी मांगें पूरी हुई या नहीं ? यदि कौन्सिलने, माननीय गोखलेके अनिवार्य शिक्षा बिल जैसा कोई कानून 'पास' किया हो तो सूचना देना। लोकमान्य तिलककी रिहाई कब होने वाली है ?

तुमने क्या मेरा पत्र प्रिय यमुनाको दिखलाया था ? मेरी सब बातोंका अनुवाद उसे सुना देना। कुछ ही वर्षोंके बाद, संभवतः ५ सालके बाद, आजसे अच्छा समय आयेगा। इसलिए मेरी प्यारी पत्नी, थोड़ा समय और धीरजके साथ बिताती रहो। प्यारी भावजको सादर प्रणाम। वही मेरी मां, बहिन तथा मित्र रही है और आज भी आशीर्वादोंके द्वारा है। और भी कई लोगोंके स्मरणसे मेरा हृदय भरा हुआ है, परन्तु प्रकट कारणोंसे मैं उनका नामोल्लेख नहीं कर सकता। उनसे कहना कि मैं प्रत्येकका स्मरण करता हूँ। भला उनको मैं किस तरह भूल सकता हूँ ? जेलका आदमी किसी

को नहीं भूल सकता। नये प्रभावोंसे अलग रहनेवाला मन पुराने स्मरणोंसे ही पेट भर सकता है, इसलिए, कैदखानेमें, पुराने मिलने वालोंको भूलना तो अलग रहा, वरन उन लोगोंकी भी याद हो आती है और प्रेम होता है जिनकी याद भूल गयी थी। मेरे प्यारे मित्रो, जेलमें मनुष्य रोता ही रहता है और वृथा आशा करता रहता है कि कोई आवेगा और आंसू पोंछेगा—स्नेह और प्रेमका एक शब्द कहेगा। भाई, जेलमें मैं आपको कैसे भूल सकता हूं? मेरे सुहृद मित्रों एवं सहकारियोंसे प्रणाम कहना। उनको तुम जानते हो। मेरे जीवनकी अपेक्षा वे मुझे अधिक प्यारे हैं। उन लोगोंसे भी मेरा आभार-युक्त प्रणाम निवेदन कर देना जो आज भी तुम्हारी सहायता कर रहे हैं, और ऐसे समय कर रहे हैं जब कुछ लोग अपना सगापन, रक्त-संबंध, भी भुलाते हुए लज्जित नहीं हुए! वे जानते हैं कि जेलका पत्र नपा तुला होता है इस लिए किसीका नाम नहीं लिखता। प्यारी भाई तथा मेरी एकमात्र आशा, वसंतको आशीस। आदरणीय मामी तथा चिरंजीवी चम्पाको भी मेरा स्मरण दिलाना।

तुम्हारा ही भाई
तात्या

छठा पत्र

—*—

ॐ

श्रीराम

जेल कोठरी
ता० १५-२-१४
पोर्ट ब्लेअर

मेरे प्यारे बाल,

आओ भाई—एक वर्षका समय बीत गया है और सुखका दिवस आज फिर आया है। जो लोग जेलमें रहते हैं वे ही अनुभव कर सकते हैं कि घरसे पत्र पाने या घरको चिट्ठी लिखनेसे आत्माको कितना आनंद होता है! यह कार्य इतना प्यारा है, इतना मधुर है, कि मानों समुद्रके किनारेपर, छिटकी हुई चांदनीमें अपने पूजनीय प्रियतमके साथ बातचीत कर रहा हूँ। लेकिन ठहरो भाई—घंटी बज रही है और मुझे भोजनके लिए जाना चाहिए। १० बज चुके हैं............हां, जेलके नागरिकोंके साथ भोजन करके अब मैं फिर आगया हूँ। हां, मैंने कहा था कि घरको पत्र भेजनेका दिन मधुर होता है, मेरे लिए तो वह सदा नूतन वर्ष-दिन जैसा है। मैं अपना वर्ष उसी दिनसे गिनता हूँ, क्योंकि अपने चुने हुए प्रियतमोंके सम्मिलनसे मुझे नई शक्ति और नया उत्साह प्राप्त होता है, जिसके कारण मैं एक वर्ष तक और हँसते खेलते जिंदगी बिता सकता हूँ। मुझे खेद है कि मैंने इससे पूर्व तुम्हें पत्र नहीं लिखा और तुम्हें तार देनेका

कष्ट उठाना पड़ा। यहाँके अधिकारियोंने कृपा करके तुम्हारे तारके समाचार मुझे दे दिये थे। परन्तु भाई, यद्यपि एक वर्ष बीत चुका था तथा मुझे पत्र लिखनेका अधिकार भी था, तथापि हमारे डाक विभाग की विचित्रता यह है कि लिखनेके पांच या छै सप्ताह बाद यहाँसे पत्र कलकत्ता पहुँचता है। इसी वजहसे १४ महीनों तक पत्र नहीं पहुँच पाता। परन्तु तुम्हारा भेजा हुआ पत्र, इस बीसवीं सदीकी डाक-पद्धतिके अनुसार शीघ्र ही यहाँ पहुँच जाता है। तुम्हारे पत्रसे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा है और तुमने सम्मान सहित परीक्षामें सफलता प्राप्त की। परीक्षामें सफलता मिले या न मिले, पर अपने स्वास्थ्य को मत बिगाड़ना। मैं चाहता हूं कि तुम हट्टे कट्टे, मजबूत, फुर्ती और तेजीसे भरे हुए बनो। तरुणावस्थाका प्रथम प्रकाश तुम्हारे लिये उदित हो रहा है, यही अवस्था जीवन और शक्तिका अटूट प्रवाह है। इस लिए इस अवस्थाको, अधिक काम करके, शरीरके एक भागका अधिक उपयोग करके, दूसरेको बिगाड़ मत देना। शरीर और मस्तिष्ककी समान वृद्धि होनी चाहिए। तुम स्वयं डाक्टर हो और मुझ जैसे अशास्त्रज्ञको तुम्हें अच्छा स्वास्थ्य रखनेके लिए कहना एक तरहसे मर्यादाका अतिक्रमण करना है। पर भाई, जब नौ दीवानी होती है और जवानीमें प्रवाहित होती रहनेवाली जीवन-शक्ति तथा बढ़नेवाले शरीरकी शक्तिका संग्रह करना मनुष्य भूल जाता है। उसको इस तरह काम करना चाहिए कि वृद्धावस्थाके शीत-कालमें वह अपनी संगृहीत शक्तिका उपयोग कर सके। इसके विपरीत यदि तुम्हारी दृष्टि कमजोर हो जाय, यदि तुम बेतकी तरह

दिखाई दो तो मुझे कहना पड़ेगा 'वैद्यराज, आप अपना ही इलाज कीजिए'—(हां, मनही मन हंसो मत। मैं वैद्य नहीं हूं इसलिए मेरी आंखें यदि बिगड़ी भी हुई हैं तो भी कुछ पर्वाह नहीं। क्योंकि सभी * कानूनदां लोगोंकी आंखें खराब होती हैं-नहीं हों तो होनी चाहिए।) मुझे इस बातका गर्व है कि मेरे कुछ साथी बी. ए. और एम. ए. में प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण हुए हैं। यह उत्कृष्ट बात है। परन्तु उत्कृष्ट-तर बात तो तब होगी जब कर्तव्यके सम्मुखीन क्षेत्रसे वे अच्छी तरह युद्ध कर लेंगे, जब उसे वे जीत लेंगे, जब वे उस क्षेत्रके सुवर्ण—पदकके प्राप्तिके योग्य समझे जावेंगे और सत्कृत किये जायेंगे। मानवी-जगत के उस विशाल संगठन द्वारा प्राप्त सुवर्ण-पदकोंके सामने विश्वविद्यालयोंका सुवर्ण—सत्कार तुच्छ है। उनमेंसे कइयोंके पत्रोंका मुझे इंतजार है, क्योंकि आज भी मैं उन्हें नहीं भूला हूं। जो लोग स्वेच्छासे तुमसे कहें, उनके नाम और उनके सबन्धकी विशेष बातें मुझे लिख भेजना।

तुमने पुस्तकें बड़ी अच्छी भेजीं। 'महात्मा-परिचय' का अनुवाद कितना सुंदर हुआ है। दो पंक्तियोंकी भूमिका भी कितनी विनयपूर्ण एवं यथातथ्य है! 'धनीका माल है, मैंने भंडार तोड़कर निकाला है। मैं तो भार-वाही मजदूर हूं।' इसे मैंने बहुत ही पसंद किया। 'जाईचा मंडप' के दश बारह पृष्ठ पढ़नेपर उसकी प्रत्येक पंक्तिका प्रत्येक शब्द मेरे हृदयकी धड़कन से एकतान होकर धड़कने लगा। मैं जानता हूं, इसका लेखक कौन

---

* विनायकराव सावरकर स्वयं बेरिस्टर हैं।

हो सकता है। पुस्तकमें जो भाव प्रदर्शित किये गये हैं, भाषा भी उनके अनुरूप है। भाव भी कवित्वपूर्ण एवं उत्कृष्ट हैं, विषयके योग्य हैं, और विषय इन दोनोंके अनुरूप है। मैं चाहता हूं कि "भारत गौरव-ग्रंथ-माला" जैसी लोकप्रिय पुस्तक-मालाएं अपनी लोक-नेतृत्वकी जिम्मेदारी समझें और लोगोंकी तरंगकोही खुश न करें तथा, समय समयपर राजनीति, इतिहास, विज्ञान और अर्थशास्त्र आदि विषयके ग्रंथ, उदाहरणार्थ मिलका 'प्रातिनिधिक शासन' आदि, प्रकाशित करें। वेदांत संबंधी ग्रंथोंके सम्बन्धमें—परन्तु मेरा खयाल है कि हम जैसे आदमियोंके ऐसी वस्तुओंमें लगे रहनेका यह समय नहीं है। अमरीकनोंको वेदांत चर्चाकी आवश्यकता है, इंग्लैण्डको भी है, क्योंकि उन्होंने अपना जीवन पूर्णता, सम्पन्नता और वीरता-युक्त बनाया है—क्षत्रियत्वकी प्राप्ति की है और इस लिए वे उस ब्राह्मणत्वके द्वार पर खडे हुए हैं, जिसमें ऐसी अध्यात्म-चर्चा पढने और अनुभव करनेका कार्य साथ साथ करनेकी योग्यता रहती है। हिन्दुस्थानमें वह योग्यता नहीं है। हम सब इस समय शूद्र हो रहे हैं और वेद या वेदान्तके पठनका हमें अधिकार नहीं है।

शूद्रोंके लिए वेदोंका अधिकार न रखनेका मूल कारण यही है। निश्चय जानो कि निर्दयता, संकीर्ण-हृदयता अथवा स्व-हित-रक्षाके लिए यह शूद्र अलग नहीं रखे गये हैं, अन्यथा वे हो ब्राह्मण अध्यात्म-विद्याको अधिक सरलतासे समझाने वाले पुराणोंकी रचना न करते। समस्त राष्ट्रकी दृष्टिसे हम लोग इन उच्च विचारोंके योग्य नहीं हैं, क्योंकि यह बात प्रसिद्ध है कि द्वितीय बाजीराव पेशवा बडे वेदांती थे और शायद इसी वजहसे वे राज और पेन्शनका फरक

न समझ सके। हमें इतिहास, राजनीति, विज्ञान, अर्थशास्त्र आदिका अध्ययन करना चाहिए, इस संसारमें योग्यताके साथ रहना चाहिए। गृहस्थाश्रमके कर्तव्योंकी पूर्ति करनी चाहिए—और उसके बाद ही वानप्रस्थाश्रम और तत्सम्बन्धी तत्व-चर्चाका उदय होवे। इन ग्रंथोंका प्रयोजन कुछ भी हो, इनको लिखनेका काम विधवाओं, वृद्धों, पेन्शनरों एवं प्रत्यक्ष कार्यसे अलग रहने वालोंके लिए छोड देना चाहिए। इन लोगोंको पुरातन ग्रंथ, तथा ईश्वर, आत्मा और मनुष्य सम्बन्धी पुरातन पहेलियोंमें रहने दो। युवकोंको, जवानोंको तो भविष्यके जीवनका ध्यान होना चाहिए। वेदांत-चर्चासे क्या लाभ! बनारस ने आज तक एक भी शहीद पैदा नहीं किया और वे अपने देशके लिए एक पाई भी नहीं दे सकते!

अब कुछ अपने विषयमें भी। पिछले वर्ष मुझे कोई बीमारी नहीं हुई। मेरा स्वास्थ्य उत्तम है और वजन भी कम नहीं हुआ है। क्या यह बडी भारी बात नहीं है? इस छोटी सी कोठरीके हवा घरमें, मैं सुबह जल्दी उठता हूं, ठीक परिमाणमें ठीक समय पर भोजन करता हूं—असलमें ये बातें करनी ही पडती हैं, और अतएव 'जल्दी सोना जल्दी उठना' मुझे स्वस्थ बना रहा है; यद्यपि सम्पत्तिमान एवं बुद्धिमान नहीं। * अजी भाई डाक्टर साहब, आप भी अपने बीमारोंके लिए इस से बढिया समय-विभाग न

---

* यह प्रसिद्ध अंग्रेजी पद्य Early to bed, Early to rise, Makes a man healthy, wealthy and wise. का भाव लेकर लिखा गया है। पद्यका अर्थ है:— जल्दी सोने और जल्दी जाग जानेसे मनुष्य स्वस्थ, धनी और चतुर बनता है।

बना सके होते। मेरे शरीरका स्वास्थ्य तो अच्छा है ही पर मनका उससे भी अच्छा है । काम हल्का या भारी—जैसा भी मिलता है, मैं उसको करनेके लिए भिड़ जाता हूँ और हर समय मनमें गुनगुनाता रहता हूँ—'स्वे स्वे कर्मण्य-भिरत: संसिद्धिं लभते नर:,' 'यत: प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् । स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दन्ति मानवा: ।' अथवा 'सर्वारंभा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृता: !!' आदि । प्रति सायंकालको—आजकल मैं ऐसी कोठरीमें हूं जिसमें आकाशका किंचित भाग दिखाई पड़ता है—सूर्यका उज्वल अस्त, तथा प्रकाश और छायाका वैभव मैं देखता रहता हूं और पश्चिमकी सुर्खी, कमल जैसी छटाके ध्यानमें अपने आपको भूल जाता हूं । कभी इस बातका ख्याल करता हूं कभी उसका । कभी कविके साथ कहता हूं 'एकतस्तटतमालमालिनीम् । पश्य धातुरसनिम्नगामिव ।' अथवा 'तेन सा नेनि ममात्र गौरवम्' और कभी आदर्शवादी तत्वज्ञके गम्भीर विचार-लहरोंके साथ लहराता हूं, जो कहते हैं कि सभी दृश्यमान प्रेम आत्मगत प्रेम है और उसके सदृश बाहरी प्रेम नहीं है—कमसे कम हम तो उसे नहीं जानते । मेरा मन पूर्णतया सुखी है; उतना ही सुखी जितना किसी पुरुष या किसी स्त्रीके साथ बाहर रहता था । और यदि कभी मेरा मन बालककी नाईं मचल जाता है और आंसु ढालने लगता है, तो बूढ़ी दादी विचार-शक्ति आती है और मुस्कराकर कहती है,"प्यारे तुझे क्या हो रहा है ! किस अज्ञात वस्तुसे तुझे कष्ट हो रहा है ? क्या नादानी है ! महत्वाकांक्षाके अत्युच्च शिखरपर आरोहण करनेकी तेरी इच्छा थी न ? (व्यक्तिगत) वैभवके रथपर बैठना चाहता था ना ! यदि

चाहता था तो—तब तो ठीक हुआ ! तेरा अपजय होना ही ठीक था, ऐसी स्वार्थी अनीतिमान महत्त्वाकांक्षाकी हार होना ही उचित था। ईश्वर और मैं जानते हैं कि व्यक्तिगत रूपसे तुम्हें किसी पारितोषिक की चाह नहीं थी, न नामकी, न यशकी, न जमीनकी, न धनकी, न सुखकी। तुम यदि कुछ चाहते थे तो अत्यधिक कष्ट-सहन। कमसे कम मेरी उपस्थितिमें तो तुम यही कहा करते थे। दूसरोंके लिए, मनुष्यमात्रके लिए तुम अत्यधिक कष्ट उठाना चाहते थे। तब बतलाओ, निराशा कहाँ है ? तुम 'यज्ञं सर्वस्वदक्षिणम्' कर चुके हो। असीम कष्ट उठा रहे हो, समयकी भी सीमा नहीं है। तुम्हारा कोई कार्य, कोई समय ऐसा नहीं बीतता जो तुम्हारी अपनी जातिकी शुद्धिके लिए कष्ट-सहनमें न बीतता हो। तुम्हें तो प्रसन्न होना चाहिए। इससे अधिक तुम कर ही क्या सकते थे।" यह सुन कर मेरे मनके फिर पंख उग जाते हैं, वह उड़ता है, ऊंचा उठता है और गाता रहता है। पर यदि मनमें अहंकारकी वृद्धि होती है तो, बूढी दादी इस संसारको दिखला कर कहती है "वह हिमालय देखो। एक समय था जब वह वहाँ नहीं था और एक समय आवेगा जब वह वहाँ नहीं रहेगा। यह चंद्र और यह सूर्य-मण्डल और तारा-मण्डली देखो।" तब मेरा छोटासा मन दब जाता है, अपने आपको भूल जाता है, विराट विश्वमें विलीन हो जाता है, अपने व्यक्तिगत महत्त्व एवं स्व-चिन्ताके लिए लज्जित होता है।

तो मेरे प्यारे बाल ! हम दोनों भाई शरीरकी पूरी शांतिका यहां अनुभव कर रहे हैं। हमारे लिए जरा भी चिन्ता करनेकी आवश्य-कता नहीं है; व्यक्तिगत रूपसे संसारसे हमें लिप्त रखनेवाली यदि कोई

बात है तो वह तुम्हारा स्वास्थ्य और तुम्हारी कुशल है। यदि तुम इन दोनोंका विश्वास दिलाओ—अर्थात पूरा प्रयत्न करो तो हमें परिणामकी परवाह नहीं—तो हमें अत्यधिक सुख होगा। अभी तक भी जेलकी कोई छाया हमपर नहीं पडी है, हमपर कोई बुरा असर नहीं हुआ है। हमारा बढिया स्वास्थ्य यहांकी अच्छाईके कारण नहीं, वरन उसके न होते हुए भी कायम है। तुमने लिखा कि तुमने अधिकारियोंको दरख्वास्त देकर यहां आनेका समय पूंछा है। यहांके नियमानुसार, मुझे यहांकी कारा-कोठरीसे मुक्त किया जाकर द्वीपपर रहने की इजाजत मिल जानी चाहिए थी, क्योंकि यहांके अधिकारियोंने मेरे व्यवहारको 'अच्छा' मान लिया है, तथापि हम दोनों छोडे नहीं गये हैं। मैं गवर्मेंटसे प्रार्थना कर रहा हूँ कि वह इस बात पर विचार करे। तुम्हें जब हमारे विषयमें कुछ जाननेकी इच्छा हो तब तुम भी यहांके अधिकारियोंसे पूंछ-ताछ किया करो। थोडे ही समय बाद बाबा (बडे भाई) के ५ साल हो जायँगे और तब तुम्हें उनसे मुलाकातका अधिकार मिल जायगा। परन्तु हमें कोठरीसे मुक्त करने या हमारे सम्बन्धियोंको हमारे साथ यहां रहने देनेकी इजाजत देनेके सम्बन्धमें यहांके अधिकारी कुछ नहीं कर सकते। हां, अन्य अपराधियोंके लिए वे सब कुछ कर सकते हैं। इसमें उनका दोष नहीं है। हमारा ख्याल है कि हमारे विषयमें सब आज्ञाएं सीधी भारत-सरकारसे आती हैं। जब कभी यहांके अधिकारियोंसे जवाब न मिले तब इसके लिए भी तुम भारत-सरकारको ही लिखो। फिर भी तुम हमारे लिए अधिक झंझटमें मत पडो। हमारा ख्याल है कि शायद सर-

कार स्वयं ही, जो न्यायानुकूल होगा, करेगी। हम भी उसे समय समय पर याद दिलाते रहेंगे। इससे अधिक हमें क्या करना है? तुम तो अपने स्वास्थ्य और अपनी कुशलताकी चिन्ता करो। मैंने तुमसे हाइकोर्टमें जो कुछ कहा था उसे स्मरण कर, मुझे प्रसन्नता हुई।

प्यारी यमुनाको विश्वास दिला दो कि इन ४ वर्षोंमें नये आशाके किरण जरूर उदित होंगे। इस लिए वह श्रेष्ठ हृदय बहिनोंका श्रेष्ठ हृदय धीरज धारण करें। उसी तरह धीरज धरें जिस तरह वे अभी तक करती रही हैं। उन्हें हर तरहका मराठी साहित्य पढनेके लिए दो। केवल पौराणिक ग्रंथ ही नहीं, परन्तु पूर्व और पश्चिममें प्रकाशित होने वाले जीवन-स्फूर्तिसे भरे हुए नये, वर्तमान समयके, जीवित साहित्यके ग्रंथ भी उन्हें दो। मैंने जब अपने साथी और बंधु * सखारामकी त्यागमयी मृत्युके समाचार सुने गर्व और खेदसे मेरा हृदय भर आया। तुम जानते हो कि हाई स्कूलके जमानेमें हम दोनोंकी पहचान हुई थी। सखारामने वीरका जीवन बिताया और वीरकी तरह ही उसकी मृत्यु हुई। इस

---

* सखाराम गोर्हे—नासिक-षड्यंत्रके मुकद्दमेमें श्री० गो एक अभियुक्त थे। इन्होंने हाईकोर्ट में कहा था कि पुलिसने इकबाल करानेके लिए मुझे तीव्र वेदनाएं पहुँचाई थीं, और इस बातके लिए कोशिश की थी कि मैं अन्य लोगोंका नाम लेकर उन्हें मुकदमेमें फांस हाइकोर्टने निर्णय किया कि गोन्हेजीका कहना अतिरंजित एवं काल्पनिक था। किसका कहना सच था, यह तो समय पाकर इतिहास बतलाएगा। इस समय तो इतना ही कहा जा सकता है कि गोन्हेजी किसीको नहीं फँसाया। उन्हें ५ साल की कडी कैद की सजा दी गई और वे जेलमें ही शहीदकी मौत मरे।

अधिक अपने लिए कोई क्या चाह सकता है ! उसकी पत्नी—आपकी बहिनी (भावज) को मैंने कभी नहीं देखा, पर फिर भी तुम्हारे शब्द-चित्रसे उसकी पहचान हो गयी । मैं उसके लिए जो कुछ अनुभव करता हूं वह यह है कि वह अभागिनी अथवा गरीबिनी नहीं है । परन्तु अकेले रहकर ही इस संसारमें पवित्रतम कर्तव्य करनेके लिये निर्माण हुई है ! मेरा स्मरण उसे दिला देना । छोटे वसन्तके क्या हालचाल हैं ? वह छोटा श्रेष्ठ पुरुष मुझे एक आध पत्र लिखेगा ? वह शायद इस समय ७ वर्षका होगा । उसकी मांका क्या हाल है ? मैंने उसका अंतिम दर्शन डोंगरी जेलमें किया था । संसारमें जो कुछ अच्छी बात परमात्माने दे रखी हैं, उनमें बहिन भी एक बड़ी देन है । उससे मेरा प्यार कहना और उस छोटे श्रेष्ठ सज्जन मेरे वसंतको प्यार करना । अपने सभी सम्बन्धियोंको मेरा स्मरण दिलाना और सबसे अधिक उस व्यक्तिको, जो यद्यपि हमारी रिश्तेमें कोई नहीं है तथापि सब कुछ है और जिसे मैं विनोदके साथ हमारे दलकी माता कहता था, परन्तु अब पूरी गंभीरता और कृतज्ञताके साथ ‘ अपनी मां ’ कहता हूं । वह आज भी तुम्हारी सहायता कर रही है और मुझे स्मरण करती है—उसे मेरा नम्र प्रणाम निवेदन करना और सस्नेह स्मरण दिलाना । उन लोगोंको, जिनके नामका उच्चार न करना अधर्म है, पर फिर भी उन्हींके लाभके लिए मैं उनका उल्लेख नहीं कर सकता, क्योंकि कैदखानेमें मेरे हाथ-पांव ही नहीं वरन जबान भी बंधी हुई है और तुम उन लोगोंको जानते हो; मैं तुमको बतला चुका हूं कि मेरे

प्रियतम अभिन्न हृदय मित्र कौन कौन हैं; उन सबसे मेरा स्नेहाभिवादन। और उनमेंसे कोई अपनी इच्छासे ही अपने नामोंका उल्लेख तीसरे पत्रमें करवाना चाहें तो मैं भी अपने हृदयके बोझको हलका करूंगा और उनका नामोल्लेख करूंगा। मुझे जो पुस्तकें चाहिए उनके नाम नीचे दिये हैं। अब समय हो चुका है, इसलिए, प्यारे बाल, दुखके साथ मैं अपना पांव पीछे हटाता हूँ और तुमसे जुदा होता हूँ!

तुम्हारा ही भाई
तात्या।

सातवां पत्र

—*—

ॐ

श्रीराम

कारावास कोठरी
ता. ९-३-१९१५
पोर्ट ब्लेअर।

प्रियतम बाल,

कुंभकर्णी निद्रासे जागृत होकर आज फिर मेरी कलम तुम्हारे ७-८ मास पूर्व आये हुए पत्रकी प्राप्ति स्वीकार करनेके लिए द्रुत-गतिसे चल रही है। तुम्हारा पत्र पाकर तुम्हारी भेंटका आनंद आता है, क्योंकि तुम्हारे पत्रमें सीनेमाके चित्रोंकी तरह थोडेमें अधिक बातें रहती हैं और कारागृहके एकांत-सेवी मनुष्यकी शक्तियोंमें, सुननेकी शक्ति इतनी अधिक बढ जाती है कि जन्मांध लोगोंकी तरह मेरी आखोंके सामने भी सुनी हुई बातोंका दृश्य उपस्थित हो जाता है। जब कभी तुम्हारा पत्र आता है तब मैं प्राय: तुम्हें सामने खडा हुआ देखनेमें समर्थ होता हूं। इतना ही नहीं, बरन कल-नादिनी गोदावरीके किनारेपर अपने छोटेसे प्रसन्न घरमें रहने वाले सभी प्रिय जनों तथा प्रिय दृश्योंका मुझे दर्शन हो जाता है। बडे भाई और मैं,—हम दोनों यह जानकर सुखी हैं कि तुम्हारा जीवन ठीक ढंगसे व्यतीत हो रहा है। जबतक तुम अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखो तथा श्रेष्ठ, सुखमय एवं स्वास्थ्य-सम्पन्न जीवन व्यतीत करो, तबतक

तुम्हें हमारे शारीरिक अथवा मानसिक स्वास्थ्यकी चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं। गत वर्ष तुमने १६ पुस्तकें भेजी थीं और इस वर्ष १३, जिनमें ४ अंग्रेजी की थीं तथा शेष संस्कृत एवं मराठीकी। क्या यह संख्या ठीक है? आगे जब कभी तुम पुस्तकें भेजो, तब अपने हस्ताक्षरकी फेहरिस्त भी साथ अवश्य भेजना, जिससे हम डाक-विभागसे आयी हुई पार्सल को जाच सकें। 'समाज-रहस्य' पढ़कर मुझे खुशी हुई। उसकी दो प्रतियाँ क्यों भेजीं? यह अच्छा उपन्यास है। एक बात और, हमारी सामाजिक संस्थाओंमें सबसे निकृष्ट संस्था है-जाति। जात पांत हिन्दुस्थानका सबसे बडा शाप है। इससे हिन्दू जातिके बलवान प्रवाहके दलदल और मरु-भूमिमें नष्ट हो जानेका भय है। यह कहना कोई अर्थ नहीं रखता कि 'हम जातियोंको घटाकर चातुर्वर्ण्यकी स्थापना करेंगे।' यह न होगा, न होना ही चाहिए। इस पापको तो जड-मूलसे नष्ट हो कर डालना चाहिए। इस बात को करनेका सबसे उत्तम साधन है, साहित्य द्वारा युद्ध। सभी प्रकारके साहित्य द्वारा—विशेष कर उपन्यास और नाटक द्वारा—इस पापपर प्रहार करना चाहिए। प्रत्येक देशभक्तको चाहिए कि दोहरी नीति छोड दें और अपने मनकी बात स्पष्टता-पूर्वक कह दें तथा तदनुसार कार्य भी करें। इसमें एक ही बातका ध्यान रखना पडेगा; कहीं इस गौण विषयपर इतना अधिक ध्यान न दे दिया जाय और झगडा खडा करके हमारे आपसी सम्बन्ध इतने न बिगाड दिये जायँ कि हमारे मुख्य विषय, अर्थात् संसारसे हमारे सम्बन्धके महत्वपूर्ण कार्यको, हम भूल जायँ और उसमें बाधा उत्पन्न होकर

वह रुक जाय, क्योंकि इस विषयक ठीक सुलझाये बिना कोई भी यह प्रश्न संतोषदायक रीतिसे अथवा सफलताके साथ हल नहीं हो सकता। इसलिए मेरी इच्छा है कि 'समाज-रहस्य' जैसे अच्छे उपन्यास खूब लिखे जायँ, जो हमारे समाजको दुर्बल करने वाले इस अन्यायपूर्ण पापपर आक्रमण करें। गुजरे जमानेमें इसने बहुत कुछ लाभ पहुँचाया होगा, परन्तु अब वह मुर्दा हो चुका है। अतएव हमें उसे गाड देना चाहिये—तुम चाहो तो आंसु बहाकर ही सही।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सरकार तुम्हें इस वर्ष हमारी भेंटकी इजाजत देनेवाली है। अधिकारियोंको इसके लिए धन्यवाद दो। परन्तु मेरा दृढ मत है कि प्यारी भावजको इस वर्ष समुद्रयात्राका कष्ट न दिया जाय। तुम अकेले ही आओ और जब यहाँनकी यात्राकी सुविधा-असुविधा जान लो तब दूसरे समय भावजको और प्रिय माईको भी साथ लाओ। उन प्रिय जनोंसे भेंट करनेका सुख, उन्हींकी सुविधाके लिए छोड देना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। इस लिए इस वर्ष तुम अकेले ही आओ।

यह जानकर मेरे हृदयमें प्रसन्नताकी लहर उमड पडी कि हिन्दुस्थानकी फौजें यूरोपमें हजारोंकी संख्यामें भेजी गयीं और वह भी संसारकी सबसे प्रबल सैनिक शक्तिसे लडनेके लिए। उन लोगोंने वीरताका परिचय दिया और कीर्तिमान हुए। धन्यवाद है परमात्माका, कि हमारे देशसे मर्दानगी मिट नहीं गयी। देखो तो कितने मजेकी बात है! हम लोग इधर विदेश-यात्राका लोगोंको

उत्साह दिला रहे थे और यदि प्रति वर्ष एक दर्जन आदमी भी विदेश भेजे जाते तो अपने आपको बधाई देते थे ! परन्तु भावीने वह कर दिखाया जो हम न कर सके। हजारों हिन्दुओंने, गुरखे और राजपूतों जैसे धर्मके कट्टर और सिक्खों जैसे सुधारक, सभीने समुद्रोल्लंघन किया और वह भी सरकारकी सहायतासे। अब हमारे पुराने पंडित शास्त्रार्थका पचड़ा लेकर रोया करें और देखा करें कि विदेश-यात्रा हिन्दुओंके लिए वर्जनीय है अथवा नहीं ! विदेश-यात्रा चाहे वर्जनीय रहे चाहे न रहे, हिन्दू लोग समुद्रोल्लंघन कर चुके हैं और उसके उल्लंघनके साथ साथ वे एक युगका भी उल्लंघन कर चुके हैं ! यूरोपके धर्म-युद्धोंने यूरोपीय लोगोंको एशियाकी उच्चतर सभ्यताके संसर्गमें लाकर जो लाभ पहुंचाया था, वही लाभ इस महायुद्धने, हिन्दुस्थानकी फौजोंको समुद्र-पार भेज, हिन्दुस्थान—एशियाको पहुँचाया है।

राजनैतिक कैदियोंकी रिहाईके लिए जो दरख्वास्त पंजाबमें की गयी है, उसके लिए मैं पंजाबियोंको, उनके इस दयापूर्ण कामके लिए, हृदयसे धन्यवाद देता हूँ। तुमको इस समय तक मालूम हो गया होगा कि हममेंसे कुछ लोगोंने युद्ध-स्थलमें जानेकी इच्छा प्रकट की है और प्रसन्नताकी बात है कि सरकारने इस बातको नोट कर लिया है, यद्यपि अभीतक कोई जवाब नहीं मिला।

मैंने सुना है कि पार्लियामेंटके किसी मेम्बरने हमारे विषयमें पार्लिमेंटमें प्रश्न पूछे थे, मेरे लिए नहीं तो शायद हममेंसे कुछ लोगोंके लिए, लड़ाई छिड़नेसे पूर्व पूछे थे। क्या यह बात ठीक है ?

यदि यह ठीक हो तो इसका विशेष वर्णन लिखना तुमको 'गुरु' और 'रवि' कविताएं मिलीं ?

माननीय गोखले महोदयकी मृत्युका समाचार सुनकर मेरे हृदयको बडी चोट पहुँची। जो हो, वे एक बडे देशभक्त थे। यह बात ठीक है कि कभी कभी, खासकर ऐसे समय जब कोई गडबड हो जाती थी, वे ऐसी बातें कह बैठते और कर बैठते थे कि जिनका स्वीकार करना कुछ महीने पीछे स्वयं उन्हें ही लज्जाजनक मालूम होता। तथापि उनका जीवन मातृभूमिकी सेवाके लिए समर्पित था। उनमें व्यक्तिगत स्वार्थ नाममात्रको भी नहीं था। अपनी समझके अनुसार उन्होंने जीवनभर उसकी भलाईकी दृष्टिसे सेवा की। मृत्युका पर्दा पडनेके पूर्व उनसे मिलनेकी, और जैसा कि उन्होंने मुझसे लंडनमें अंतिम भेंटके समय कहा था, उनसे 'अपने विचारोंका मुका-बला करनेकी' मेरी बहुत इच्छा थी। कुछ विषयोंमें हमारा मतभेद था और उन्होंने कहा था 'मि० सावरकर, छै वर्षके बाद आप आइये, तब हम और आप मिलेंगे और विचार-विनिमय करेंगे।' महाराष्ट्रको चाहिए कि उनसे भी अधिक योग्य किसी पुरुषको उनकी जगह कौंसिलमें भेजे। कितना अच्छा हो, यदि प्रत्येक हिन्दु-स्थानी कमसे कम इतना ही कार्य कर सके जितना मि० गोखलेने किया था!

आगे जब तुम पुस्तकें भेजो तब 'जन्म-भूमि' और 'गौतम' नामक उपन्यास अवश्य भेजना, भाईको उनके पढनेकी बडी इच्छा है। मुझे भय था कि फ्रांसपर किये गये आक्रमणके कारण शायद

तुम्हें मैडम कामाके समाचार न मिल सकेंगे। मेरे यहां आनेके समय से श्रीमती कामा तुम्हारी दूसरी मांकी तरह रही हैं और हमारे जीवनके घोर संकट-कालमें भी वे वीरता तथा भक्तिके साथ हमारा साथ देती रही हैं। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि, इस संसार-संकटके समय भी, वे तुम्हें नहीं भूली हैं और बराबर चिट्ठियां भेजती रही हैं। ऐसे सच्चे, श्रेष्ठ और स्थिर-प्रेमी जीवके हस्तस्पर्शसे ही मनुष्यतापर फिरसे विश्वास उत्पन्न हो जाता है—वह विश्वास जो निकटतम आदमियोंके भाग जाने, सखेसे सखोंकी दगाबाजी और प्रियतमोंकी उदासीन वृत्तिसे बुरी तरह स्थान-भ्रष्ट हो चुका था। दुःख है कि उस दयामयी महिलाको मैं पत्र नहीं लिख सकता, न उसकी श्रेष्ठ जीवनी तथा आर्तों एवं दुखियोंकी सहायता करनेकी चिन्ता-शिलताकी प्रशंसा ही कर सकता हूं। मैं हृदयके अंतस्तलसे चाहता हूं कि एक बार उनके फिर दर्शन हों। जो हो, अपने सब रिश्तेदारोंके पहले उन श्रीमतीजीको मेरी श्रद्धांजलि सादर भेंट करना। इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं कि हमारे रिश्तेदार हमारे लिए प्रयत्नशील हैं, पर आश्चर्य इस बातका है कि श्रीमती कामा हमारे लिए कुछ कर रही हैं और इतना अधिक कर रही हैं।

तुम्हारी भेजी पुस्तकें पढते समय मैंने पढा कि तेलगु प्रांतमें भी उस नवजीवनका प्रवाह बह निकला है, जो समस्त भारतवर्षमें प्रकट हो रहा है। 'आंध्रसभा'का आन्दोलन बढिया है परन्तु उस प्रांतको तामिल प्रांतसे जुदा करनेका प्रश्न उन्नतिकारी नहीं है। संकुचित प्रांतीयताके कारण पैदा होनेवाली 'आंध्रमाताकी जय'

यदि यह ठीक हो तो उसका विशेष वर्णन लिखना तुमको 'गुर' और 'रवि' कविताएं मिलीं ?

माननीय गोखले महोदयकी मृत्युका समाचार सुनकर मेरे हृदयको बड़ी चोट पहुँची। जो हो, वे एक बड़े देशभक्त थे। यह बात ठीक है कि कभी कभी, खासकर ऐसे समय जब कोई गड़बड़ हो जाती थी, वे ऐसी बातें कह बैठते और कर बैठते थे कि जिनका स्वीकार करना कुछ महीने पीछे स्वयं उन्हें ही लज्जाजनक मालूम होता। तथापि उनका जीवन मातृभूमिकी सेवाके लिए समर्पित था। उनमें व्यक्तिगत स्वार्थ नाममात्रको भी नहीं था। अपनी समझके अनुसार उन्होंने जीवनभर उसकी भलाईकी दृष्टिसे सेवा की। मृत्युका पर्दा पड़नेके पूर्व उनसे मिलनेकी, और जैसा कि उन्होंने मुझसे लंदनमें अंतिम भेंटके समय कहा था, उनसे 'अपने विचारोंका मुकाबला करनेकी' मेरी बहुत इच्छा थी। कुछ विषयोंमें हमारा मतभेद था और उन्होंने कहा था 'मि० सावरकर, छै वर्षके बाद आप आइये, तब हम और आप मिलेंगे और विचार-विनिमय करेंगे।' महाराष्ट्रको चाहिए कि उनसे भी अधिक योग्य किसी पुरुषको उनकी जगह कौंसिलमें भेजे। कितना अच्छा हो, यदि प्रत्येक हिन्दुस्थानी कमसे कम इतना ही कार्य कर सके जितना मि० गोखलेने किया था !

आगे जब तुम पुस्तकें भेजो तब 'जन्म-भूमि' और 'गौतम' नामक उपन्यास अवश्य भेजना, भाईको उनके पढ़नेकी बड़ी इच्छा है। मुझे भय था कि फ्रांसपर किये गये आक्रमणके कारण शायद

तुम्हें मैडम कामाके समाचार न मिल सकेंगे। मेरे यहां आनेके समय से श्रीमती कामा तुम्हारी दूसरी मांकी तरह रही हैं और हमारे जीवनके घोर संकट-कालमें भी वे वीरता तथा भक्तिके साथ हमारा साथ देती रही हैं। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि, इस संसार-संकटके समय भी, वे तुम्हें नहीं भूली हैं और बराबर चिट्ठियां भेजती रही हैं। ऐसे सच्चे, श्रेष्ठ और स्थिर-प्रेमी जीवके हस्तस्पर्शसे ही मनुष्यतापर फिरसे विश्वास उत्पन्न हो जाता है—वह विश्वास जो निकटतम आदमियोंके भाग जाने, सखेसे सखोंकी दगाबाजी और प्रियतमोंकी उदासीन वृत्तिसे बुरी तरह स्थान-भ्रष्ट हो चुका था। दुःख है कि उस दयामयी महिलाको मैं पत्र नहीं लिख सकता, न उसकी श्रेष्ठ जीवनी तथा आर्तों एवं दुखियोंकी सहायता करनेकी चिन्ता-शिलताकी प्रशंसा ही कर सकता हूं। मैं हृदयके अंतस्तलसे चाहता हूं कि एक बार उनके फिर दर्शन हों। जो हो, अपने सब रिश्तेदारोंके पहले उन श्रीमतीजीको मेरी श्रद्धांजलि सादर भेंट करना। इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं कि हमारे रिश्तेदार हमारे लिए प्रयत्नशील हैं, पर आश्चर्य इस बातका है कि श्रीमती कामा हमारे लिए कुछ कर रही हैं और इतना अधिक कर रही हैं।

तुम्हारी भेजी पुस्तकें पढ़ते समय मैंने पढ़ा कि तेलगु प्रांतमें भी उस नवजीवनका प्रवाह बह निकला है, जो समस्त भारतवर्षमें प्रकट हो रहा है। 'आंध्रसभा'का आन्दोलन बढ़िया है परन्तु उस प्रांतको तामिल प्रांतसे जुदा करनेका प्रश्न उन्नतिकारी नहीं है। संकुचित प्रांतीयताके कारण पैदा होनेवाली 'आंध्रमाताकी जय'

की ध्वनिकी बात पढकर मुझे बहुत दुःख हुआ। इस छोटीसी घटनासे ही हवाका रुख पहचाना जा सकता है। महान स्वदेशी आन्दोलनका यह हानिकारक प्रत्याघात है और समय बीतनेके पूर्व ही उसे ठीक कर देना चाहिए। बंगभंगके छोटेसे आन्दोलनसे ही स्वदेशीका सम्बन्ध रहनेसे यह प्रत्याघात हुआ है। प्रत्येक प्रांत जुदा होना चाहता है और अपने ही दीर्घ-जीवनकी प्रार्थना करता है। परन्तु यदि राष्ट्र जिंदा न रहेगा तो प्रांत किस प्रकार जिंदा रह सकेंगे? सभी प्रांत—महाराष्ट्र, बंगाल, मद्रास—बडे हैं, और दीर्घजीवी होंगे, परन्तु भारतभूमिके दीर्घ जीवनसे! इसलिए हमें चाहिए कि 'आंध्रमाताकी' नहीं, वरन 'भारतमाताकी जय' कहें, जिसका आन्ध्र एक अंग मात्र है। हमें 'बंग आमार' न कहकर 'हिंद आमार' का संगीत गाना चाहिए। सभी प्रान्तों और छोटी छोटी भाषाओंको जुदा जुदा होनेके बजाय एक हो जाना चाहिए, वर्तमान हद-बंदीको तोड देना चाहिए। भाषाओंकी झंझट मिटा देनी चाहिए, उनको छातीसे लगाकर न रखना चाहिए। छोटे छोटे राष्ट्रोंका हाल देखिए। क्या बेल्जियमका उदाहरण पर्याप्त नहीं है? इच्छा न होनेपर भी ब्रिटिश सरकारने जो सबसे बडा लाभ हमें पहुँचाया है वह है हमारी विभिन्नताओंको एक ही भट्टीमें गलाकर तथा ढालकर, हमें ठोक पीट कर एक राष्ट्र बना देना। अब अपने इस इष्टोद्देश्यके मार्गमें बाधक होने वाली अडचनोंको मिटानेके बजाय, हम लोग ब्रिटिश शासनके इस वरदानके फल-स्वरूप मिली हुई गुलामीकी जंजीरको गलेसे लगा रहे हैं और वरदानको शाप बना रहे हैं।

मेरा खयाल है कि अब मैं तुम्हारे पत्र एवं तुम्हारी भेजी हुई पुस्तकोंके विषयमें, मुझे जो कुछ लिखना था, लिख चुका हूँ। आगेके लिए इस पत्रके साथ भेजी हुई फेहरिस्तके अनुसार पुस्तकें भेजना। यदि तुम सितंबरकी पहली तारीखसे पहले आओ तो पुस्तकोंकी पार्सल भेजनेके बजाय तुम स्वयम् उन्हें अपने साथ लेते आना। यदि न आओ तो पार्सल भेजना। मित्रोंके साथ आवश्यक पत्र-व्यवहार कर चुकनेपर इस पत्रका उत्तर शीघ्र देना। तुमने जिन महाशयका उल्लेख पत्रमें किया है, उनकी भेंटके समाचार सुनकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। मुझे मालूम था कि तुम दोनों शीघ्र ही हिल-मिल जाओगे क्योंकि 'समानशील–व्यसनेषु सख्यं' होता है। मेरा उन्हें प्रेम-पूर्वक स्मरण दिलाना। यहां मुझे उनका स्मरण बार बार होता है। अपने प्रोफेसर साहबका क्या हाल है? मेरा हृदय आनंदसे भर जाता है, जब मुझे खयाल आता है कि, उस निर्जन, जलती बालूकी मरुभूमिसे, जहां प्यासे हृदयको शांत करनेके लिए आशाकी एक भी बूंद नहीं मिलती, और जहांके सूखे हुए प्रसूनोंको ओसका एक भी बिंदु हरा नहीं करता, इस समय एक और पक्षी अपने छोटेसे प्यारे घोंसलेमें वापिस आ गया होगा! उसकी मुक्तिमें तथा अन्योंकी मुक्तिमें मैं अपनी भी किंचित् मुक्ति अनुभव करता हूँ। यदि गरीब सखाराम भी आज जीवित होता तो कैसी अच्छी बात होती! यद्यपि उसके जीवित रहनेकी इच्छा करना मूर्खता-पूर्ण एवं अप्रतिष्ठा-जनक है, क्योंकि सत्कार्यके लिए देहार्पण करके उसने अच्छा ही कार्य किया है, तथापि हृदय चाहता है!

हमारे विषयमें, मैं तुम्हें विश्वास दिलाना चाहता हूँ, कि जरा भी चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं। हमारे मुकद्दमेंके सभी कैदी, जिन्हें कुछ अवधितक कारावास दिया गया था, हिन्दुस्थान भेज दिये गये हैं और केवल हम लोग, जो आजन्म-दण्ड-प्राप्त हैं, यहां हैं। जबतक महायुद्ध जारी है, तब तक, मैंने निश्चय कर लिया है कि, यहांके अधिकारियोंसे, अड़चन न हो इस लिए, किसी तरहकी दरख्वास्त न की जाय। इस समय हम दोनोंका स्वास्थ्य अच्छा है। कप्तान मुरे, जो अब मेजर हो गये हैं, जेलके सुपरिण्टेण्डेण्ट हैं। जबतक ये महाशय यहां हैं तबतक व्यक्तिगत शत्रुता प्रगट करनेवाला कोई कार्य नहीं किया जायगा, न ऐसी कोई बात कही जायगी और न नियमोंके बाहर छोटे मोटे कष्ट ही दिये जायंगे। तुम जो पत्र अथवा पुस्तकें भेजोगे वे मुझे दे दी जायंगी। हमारा दैनिक जीवन उसी तरह चल रहा है जैसा गत वर्ष था। कारागृहमें जो बात पहले दिन होती है, यदि कोई अधिक बुरी बात न हो तो, वही सदा होती है। वास्तवमें कारा-जीवनके अनुशासनका निचोड़ ही यह है कि सब नवीनताएं, सब परिवर्तन दूर रखे जायें। किसी अजायबघरके नमूनों एवं विचित्र-वस्तुओंकी तरह हम लोगोंमेंसे प्रत्येक आदमी उसी स्थानपर, उसी हालतमें है, हम उसी बोतलमें (कोठरीमें) बंद हैं, और हमपर थोड़ी बहुत धूल चढ़ जानेके सिवाय उन्हीं अंकोंका लेबल लगा हुआ है। गत वर्षके अपने पत्रमें मैंने जो 'मार्ग-दर्शक' तुमको लिख भेजा था उसे मेरी यहांकी हालतका, सदाके लिए किया गया, वर्णन समझो। हम सुबह जल्द उठते हैं, परिश्रमसे काम करते हैं, समयपर भोजन करते हैं, ठीक समयपर

और ठीक एक ही जगहपर, एक ही किस्मका खाना, यकसां तादादमें दिया हुआ, और एक ही ढंगसे, —कैदखानेके अद्वितीय जेल-कौशल और डाक्टरी जांचके साथ—बना हुआ, खाते हैं। कामसे बचे हुए समयमें मैं खूब पढता हूं और कभी शामके वक्त कई फूलोंपर आक्रमण करता हूं, जिनके अब नाममात्र ही स्मरण रहे हैं—फूलों जैसे कोमल विषयोंपर अनुप्रास-रहित कविताओंकी रचना करता हूं और सोता हूं। यहां एक बात कहना आवश्यक है। यद्यपि यह बात सत्य है कि यहां कोई कैदी अपनी इच्छानुसार नहीं रह सह सकता और न बोल ही सकता है, तथापि जेलके अधिकारियोंकी इस बातके लिए अवश्य प्रशंसा करनी पड़ेगी कि प्रत्येक कैदी अपनी इच्छानुसार स्वप्न देखनेके लिए पूर्णतया स्वतंत्र है! मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि इस सहूलियतका मैं पूरा पूरा लाभ उठाता हूं। प्रति रात्रिको मैं जेल तोडकर भागता हूं, बाहर जंगलों घाटियों और पहाडोंपर शहरोंमें, गांवोंमें तबतक घूमता रहता हूं, जबतक तुममेंसे किसीको, जो कभी न कभी मेरे हृदयके अंतस्तलके निकट रहा हो, नहीं पा लेता। प्रति रात्रिको मेरा यह काम रहता है, पर मेरे दयालु जेल कर्मचारी इस बातपर विशेष ध्यान नहीं देते! उनका कहना तो इतना ही है कि जब तुम जागो तब जेलमें जागो।

मुझे आशा है कि लडाईके समाप्त होने पर तुम हमारी मुक्तिके लिए एक सार्वजनिक प्रार्थनापत्र दोगे। बात यह है कि हिंदुस्थानमें ही क्या, वरन संसारके किसी भी स्वराज्य-सेवी स्वतंत्र देशमें, वहां की सरकार राजनैतिक कैदियोंको तबतक नहीं छोड सकती, जबतक शासकों

को लोगोंकी तत्सम्बन्धी इच्छाकी सहायताका बल प्राप्त न हो। राजा या राष्ट्र क्षमाके अधिकारका उपयोग, तबतक नहीं कर सकता जबतक स्वयं जनता ही कैदीको वापिस लाने—स्वतंत्र करनेके लिए जोर न लगावे। यदि हिन्दुस्थानवासी इस बातको चाहें और इस आशयके प्रार्थनापत्र लड़ाईके अंतमें जावें, तो सम्भव है कि हम लोग मुक्त कर दिये जावें। परन्तु यदि हिन्दुस्थान-वासी ही हमें वापिस नहीं चाहते हों तो, न तो सरकार हमें छोड सकती है और न अन्य प्रकारोंसे मुक्तिका पाना हमें ही श्रेयस्कर है। पोर्टब्लेअर (कालापानी) मुझे चाहता है और मैं यहां हूं। जनता यदि मुझे नहीं चाहती तो उसपर जबर्दस्ती, लदना मैं भी नहीं चाहता। इतना तो तुम भी कर सकते हो कि अन्य कैदियोंकी तरह—यहांपर अतिरिक्त दण्ड पाये हुए भी इनमें सम्मिलित हैं,——हमें जेलसे बाहर निकलकर, अपने कुटुम्बियोंको यहां लाकर, अंदमान टापूके किसी भागपर बसनेकी इजाजत दी जाय। सारांशमें, हमें वे सहूलियतें मिले जो नियमानुसार यहांके कैदियोंको मिलती हैं। इसमें हम कुछ विशेष नही मांग रहे हैं, और मेरा खयाल है कि, यदि उधर तुम बार बार सरकारसे इस बातके लिए लिखा—पढी करते रहो और इधर हम दोनों भी करते रहें, तो सम्भवतः यह सहूलियत मिल जाय।

पिछले साल प्रिय भावजने यह नहीं लिखा कि चि० धोंडी का क्या हाल है। उसकी शादी हो गयी? प्रिय यमुनासे मेरा प्रेम कहना, उसका स्वास्थ्य कैसा है? वह पुस्तकें पढती है? प्रियवर बलवंतराव स्कूल या कालेजकी किस श्रेणीमें है? दूसरे बालकोंका क्या हाल

है ? प्यारी भावजको सप्रेम सादर प्रणाम । भावजका जीवन आदर्श त्यागका जीवन है । वह अपने अपराधोंके लिए नहीं, वरन दूसरोंकी भलाईके लिए गम्भीरताके साथ दुःख सह रही है और शांतिके साथ सह रही है । छोटी भावजको भी प्रणाम । गत वर्ष भाईके पत्रमें उसने मेरा प्रेम-पूर्वक स्मरण किया है । उनका और अन्य प्रिय मित्रोंका मुझे रोज स्मरण हो आता है । मेरा मन जहां कहीं भ्रमण करता रहता है वहां हर स्थानमें उनकी मूर्तियां मुझे अवश्य ही दिखाई देती हैं । उन्हें देखकर मेरा मन वहीं ठहर जाता है और मीठे तथा दुःख पूर्ण आंसुओंका नया मंदिर बनाकर, मैं उन्हें थोड़ी देर तक थामे रहता हूँ और उनकी पूजा करता हूँ—उन प्रियतमोंकी जिनके बदौलत मेरा जीवन, जो कुछ भी हुआ, हो सका । मैं परमात्मासे प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे न भूलें । जिस किसीने एक भी क्षणके लिए मुझे प्यार किया है अथवा जिसे मैंने प्यार किया है—उन सबका पूजन उसी मंदिरमें, उसी सर्व-देव-मंदिरमें—मैं करता हूँ । उनका भी पूजन करता हूँ, जो मेरे प्यारे, अभिन्न-हृदय मित्र रहे हैं, सहकारी और साथी रहे हैं ।

अच्छा, मेरे प्यारे भाई ! मुझे इस बातसे प्रसन्नता हुई कि तुम्हारा डाक्टरीका अध्ययन सफल होनेके मार्गमें है । अध्ययनके लिए स्वास्थ्यको मत बिगाड़ो । अपना वजन मुझे लिख भेजो । अब मेरे प्यारे बाल, तुम्हें, प्यारे वसंत एवं बहन भाईको प्यार और शुभाशीर्वादके साथ मैं तुम्हारी इस मानसिक भेंटसे अपनेको जुदा करता हूँ ।

तुम्हारा ही भाई
तात्या

आठवां पत्र

—*—

ॐ

श्रीराम

कारा-कोठडी ६–७–१९१६
पोर्ट ब्लेअर।

मेरे प्रिय बाल तथा सौ० शांता,

तुम्हारे जीवनकी दूसरी अवस्थामें—दांपत्य जीवनमें—प्रवेश करनेके उपलक्ष्यमें मैं तथा बडे भाई, तुम दोनोंको हार्दिक बधाई देते हैं। प्यारे बाल, तूने जीवनकी प्रथम अवस्था श्रेष्ठ रीतिसे व्यतीत की है। वह अवस्था स्वोन्नति और त्यागकी थी। तेरे पास अब ज्ञानकोषकी सम्पत्तिकी सुनहली कुंजियाँ हैं—वह ज्ञान जो पुरातन और नूतन है और जो संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषाओं के अध्ययनसे प्राप्त हुआ है। वैद्यक शास्त्रकी अंतिम परीक्षामें तुम उत्तीर्ण हुए हो। यह शास्त्र तुम्हारे बहुत काम आयेगा—संसार के किसी भी भागमें तुम रहो, वह तुम्हारे काम आयेगा—फिर चाहे तंग गुमराह कानून उसका कितना ही विरोध क्यों न करे। तुम्हारी लेखनीने भी महाराष्ट्र-सारस्वतके गद्य पद्य दोनों विभागोंमें अपना प्रभाव जमा लिया है। तुमने अपनी प्रथमावस्थाके कर्तव्य तथा जिम्मेदारियाँ पूरी तरहसे निभाई हैं। जब हमारी मातृभूमिपर तूफान उमड रहा था, तब तुम अपने नियोजित स्थानपर अचल और स्थिरताके साथ डटे रहे। तूफान आया, पर तुम निर्भय

और सच्चे रहे—कई दगाबाजोंके बीचमें रहकर भी तुम वफादार रहे। वह उत्साह, जिसे अपने नवयुवकोंमें जागृत करनेके लिए यूरोपने 'आयर्न क्रास' और 'विक्टोरिया क्रास' आदि सम्मानोंका प्रलोभन रखा था, उस उत्साह और विश्वासका तुमने परिचय दिया। तुमने जनता द्वारा मिलने वाली प्रशंसाके पुरस्कार का त्याग किया और इसी लिए मैं कहता हूँ कि तुमने आयुकी प्रथमावस्था पूर्ण श्रेष्ठ ढंगसे व्यतीत की। प्यारे बाल और शांता, अब तुम जीवनकी सुखमय तथा श्रेष्ठतम अवस्थामें—दाम्पत्य जीवनमें—पदार्पण कर रहे हो। तुम्हारा पंथ प्यारे बाल, गुलाबों से बिछा हुआ रहे और प्यारी शांता, तेरा यौवन, अमर सुवर्णमें विकसित हो! तुम्हारी विवाह-ग्रंथि—जो तुम्हारा दाम्पत्य जीवन—स्वर्ग का वह सुख जो स्वर्ग-नाशके बाद भी जीवित है—सुखमय बनावे। 'मधु नक्तमुतोषसि मधुमत् पार्थिवं रजः'—(उषा, संध्या तथा पृथ्वीके कण तुम्हारे लिए मधुमय होवें)।

तुम्हें कदाचित स्मरण होगा कि अपने पिछले किसी पत्रमें मैंने एक सूचना इस आशयकी की थी कि यदि कोई चतुर बंगाली तुम्हारा हृदय चुरा ले तो मुझे कोई आश्चर्य न होगा। आखिरकार अपेक्षित बात लगभग हो भी गयी। मैं उस समयको देखनेका अभिलाषी हूं जब कि हिन्दुओंमें अंतर्प्रान्तीय विवाह होने लगेंगे तथा पंथों और जातियोंकी दीवारें टूट जायंगी और हमारे हिन्दू जीवनकी विशाल सरिता, समस्त दलदलों एवं मरुस्थलोंको पार करके, सदा शक्ति-मान एवं पवित्र प्रवाहसे प्रवाहित होगी—उसमें अड़चनें न आवेंगी और न आ सकेंगी। तथापि इस दिशामें सबसे प्रथम और सबसे पूर्व

जो कुछ करना है, वह है प्रेमको विवाह-सम्बन्धमें सर्वोपरि विशेष स्थान और अधिकार देना। इस बातसे हमें आँख न मूंदना चाहिए कि इस समय हम लोग जानवरों और पक्षियोंकी नस्ल सुधारनेपर तो ध्यान देते है, पर मनुष्यके सुप्रजा-जननकी ओर नहीं। सैकड़ों वर्षोंसे हम छोटे छोटे बच्चोंके विवाह करते आये हैं और वे भी प्रतिनिधियोंके द्वारा! सैकड़ों वर्षोंसे प्रेम अपने उचित प्रभाव-स्थानसे हटा दिया गया है! इस कारणसे वे बातें नहीं बढ पाती हैं, जो शरीर, मन और आत्माकी उन्नति करनेवाली हैं! इस का अवश्यम्भावी परिणाम हुआ है——एक छोटी कमजोर जाति, जिसकी जीवन-शक्ति तथा मर्दानगी नष्ट हो चुकी है। इस परिणामके हजारों कारण हैं और हमारी वर्तमान विवाह-पद्धति उन कारणोंमेंसे एक प्रमुख कारण है। प्रेमको पवित्र करनेके लिए अधिकारी आवें परन्तु उसकी रोक करनेके लिए नहीं। इसी लिए मुझे प्रसन्नता हुई कि आयु, शिक्षा, तुम दोनोंके हृदयका मिलन, परस्पर आकर्षण तथा आदर, और इससे भी बढकर उन लोगोंकी सम्मति जो हमारे कुटुम्बसे सहानुभूति रखते हैं—— इन बातोंने तुमसे वही काम कराया है कि जिसके करनेमें मैं अपने कुटुम्बको पीछे रहने देना नहीं चाहता था। सारांश, जब प्रिय भाऊने इसे सम्मति दी है तब यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि जो कुछ हुआ है, सब मेरी इच्छाके अनुकूल हुआ है।

अच्छा अब बताइए तो सही, डाक्टर साहब, आपका कहां जमनेका विचार है,? कल ही मुझे अधिकारियोंने यह दूसरा पत्र लिखने के लिये कहा है, क्योंकि पहला पत्र किसी कारण डाक

विभागसे खो गया है। इससे तुम्हें चिन्ता तो बहुत हुई होगी, परन्तु मुझे इस विलंबके कारण तुम्हारा वर्तमान पता मालूम हो गया है। उसीसे मुझे मालूम हुआ कि तुम इस समय बंबई में हो। क्या उसी अस्वास्थ्य-कर घनी बस्तीके शहरमें तुम्हारा बसनेका विचार है? क्या सुधार-प्रिय सयाजीरावका स्वतंत्र बड़ौदा तुम्हें पसंद नहीं है? परन्तु यह चुनाव तुम अपनी इच्छानुसार ही करो, क्योंकि तुम प्रत्यक्ष स्थान पर मौजूद हो, और इस लिए तुम्हीं उचितानुचितका निर्णय अच्छी तरह कर सकते हो। मैं तुम्हें एक ही बातके लिए जोर देता हूं कि किसी भी हालतमें तुम अपना स्वास्थ्य और व्यक्तिगत स्वतंत्रता मत खोना। मुझपर विश्वास करो कि यह बात केवल करने योग्य ही नहीं है, वरन तुम्हारे लिए, और उनके लिए जो तुम जैसी हालत में हैं, तो अवश्य करने योग्य है। अन्य अवस्थाओंमें व्यक्तिगत भलाई बुराई के लिए अत्यधिक ध्यान देना एक प्रकारसे नैतिक पतन है, परन्तु तुम व्यक्तिगत बातोंके लिए जितना ध्यान दो, उतना ही कम है। तुम संसार में कहीं रहो, चाहे अफ्रीकाके जंगलमें अथवा अमरीकाके प्रजातंत्रमें, हर स्थानपर, डाक्टरी ज्ञान तुम्हारे जीवन का पास-पोर्ट तथा रक्षक रहेगा। क्योंकि जहाँ कहीं मृत्यु है वहां वहां डाक्टर भी अवश्य होंगे-(क्यों, डाक्टर साहब, नाराज तो नहीं होगये! वैद्यक-शास्त्रके प्रति पूरा सद्भाव रखकर ही मैं यह कह रहा हूं। इतना ही नहीं, वरन उसकी प्रतिष्ठा बढ़ानेके हेतुसे कह रहा हूं। कोई काम ऐसा न करो जिससे तुम्हारे स्वास्थ्यको हानि पहुंचे, यही नहीं, वरन शांताके स्वास्थ्यको भी हानि न पहुंचे। पढ़नेके लिए

और यदि वह चाहे तो लिखनेके लिए भी उसे उत्साहित करो तथापि किसी नवयुवतीका प्रथम कर्तव्य स्वास्थ्यकी रक्षा ही होना चाहिए। स्त्री, आगे आनेवाली संतानकी धरोहरकी रक्षा करनेवाली होती है। प्रत्येक युवतीके स्वास्थ्यकी जितनी हानि होगी उतनी ही हानि आनेवाली प्रजाकी होगी। वह भूत समयको भविष्यतसे जोड़ने वाली सोनेकी सांकल है—वह अपनी जातिकी उन्नतिका वचन है। इसलिए प्रत्येक पत्नीका प्रथम कर्तव्य अपने स्वास्थ्यकी रक्षा होना चाहिए, जिससे उसके शरीर, मन और आत्माके सौंदर्यकी एकसानता होवे। इसलिए, अध्ययन अथवा सुख-चैन उसे इतना अधिक आकर्षित न करने पावें कि उसकी जीवन-शक्तिपर वृथा बोझ पड़े। इन दोनोंको इतना ही अवसर मिलना चाहिए कि स्वास्थ्य, पूर्ण तथा आरोग्यमय रहे और सौंदर्य पवित्रताके साथ फूटे।

अब कुछ अपने विषयमें भी! पर वह 'कुछ' क्या लिखूँ? मैं वही और वैसा ही हूं जैसा पिछला पत्र लिखते समय था। कैदीके कोपमें 'परिवर्तन' शब्द ही नहीं है। विशेष कर कोपको 'पोर्टब्लेअर' आवृत्तिमें तो वह है ही नहीं। तुमने लिखा है कि महायुद्धके कारण तुम्हारी दुनियामें हलचल मच गयी है, परन्तु मुझे तथा मेरे पोर्टब्लेअरको उसने स्पर्श तक नहीं किया। हमारा यह छोटासा राज्य अपने वार्षिक भाषणमें उचित घमंडके साथ कह सकता है कि इस संसार—व्यापी भूचालसे हमारे हिताहित बिलकुल अछूते रहे। हमारे आयात एवं निर्यातमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। हमारी रोशनी रातभर जलती रहती है। हमारे अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध भी उतनेही शांतिमय हैं

जितने उस समय थे, जब हमारा यह छोटासा राज सामुद्री निशामें उत्पन्न हुआ था। मि० एस्क्वियथको हमसे जलन हो सकती है। हमारे नागरिक इस बातके लिए मजबूर नहीं किये गये कि मांस और आलूको कम खर्च करें-—जैसा कि जर्मनीमें किया गया, बतलाया जाता है-केवल इस कारणसे, कि हम कभी इन वस्तुओंको खाते ही नहीं रहे हैं। हम जो कुछ खाते हैं उसे यहीं पैदा करते हैं। घास और अन्य चीजें, हम अपनी इन महत्त्वाकांक्षी जेलकी दीवारोंमें ही पैदा कर लेते हैं। इन दीवारोंके सामने चीनकी विख्यात दीवारें मिट्टीका ढेर मालूम होती हैं। चीनकी दीवारें, पूरी तरह से तो नहीं किन्तु, किसी अंशमें बाहरी लोगोंको अंदर आनेसे रोक सकती हैं, परन्तु ये हमारी दीवारें बाहर वालोंको अंदर आनेसे तो रोकतीही हैं पर अंदर वालेको बाहर जानेसे भी रोकती हैं, मृत्यु दण्डके भयके साथ रोकती हैं। इस तरह हम लोग यहांपर, मनुष्यता के अभिमानियोंके लिए, व्यवस्थाबद्ध दुनियाका एक नमूना और आशाका भविष्य बन रहे हैं और जब मनुष्य-संसारसे युद्धोंका अंत कर दिया जायगा, तब भी हम यहा जीवित रहेंगे, नहीं नहीं अपना अस्तित्व बनाये रहेंगे, इतनी शांति और स्थिरताके साथ कि स्वयं मृत्युके राजको भी लज्जा आजाए!

भेंटके विषयमें, मेरा मत है कि युद्धकी समाप्तितक तुम ठहरो, क्योंकि इस समय तुम्हें इजाजत देनेमें सरकार जो आगापीछा कर रही है उसका कुछ अंदाज हम भी लगा सकते हैं। युद्धके बाद भी हमारी भेंटकी इजाजत मिलनेके लिए जो पत्र तुम सरकारको लिखो, उसमें इसी बातपर विशेष जोर देना कि, प्रत्येक कैदीको ५

वषक बाद मिलनेकी इजाजत दी जाती है, वैसीही तुम्हें भी मिलनी चाहिए। 'हमारे हृदयोंमें भेंटकी प्रबल इच्छा हो रही है,' आदि बातोंको उक्त पत्रमें लिखनेकी कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि यदि सरकार तुम्हें इजाजत न दे, तो भी कमसे कम इस बातका तो संतोष रहेगा कि हमने मनुष्य जातिको लगने वाली पवित्र चोट, अर्थात जुदाईकी चोट, एक विदेशी तथा सहानुभूति-शून्य व्यक्तिको नहीं दिखाई। मेरी यहांकी अवस्थाके सुधारके विषयमें तुम जो कुछ लिखना चाहो, सीधे दिल्ली लिखो, क्योंकि यहाँके अधिकारियोंके हाथमें कुछभी नहीं है, विशेष कर मेरी कोई भलाई करना तो उनके हाथमें है ही नहीं। जो कुछ वे कर सकते हैं, कर रहे हैं और जब वे नहीं करेंगे तब मैं उनसे उसके करनेके लिए प्रार्थना करूंगा। मैं जानता हूं कि यद्यपि तुम लोगोंको विश्वास है कि इस कैदके कारण मैं हताश न हो सकूंगा, तथापि तुम लोगोंको इस बातका दुःख है कि मुझे इतने कष्ट उठाने पड़े, तथा सामाजिक राजनैतिक और साहित्यिक कार्य करनसे भी, मैं रोका जा रहा हूँ। पर भाई, जरा सोचो तो! क्या कष्ट-सहन भी एक कार्य नहीं है? ईसाई धर्मके लिए सबसे अधिक कार्य किसने किया? उन लोगोंने जो चुप-चाप कष्ट सहते रहे और अज्ञात रहे, अथवा उन्होंने जो कार्य करते रहे? निस्संदेह दोनोंहीने कार्य किया, पर मुझे सन्देह है कि किसी सतकार्यके लिए बाहर रहकर काम करनेवाले जितना काम करते हैं, उससे अधिक काम वे लोग करते हैं जो कैदखानों एवं रण-मैदानमें उस कार्यके लिए कष्ट उठाते हैं। वास्तव में, सच्चा कार्य कष्ट-सहन है, और सच्चा कष्ट-सहन ही कार्य है।

कष्ट ही तो वह चालक शक्ति है जो मनुष्यको हिलाती है, और आगे बढ़ाती है। जब तक अमुतम मनुष्य कष्ट न उठावें तब तक शेष मनुष्य काम नहीं कर सकते। दोनों श्रेष्ठ हैं, दोनों अनिवार्य हैं। जब दोनों बातें अनिवार्य हैं तब इस बातका दुःख ही क्या है कि हमें इस स्थानके लिए चुना गया और उसकी रक्षाके लिए नियत किया गया? मैं अपने आपको बड़भागी समझता हूँ कि मेरे हिस्सेमें यह कार्य आया। भाई, इस बातके लिए दुखी मत होओ कि मैं अन्धेरेमें रहता हूं और जब अन्य स्त्री पुरुष मनुष्य जातिके मार्गपर अपनी बुद्धयनुसार प्रकाश डाल रहे हैं, तब मैं यहां केवल इन्तजार ही कर रहा हूं। क्या तुम्हें स्मरण नहीं है—"उसकी अवस्था रानी जैसी है—हजारों उसके नियोजित स्थान पर डटे हैं—वे भी सेवा कर रहे हैं जो केवल इंतजार कर रहे हैं।" और वे लोग भला कितनी अधिक सेवा करते हैं जो केवल इंतजार ही नहीं करते वरन कष्ट उठाते हैं और फिर भी डटे रहते हैं!! काम करने वाला श्रेष्ठ है क्योंकि वह एक पत्थर पर दूसरा पत्थर रखता है और उसे घड़ता है, पर देव-मंदिरके सीमिंट और चूनेका क्या कोई मूल्य ही नहीं है? कष्ट सहने वाला वही तो है! वही शहीद सीमेंट है, जो खूनसे नहाया हुआ है!!

वास्तवमें, बान्धु, तुम इस बातका अनुमान भी नहीं कर सकते कि प्रतिक्षण मुझे कितनी प्रसन्नता होती रहती है! शांतिकी अद्वितीय ठंडी वायु मेरे थके हुए शरीरकी कमजोरीको बार बार चूमती रहती है और शांत आत्माके सदा खिलने वाले आनंदको बढ़ाती रहती है। मुझे वही सुख मिलता है जो कालेजके दिनोंमें

किसी परीक्षामें अच्छे उत्तर लिखनेके पश्चात घर जाकर शांत और विश्वास-पूर्ण चित्तसे परीक्षा उत्तीर्ण होनेके सुख-समाचार सुनने की प्रतीक्षा करते हुए होता था। यह बड़ी परीक्षा, यह जाच, मांकी मुक्तिकी यह परीक्षा, मैं अपने लिए तो पूर्ण संतोषके साथ दे चुका हूँ और अब यहाँ, मैं घरपर आगया हूँ और विश्वासके साथ सफलताके श्रेष्ठ समाचारोंकी मार्ग-प्रतीक्षा कर रहा हूँ! कितनी गहरी नींद मैं सोता हूँ। कितनी मीठी नींद होती है! कारण यह है कि जब दिन था और जब माताके कार्यालयमें मेरी आवश्यकता थी तब मैंने इतने परिश्रमके साथ कार्य किया कि ज्योंही यह रात आई, त्योंही मेरी आंखोंपर, ओसके बिन्दुओंकी तरह, नींद, मृदुलासे आ जमती है! ऐसा भी समय आता है, जब भयानक स्वप्न कष्ट देते हैं—चमकने और प्रकाशमें आनेकी इच्छा प्रबल होती है—परन्तु विश्लेषणके स्पर्शसे ही आत्माका आवरण नष्ट हो जाता है, स्वप्न अदृश्य हो जाते हैं—भाग जाते हैं, और स्थिरता फिरसे अपना आसन जमा लेती है। कभी कभी जब मैं ऐसी नींदसे अपनी कोठरीमें जागता हूँ और जिस समय मेरी इस छोटी, ऊंची, गज लगी हुई खिड़कीके पासके समुद्र-तटपर सुस्तीके साथ समुद्रकी लहरें टकराती हैं, तब मुझे कालिदासकी वे पंक्तियाँ स्मरण आजाती हैं जिनमें उन्होंने कहा है—'प्रासादवातायनदृश्यवीचिः। प्रबोधयत्यर्णव एव सुप्तम्।' मैं अपनेको 'रघुवंश'का राजा समझता हूँ और अपने ही साथ हंसता हूं; खेलता हूं और विनोद करता हूँ। मनके ये विचार विवेककी उस शांतिसे उठते हैं जो साथ ही साथ कार्यकी अधिकता भी है। ये विचार मनको इस जेलकी

भयानकतासे हटाकर दूर ले जाते हैं। सारांशमें, यह बात सत्य है कि मैं और भाई, दोनोंही सुखी हैं और क्रोध तथा चिडचिडाहट, सख्ती तथा झगडे, और अनुशासनके इस वातावरणमें तबतक रह-नेके लिए तैयार हैं जबतक रहना पडे। यहांका वातावरण प्रतिक्षण इस बातका स्मरण दिलाता रहता है कि हम लोग गुलाम जातिके हैं।

तुम्हारे विवाहोत्सवका वर्णन बहुत स्पष्ट रीतिसे लिखा गया है। लिखनेवालेको लेखन-शक्ति प्राप्त है। परन्तु उसमें आत्मविश्वासकी कमी खटकती है। मेरा खयाल है कि पहले वह छोटी छोटी लोक-प्रिय कहानियां तथा उपन्यास लिखे और उन्हें किसी मासिक पत्रमें छपवावे, जिससे उसमें आत्म-विश्वास पैदा होगा। उदाहरणार्थ, जात पांतको ही ले लो। सूचनात्मक रीतिसे वह कहानियोंमें बतलावे कि जातिबंधन इस समय कितनी हानि कर रहा है तथा हमें मनुष्य जातिके सर्वोच्च उद्देश्यसे कितना पीछे खींच रहा है। इसके बाद वह बडे ग्रंथ लिखे। उसे तथा यमराज—सहोदरको तथा उन सबको, जो मेरे बचपनके साथी, कालेजके मित्र, और युद्ध-क्षेत्रके सहकारी रहे हैं, उन सबको मेरा प्रेमपूर्ण स्मरण दिलाना। जिनको मैंने अपना समझा तथा जिनसे मैं वचन-बद्ध हूं, उन सबको मैं प्रेम और आदरके साथ स्मरण करता रहता हूं। मुझे प्रियवर ऋषिका पता पाकर प्रसन्नता हुई। क्या अभी भी वे 'नौकर' हैं ? उसी ओहदे पर हैं ? मेरा नया मित्र—उसकी मुझे कितनी अधिक याद आती है ! वह इतना विचारी और दयामय था—इन हालतोंमें भी जब कि वह भी उसी मामलेका मुलजिम था ! वह बहुत होशियार और फुर्तीला है। तुम्हारे विवाहोत्सवके वर्णनमें मुझे कहीं प्रिय प्रोफेसर

का नाम नहीं दिखाई दिया। उन्हें तथा प्रिय आदरणीय मेडम कामा को मेरा प्रणाम। युद्धके कारण मेडम कामाको बहुत कष्ट उठाने पड़े होंगे। मेरा प्रेमपूर्ण प्रणाम उन्हें पहुंचाना और लिखना कि 'जब मैं आपके साथ पेरिसमें था तब जिन लोगोंसे भेंट हुई थी वे सब— विशेष कर, संन्यासीजी, मुझे बहुत स्मरण आते हैं।' तुम्हारे भेजे, हुए फोटोसे हमें बहुत खुशी हुई। येसू वहिनी (भावज) शांत, सहनशील, एवं देवी जैसी दिखाई देती हैं। जब वह बम्बई-जेलमें मुझसे मिलनेके लिए आई थीं तब एक अफसरने उनके लिए यही कहा था। उन्हें, ताईको तथा शांताको प्रेमाभिवादन। मुझे इस सबपर गर्व है। अगले समय प्रिया यमुनाके पत्रका अनुवाद भेजने में भूल मत करना। गरीब बेचारी लड़की! उसपर बार बार तरस आता है। पर फिर भी उसकी शांति तथा उद्देश्यकी स्थिरताको देख कर बार बार प्रशंसा करनेके लिए जी चाहता है। अगर उसके माता पिता न चाहें तो उसे बम्बई मत लाना। उनके निर्णय और प्रेम का आदर करना चाहिए। उसके सब भाइयोंका क्या हाल है? माता और मौसीकी मेरा अत्यंत नम्र प्रणाम।

प्रेमपूर्वक तुम्हारा

तात्या

नववां पत्र

—*—

ॐ

श्रीराम

कारा-कोठरी
५ अगस्त १९१७
पोर्ट ब्लेअर।

मेरे प्रिय बाल,

मेरे सन १९१६ के जूलाई मासमें भेजे हुए पत्रका तुम्हारा जवाब पाकर प्रसन्नता हुई। हम दोनोंको यह जानकर परम संतोष हुवा कि तुम हमारे समस्त मित्रों सहित आनंदमें हो। विधाताने तुम्हें एक वर्षकी शांति और प्रदान की—वह नम्र तथा पवित्र शान्ति, जो भक्ति-पूर्ण तथा प्रेमपूर्ण कौटुंबिक जीवनसे प्राप्त होती है। प्रिय बाल, तुम देख रहे हो कि हमारी पीढी ऐसे समयमें और देशमें पैदा हुई है, जब कि प्रत्येक उदार एवं सच्चे हृदयके लिए यह बात आवश्यक हो गई है कि वह अपने लिए उस मार्गको चुने, जो आहों और सिसकों, और जुदाईके बीचसे गुजरता है। यही मार्ग कर्मका मार्ग है। जो हृदय वज्र जैसा बन चुका है, जो भाग्य-चक्रके कठिन एवं निर्दयतापूर्ण प्रहारोंका अनुभव कर चुका है, वह संकटों एवं निराशाओंको सृष्टिका दैनिक क्रम समझता है—कमसे कम प्रकृतिकी योजना में मेरे लिए तो यही क्रम निश्चित सा मालुम होता है। इसलिए जब कोई प्रसन्नताकी बात हो जाती है तब हृदय इस बातको

अधिक देखता है कि वह सद्भाग्य कितना अनित्य और अस्थायी है, बजाय इसके कि वह कितना अच्छा है! मैं आंसुओंको हमेशा खुशीका कारण मानता हूं। जो हो, समय बदल रहा है और भाग्यके पलटनेके साथ ही मित्रभी फिरसे मिल रहे हैं। जब बंबई हाइकोर्टके डॉकमें मैंने तुम्हें अंतिम बार देखा था, जब तुमसे हस्तांदोलन करनेको भी इजाजत न थी और जब मैंने अपनी टोपी हिलाकर तुमसे बिदा ली थी, उस समय, प्यारे बाल, उस समय हमारे—बडे भाई एवं मेरे—हृदयमें एक ही बात चुभ रही थी कि हम तुम्हारे लिए, अपने सबसे निकटतम और प्रियतमके लिए भी कुछ न कर सके। तुम उस समय छोटे थे, नगण्य थे, तो भी आदमी अपने पूरे जीवनमें जितना कष्ट उठाता है उससे अधिक तुम उठा चुके थे। उस समय तुम संसार-समुद्रकी तरंगपर छोड दिये गये थे, तुम्हारा कोई मित्र नहीं था, कई तुमसे घृणा करते थे और एक शक्ति-शाली साम्राज्य तुमपर सन्देह करता था। कुटुम्ब* देवी देवता नष्टप्राय मालूम होते थे। यद्यपि ये सब कष्ट मुझे सत्यपथसे विचलित न कर सके और न असत्य-पथपर ही डाल सके, तथापि उस समय मैंने जो यह लिखा था कि " जो वंशबाग उध्वस्त झाला। संतत पुष्पित तोचि एक।' (जिस उद्यान ने अपने समस्त प्रसून ईश्वर को अर्पित करनेके लिए माला गूंथनेमें दे दिये हैं वह वास्तवमें सदाही खिला हुआ है।), वह हृदयसे खून बहाते हुए लिखा था। उस समय आशाकी सदाबहार लता भी मुरझा गयी और जल गयी थी। अस्फुट कलिके समान और भूतकालके उदासीन स्मरणकी तरह केवल वसंत ही उस समय बच रहा था। पर अब वसंतके दयामय स्पर्शसे जीवन-रस फिरसे प्रवाहित होने लगा है और लताओंको

नयी कलियां आ रही हैं। हमारा वसंत तो था ही ईश्वरने अब रंजनभी दे दिया है और यदि उसकी दया हुई तो नवजीवनका एक और संदेश-वाहक अवतीर्ण होगा। तेरे घरमें प्रेमका दीपक जल रहा है और उस दीपके प्रेमपूर्ण उष्ण प्रकाशने मेरी कोठरीका अंधेराभी दूर कर दिया है। रंजनके नूतन नामसे कष्ट-सहिष्णु प्रेमी माता; उसकी दादी और अपनी मौसीका स्मरण हो आता है। उसे इस बातका कितना आनंद हुआ होता! उस प्यारे बालकको मेरा प्रेम। मैं शायद उसे आजन्म न देख सकूं। यह भी लिखना कि मेरी बातें वह समझता है या नहीं? तुमने शांताके विषयमें कुछ भी नहीं लिखा। वह काम तुमने भावजपर क्यों छोड दिया? हिन्दुस्थानी रिवाजके अनुसार तो यह सब ठीक है, पर आगेके पत्रमें तुम अपने बच्चे और अन्य बातोंके विषयमें स्वयं ही लिखना। इसी अति-विनयके कारण प्रायः सभी हिन्दुस्थानी बालक अपने माता पिताकी नजरोंके प्रकाशमें पलनेके बजाय छायामें पलते हैं। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। तुम्हें तो इस बालकको एक विशेष पवित्र धरोहरकी भांति समझना चाहिए। मुझे इस बातका दुःख है कि प्यारी भावजको प्लेगसे कष्ट उठाना पडा; मेरा खयाल था कि यह राक्षसी रोग हमारे देशसे अब चला गया होगा, पर तुम्हारे पत्रसे मालूम हुआ कि अभी वह मौजूद है। उसका पूरा पूरा ध्यान रखना। क्या वह पहलेकी अपेक्षा अब कुछ कम कष्ट-प्रद है? क्या अभी तक वैद्यक शास्त्र उसकी कोई सफल औषधि नहीं पा सका? ज्योंही प्लेग बंबई आजावे त्योंही तुम बंबई छोड देना। अगर हम उसका उपाय न कर सकें तो उसके पंजेसे छुटकारा पानेके लिये

किसी भी तरहका खर्च करनेमें संकोच नहीं करना चाहिए। गत १९१६ की जनवरीमें मुझे पुस्तकोंकी अंतिम पार्सल मिली थी और बड़े भाईको मार्च १९१६ में। इस बातको १८ महीने बीत गये। तबसे अबतक हमें कोइ पार्सल नहीं मिली। इतने समयमें तो दो पार्सल आजानी चाहिए थीं। यही कारण है कि हमें तुम्हारे विषय में बहुत चिंता हुई थी और मुझे सुपरिण्टेंडेण्टसे इजाजत लेकर तुमको तार देना पड़ा। मेरे विचारसे तो इस विषयमें हमें अधिकसे अधिक ध्यान रखना चाहिए, जिससे फिर ऐसी आवश्यकता न पड़े। बढ़िया बात तो यह है कि तुम अपने पत्र और पार्सल यदि नियत तारीखोंपर नहीं तो, नियत महीनोंमें भेजा करो।

इतना तो हमारे विषयमें हुआ। परन्तु इस खेलमें एक पार्टी और भी है और वह है डाक-विभाग या सरकार। हम लोग सभी बातें उनके मनके अनुसार करनेके लिए विवश हैं। पिछले पत्रमें तुमने एक पार्सलके खो जानेके समाचार लिखे थे और पिछले वर्ष मेरा पत्र भी डाक में खोगया था। न मालूम इसका क्या मतलब है ? हजारों पार्सलें और चिट्ठियां यहां ठीक ढंगसे आती हैं, केवल हमारी पार्सलें और चिट्ठियां विचित्र ढंगसे गायब होजाती हैं! क्या यह डाक विभागका कार्य है ? यदि यही बात हो तो तुम पूरा पूरा प्रयत्न करके इस बातका जवाब तलब करना कि तुम्हारी पार्सल किस तरह खो गयी। तुमने उसे रजिस्टर किया ही होगा। तुम्हारी जांचसे मालूम हो जायगा कि किसकी लापर्वाही अथवा द्वेषके कारण मेरे पत्र और पार्सल गड़-

बड़में पड़ जाते हैं। डाक विभागके लिए इतना ही पर्याप्त है। परन्तु यदि डाक विभागकी भूल न हो और सरकार ही यह करती हो, तब तो भाई चुप साधो। जीवनको प्रसन्न रखनेवाली कई वस्तुओंके न होते हुए भी मेरा काम चलता ही है, उसी तरह वार्षिक पार्सलके बिना भी मैं जिंदा रहना सीख लूंगा। पर ख्याल तो यही आता है कि जब दर्जनों जांच करनेवालोंकी निगाह पुस्तकके छपनेसे बिकने तक पड़ती रहती है और जब बलवान सूक्ष्मदर्शक यंत्रोंसे पुस्तकके पृष्ठोंकी हड्डी-पसली जांची जाती है, तब वे पुस्तकें, कमसे कम वे, जिनपर कोई आपत्ति नहीं की जा सकती, मालिकके पास अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

नासिक परिषद् वास्तवमें सफल हुई। राजनैतिक कैदियोंको मुक्त करनेके प्रस्तावसे हमें प्रसन्नता हुई—यद्यपि हम असहाय हैं और भुला दिये गये हैं। जिन लोगोंने हमारा स्मरण रखनेका साहस किया उन्हें हार्दिक धन्यवाद। हमें आश्चर्य होता है कि कि कांग्रेसमें दलोंकी एकता होनेपर भी कांग्रेस ऐसे विषयोंसे क्यों जी चुराती है। शायद उस संस्थाके नेताओंके सिरपर अपने महत्वका बोझ अधिक लदा हुआ है। शायद वे अपने आपको बहुतही निर्मल समझते हैं, अपने आपको जनरल बोथासे भी अधिक जिम्मेदार मुत्सद्दी तथा देशभक्त समझते हैं, जिनको सरकारने बोअर विप्लवके सभी छोटे बड़े आदमियोंको मुक्त कर दिया है, या अपनेको रेडमंडसे भी अधिक जिम्मेदार समझते हैं, जिसके राष्ट्रीय दलने आयर्लैण्डके कैदियोंके छुटकारेके लिए लगातार प्रयत्न किया और आखिर उन्हें छुटाकरही चैन लिया। मि० बोनरलॉने यह बतलानेका

प्रयत्न किया है कि 'उन लोगोंने विप्लवमे सर्व-साधारण रीतिसे भाग लिया था।' परन्तु यह बात नहीं है। क्योंकि भारतीय राजनैतिक कैदियोंमें भी एक बड़ी संख्या 'विप्लवमें सर्व-साधारण रीतिसे भाग लेनेके लिए' दण्ड पाये हुओंकी है। सफ्रेजिस्ट आन्दोलनका प्रत्येक अपराधी व्यक्तिगत जुर्मोंके लिए दण्डित था, तथापि मि० एस्क्विथने बहुत दिन पूर्व उन्हें छोड दिया है। कांग्रेसको रहने दो, और लडाईके समाप्त होतेही तुम एक सार्वजनिक प्रार्थनापत्र हमारी मुक्तिके लिए भिजवानेका प्रयत्न करो। यह बात नहीं है कि इन प्रस्तावों या प्रार्थनापत्रोंसे मुक्ति मिलही जायगी, तथापि जब कभी मुक्ति मिलेगी तब वह इनके कारण अधिक स्वीकार योग्य होगी। मैं स्वयं तो इसे लज्जा-जनक समझूंगा, यदि मैं उन लोगोंसे वापिस लाया जाऊं जो न तो साहस करते हैं, और, मेरा खयाल है कि, न उन लोगोंका स्मरण करनाही चाहते हैं, जो अपनी मातृभूमिसे स्नेह करते थे और कर रहे हैं, और करनेसे कभी नहीं रुकेंगे, और जो भले या बुरे साधनोंसे, मातृभूमिके लिए लडते हुए वीर-गतिको प्राप्त हुए हैं। यदि हो सके तो प्रार्थनापत्र अवश्य अवश्य भिजवाना। सभाओं या प्रस्तावोंकी अपेक्षा इसका महत्व अधिक होगा।

एक दिन जब हम दोनों—बडे भाई और मैं—कुछ समयके लिए एकत्र हुए थे, तब मैंने बडे भाईसे कहा, कि शास्त्रोंमें देवऋण, पितृऋण और ऋषिऋणकी बात लिखी है। इसी तरह पुत्रऋण भी संसारमें है। तुम्हारा पत्र पाकर मैंने अनुभव किया कि मैं उस ऋण से पूर्णतया उऋण हो गया हूँ। क्योंकि अब तुम पूरी तरह शिक्षित एवं संसारोपयोगी शक्तिसे संपन्न हो चुके हो। अब चाहे जो हो पर

दो वर्षतक तो विधाताने तुम्हें सुख दिया है और तुम्हारी वजहसे वही हमें भी मिला है। एक ही दिन सदाके लिए प्रकाशित नहीं हो सकता। इस संसारकी जिंदगी त्रिदल पुष्पकी तरह है। एक दल आनंदके रंगका है, दूसरा दुःखके और तीसरा मिश्र रंगका या बे-रंग है। कभी सुखके दलपर कीडा लग जाता है और कभी दुःखके दलपर और इस तरह यह चक्र चलता रहता है। किसी पत्रको, जीवनको या इतिहासको ही देख लो। कम या अधिक प्रमाणमें वह जनन और मृत्यु, विवाह और सूतक, प्रकाश और छायाकी गिनती करनेवाले नक्शे मात्र हैं। इस लिए जिस समय थोडासा विश्राम मिले, सुखका हिलता हुआ किरण दिखाई दे, वसंतका थोडासा स्पर्श हो जाय, तब शीत ऋतुकी कठिनाइयोंको न भूलो या मूर्खतावश होकर वसंतके इस नशे पर, जबतक वह प्यालेमें नाच रहा है, अवलंबित न रहो, न उसके अभ्यासी बनो। नहीं, भाई, नहीं। हम लोगोंका जो इस समय·······,हिन्दुस्थानमें पैदा हुए हैं, साथी है शीतकाल, वसंतकाल नहीं। हम इस बातको न भूलें, कोई तरुण पुरुष इस बातको न भूले, कि हमारा जीवन असीम असहनीय बालुकामय तप्त मरु-भूमिकी तरह है और असहनीय होने पर भी हमें उसे सहना ही पडता है। हम अपने उस कर्तव्य-मार्ग पर डटे हुए हैं, जो इस सूखे मरुस्थलसे गुजरता है। इस मार्गपर यदि कभी ईश्वरी दयासे कोई हरी जलवाली भूमि हमें प्राप्त हो— जैसी कि ईश्वरने हमें अभी दी है—तब हमें भूलना न चाहिए कि वह केवल एक घटना है, दयाहृदयकी चतुराई है। इसके मोहमें न पडकर बिना शीघ्रता एवं विश्रामके हमें जीवन-यात्राके मार्गमें चलते

रहना चाहिए। पुराने सतोंकी तरह हम भी विनीत भावसे प्रार्थना करें कि—"तेरी जो कुछ इच्छा हो वही हमको दे और जब इच्छा हो तभी दे और जितना चाहे उतना ही दे। और जो कुछ तू चाहे हमसे लेजा, जितना चाहे लेजा।" नवयुवकोंका श्रेष्ठ आदर्श, वस्तुओंकी प्राप्ति नहीं वरन त्याग है। बागकी रक्षा करना नहीं है वरन "वह बाग जो अपने सारे फूल ईश्वरी मालाके लिए अर्पण कर देता है वही सदाके लिए पुष्पित रहता है।"

प्रिय माईका क्या हाल है? भला यह हो सकता है कि मैं अपनी इकलौती बहिनको भूल जाऊं! यदि उसे भूल सकता हूँ तो मैं अपने आप पर क्रोध करके स्वतःको भी भूल सकता हूं। जब तक तुम्हारा समय है तब तक कुछ बचत करते रहो और प्रिय शांता अथवा रंजनके नामसे किसी अच्छे व्यवसायमें उसे लगाते रहो, क्योंकि न मालूम कब फिरसे शीत ऋतु आ जाय। मैडम कामा हमपर लगातार प्रेम रखती आयी हैं उनकी बराबरी होना असंभव है। लड़ाई भी उनका ध्यान तुमसे न हटा सकी। कई बार खून पानीसे गाढा नहीं होना, कई बार रिश्तेदारोंकी अपेक्षा चुने हुए लोग अधिक काम आते हैं। संसारमें ऐसा भी स्नेह होता है जिसको श्रेष्ठ हृदय ही अनुभव कर सकता है, जिसे रक्त-सम्बन्ध अथवा विशेष लाभका न होना ठंडा नहीं कर सकता। वह आदर्शभूमिमें निर्माण होता है और उसका पोषण उन सूक्ष्म शक्तियों द्वारा होता है जिन्हें संसारी लोग न देख सकते हैं, न समझ सकते हैं।

मेरी प्रिय भावज एवं यमुनाका क्या हाल है? उन सबोंसे मेरा प्रेम। प्रिय बालूका क्या हाल है? जब मैंने उसे बंबई

जलमें देखा था तब वह सीधा-सच्चा एवं प्रेमी लड़का मालूम होता था, अब तो वह एक शिष्ट पुरुष बन गया होगा। वही हाल अम्माका होगा। मेरा ख्याल है कि वह एक चतुर एवं योग्य युवक निकलेगा। मुझे प्रसन्नता होगी जब मेरा अनुमान ठीक निकलेगा। मेरी इच्छा है कि अपने सभी भाइयोंके समाचार मुझे मालूम होवें। दत्तू तथा नाना क्या करते हैं? प्रिय यमुनाका ख्याल है कि मैं उन्हें भूल गया हूं परन्तु बात ऐसी नहीं है। मैं जिन कारणोंसे उनके नामका पत्रोंमें निर्देश नहीं करता था, उनको यमुना अपने अनुभवसे नहीं समझ सकती। प्रिय बड़े भाईके बाद यदि इस संसारमें कोई कुटुंब या आदमी, जिसकी वजहसे मैं जो कुछ हूं हो सका हूं, तथा जिसकी उच्च रक्षकता तथा प्रेम-पूर्ण चिन्ताशीलताके कारण मुझे संसारकी श्रेष्ठतम बातें ग्रहण करने और हमारी मातृभूमिके लिए कुछ करनेका अवसर एवं सुविधा मिली है, तो वह आदमी एवं कुटुम्ब उनका (श्री० चिपलूनकरका) है। परन्तु उन आदमियोंको जिनसे मैं रक्त-सम्बन्ध, प्रेम और परस्पर आदरसे बंधा हुआ हूं, कितना अधिक कष्ट तथा दुःख देनेका कारण मैं हुआ हूं! यही विचार मुझे इतना दुखी करता है और मेरे मनको इतना खेद होता है कि मैं अब उनके दुःखमें एक तिल भी बढ़ानेकी हिम्मत नहीं कर सकता। और इसी लिए उन लोगोंके प्रति प्रेम प्रदर्शन कर तथा उन्हें धन्यवाद देकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करनेका सुख भी मैंने छोड़ दिया है। भला, मेरे उन सालोंके लिए उन बढ़िया नवयुवकोंके लिए किसे अभिमान न होगा? और उन लोगोंका भी क्या मुझे अभिमान न होगा जिन्होंने मुझे इस प्रेमके साथ रखा, और उस साध्वी कर्तव्य-शील मांको भी क्या मैं भूल सकता हूं? मेरे सभी

मित्रोंके लिए यह बात सत्य है। मैं उन सबको स्मरण करता हूँ; परन्तु उन्हींके हितके लिए—मेरे हितके लिए नहीं—मैं उनका नामोल्लेख नहीं कर सकता। मैं नहीं समझ सकता वह वकील कौन था जिसने अपने आपको मेरा साथी बतलाकर तुमसे भेंट की थी। पर यदि यह बात ठीक भी हो तो मुझे अबतक स्मरण रखनेके लिए उसे धन्यवाद दे दो। परन्तु जो लोग मेरा परिचय देकर तुम्हारे पास आवें, या मेरी भेंट या मुझसे बातचीत करनेकी बात कहें—उनसे सावधान रहना। तुम्हें सावधान करनेकी आवश्यकता नहीं है क्यों कि स्वयं तुम पर्याप्त अनुभव प्राप्त कर चुके हो, तथापि मैं तुम्हें इतनाही विश्वास दिलाता हूँ कि मैं किसीके साथ तुम्हारे पास कोई सन्देश अथवा समाचार नहीं भेजता। बातें सबकी सुन लो परन्तु विश्वास उन्हीं बातोंपर करो जो, मेरे नामके कारण नहीं, वरन तुम्हारे विवेकको ठीक जंचें। अब समय होगया है अतएव मैं पत्र समाप्त करता हूं। मैं स्वस्थ हूँ। तुमने जो बातें पूछी हैं वे बडे भाईके पत्रमें भेजी जायंगी। हम दोनोंका सबसे प्रेम। हमारे स्वास्थ्यके लिए चिन्ता मत करो। जितना हो सके अपने स्वास्थ्यकी चिन्ता करो। यदि डूबे हुओंपर ही समस्त मानुषी प्रयत्नोंके पश्चात आफत आवे, तो आने दो, हम तैयार हैं। हमारे लिए फिकर मत करो।

तुम्हारा प्रिय भाई
तात्या।

दसवां पत्र

ॐ

श्रीराम

पोर्ट ब्लेअर

ता. ४-८-१९१८

मेरे प्रिय बंधु !

तुम्हारा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई । इस वर्ष नियमपूर्वक तुमने पत्र और पार्सलें भेजीं, इसलिए यहां भी उचित समयपर पहुंची और हमारी बहुतसी चिंता एवं प्रार्थना-पत्र देनेका कष्ट बचा । पहले, मेरा पत्र, फिर भाईको भेजी हुई पार्सल, पश्चात भाईको भेजा हुआ पत्र, इन सबके कारण प्रति तीसरे मास हमें तुम्हारे समाचार मालूम होते रहे । इसी क्रमको यथाशक्ति नियम-पूर्वक जारी रखना ।

महाराष्ट्र प्रान्तीय परिषद्ने बहुमतसे सभी राजनैतिक कैदियोंको मुक्त करनेका ठहराव किया है । इस समाचारका मैं स्वागत करता हूं । वास्तवमें हिन्दुस्थानके अन्य प्रान्तोंकी राजनैतिक परिषदोंकी अपेक्षा बंबई प्रान्तीय परिषद् अपना कर्तव्य अधिक तेजस्विता, दृढता एवं सतत उद्योगसे कर रही है । गत वर्ष, जहांतक मुझे खयाल है, केवल युक्तप्रान्त और आंध्रकी राजनैतिक परिषदोंने राजनैतिक कैदियोंके छुटकारेके ठहराव किये थे । आंध्र परिषदका ठहराव निश्चित एवं

व्यापक रूपसे लिखा गया था, जिससे मालूम होता था कि आंध्र प्रान्तके निवासियोंके हृदयमें पूरी और सच्ची सहानुभूति उन लोगोंके प्रति है, जिन्होंने अपने विचारोंके अनुसार अच्छे या बुरे साधनों से, परन्तु पूरी सच्ची लगनके साथ, स्वार्थका पूरा त्याग करके, माता को बंध-मुक्त करनेका प्रयत्न किया और जो उसीके कारण जेलमें सड़ गल कर मर रहे हैं। तुमने लिखा है कि कई समाचारपत्र राजनैतिक कैदियोंकी मुक्तिके लिए लगातार लिख रहे हैं और कई मासिक पत्र भी इस बातपर जोर दे रहे हैं कि राजनैतिक कैदियोंको मुक्त करनेसे देशकी अशान्ति कुछ घट सकती है। यदि यह सब ठीक है, तो मेरी समझमें नहीं आता कि कांग्रेस अब भी क्यों संकोच कर रही है, आज भी वह क्योंकर एक भी शब्द, जिससे सहानुभूति नहीं वरन, मामूली मनुष्यताकी बू आवे, कहनेके लिए डरती है। सहानुभूति भी किसके लिए? उन लोगोंके राजनैतिक कैदियोंके लिए जिनकी प्रतिनिधि होनेका दावा कांग्रेस रखती है। गत वर्ष कांग्रेसने प्रान्तोंमें नजर-कैद किये गये लोगोंकी मुक्तिके लिए प्रस्ताव स्वीकृत किया, परन्तु कांग्रेस अन्य लोगोंको बिलकुलही भूल गयी, और बड़ी सुविधाके साथ भूल गई! खुली हवावाले सजे सजाये मंडपमें बैठे हुए हमारे देशभक्तोंको जिन कष्टोंने रुलाया, वे कष्ट दूसरे कुछ आदमियोंके लिए अनगिनत हैं और वे उन्हें लगातार सह रहे हैं। वे आदमी एक या दो नहीं, सहस्रों हैं; जिनका कार्य और बलिदान कमसे कम हमारे नजर-कैद भाइयोंसे कम नहीं है और जिनका दु:ख, युद्धकी समाप्तिके साथ अपने आपही समाप्त नहीं हो सकता, जैसा कि नजर-कैद लोगोंके संबंधमें होगा। इस लिए इन

के लिए, उन लोगोंको जो जनताके जिम्मेदार नेता कहलाते हैं, अधिक जोरका तथा दृढ आन्दोलन करना चाहिए। जिम्मेदारी! कैसी भारी: जिम्मेदारी है! वे केवल नजर-बंदोंकी ही चर्चा करते हैं, क्योंकि उनको मालूम है कि उनकी चर्चा करनेमें कोई संकट उनपर नहीं आनेवाला है! अन्य कैदियोंकी वे इस लिए चर्चा नहीं करते कि उसके करनेसे अपने मालिककी दृष्टिमें वे अपनी जिम्मेदारीकी प्रतिष्ठा खो बैठेंगे! जब भिन्न भिन्न प्रांतीय परिषदोंने इतनी स्पष्टतासे इतनी बार प्रकट कर दिया है कि अधिकांश प्रान्त हृदयसे चाहते हैं कि राजनैतिक कैदियोंका छुटकारा किया जाय, तब समझमें नहीं आता, कि कांग्रेस इस तरह का ठहराव क्यों नहीं कर रही है! कांग्रेसका कार्य यह नहीं है कि उसपर प्रभाव रखने वाले कुछ थोडेसे लोगोंके भावोंको ही वह प्रगट करे। उसको उन बहुसंख्यकोंका मत प्रगट करना चाहिए, जिनकी वजहसे उसे बल और सहायता मिलती है और जिनके नामपर ही कांग्रेसको कांग्रेस कहलानेका अधिकार है। जब इतनी प्रान्तीय परिषदें इतनी बार इस ठहरावको कर चुकी हैं, जब मुख्य मुख्य समाचारपत्र एवं मासिकपत्र लगातार इस विषयपर जोर देते रहे हैं, जब कांग्रेसके कई नेता—जो कभी स्वयं कैदखानेकी दीवारोंके अन्दर सड रहे थे—यह सोचते रहे हैं कि उन भाइयोंको, जिनके लिए वे लडे थे, सहानुभूति प्राप्त करनेका उन्हें अधिकार है, जब आस्ट्रियाके लोग भी—आयरिश और बोअर आफ्रिका तो कहना ही क्या है?—इतनी हिम्मत, इमानदारी और कृतज्ञता प्रकट कर चुके हैं कि उन्होंने अपने राजनैतिक कैदियोंकी रिहाईके लिए

आन्दोलन किया और उन्हें छुड़ाकरही रहे—जब ये सब बातें मालूम होती हैं और स्वीकार की जाती हैं, तब मैं सोचता हूं कि कांग्रेस को बाध्य किया जा सकता है और तुरन्त बाध्य करना चाहिए कि इस साल वह भी उतनाही हिम्मतवाला और व्यापक प्रस्ताव स्वीकृत करे, जितना महाराष्ट्र तथा आंध्र प्रांतकी परिषदोंने किया है। यदि कोई बूढे खुसट आदमी इस प्रस्तावसे भय खाते हों तो उन्हें उस सभामें अनुपस्थित रहने दो, जिसमें यह प्रस्ताव स्वीकृत किया जाय। जब कि केवल मुट्ठीभर 'जिम्मेदार' उसके लिए भय खाते हैं, तब तुम सबको इस अपराध-पूर्ण चुप्पीमें क्यों कर भाग लेना चाहिए ?

इस तरहके प्रस्ताव या आन्दोलनको सफल बनानेके लिए दो बातोंका ध्यान रखना चाहिए। कई समाचारपत्रवाले राजनैतिक कैदियोंके विषयमें लेख लिखते हैं, परन्तु उनकी भाषा ऐसी सन्देह-जनक होती है कि स्वयं सरकार और जनता भी 'राजनैतिक कैदी' के व्यापक शब्दका ठीक ठीक मतलब नहीं समझ सकती। कभी कभी इसका अर्थ होता है नजर-कैद किये गये लोग, कभी विशेष स्थानपर रोके हुए लोग, कभी देश-निकाला दिये हुए और कभी राज-कैदी। परन्तु इसका अर्थ कभी मुश्किलसे उन लोगोंको संगृहीत करता है, जो राजनैतिक कार्योंके लिए दंडित हुए हैं। मैंने तुम्हें गत वर्षके पत्रमें बतलाया था कि स्वयं मि० बोनरलॉने आयर्लैण्डके कैदियोंके विषयमें भेद बतलाया था और कहा था कि विद्रोह करने वाले लोग 'व्यक्तिगत कार्यों' के अपराधी नहीं हैं। इन महाशय को यह बात अच्छी तरह मालूम है कि सफेजिस्ट लोग, प्रायः सभी

'व्यक्तिगत कार्यों'के लिए दंडित किये गए थे और उन्होंने कई स्थानों पर माल-असबाबको भी नष्ट किया था। परन्तु वे लोग उसी सरकार द्वारा, युद्धके छिडते ही छोड दिये गये, जिसके एक अंश मि० बोनरलॉ भी हैं। इसलिए मेरी समझमें नहीं आता कि हिन्दुस्थानके 'जिम्मेदार' आदमियोंको 'अपराधी' शब्द क्यों भय-प्रद मालूम होता है! और मि० बोनरलॉकी सरकार 'व्यक्तिगत कार्य'के पर्देके अंदर क्यों छिपती है! जनरल बोथा मुख्य मंत्री हैं और रेडमंड पार्लियामेन्टके एक संगठित दलका नेता है। तथापि उन्होंने अपने ही विरोधियों, प्रत्यक्ष विद्रोहियों, उन्हींकी सरकारका विरोध करनेवालोंको मुक्त कर दिया। परन्तु कांग्रेसवाले समझते हैं कि 'हमीं जिम्मेदार आदमी है!' शहरके शेरिफ और म्युनिसिपेलिटीके चेयरमेनकी अपेक्षा शहरके फाटकपर खडा रहकर भीख मांगनेवाला अछूत, नगरका अधिक जिम्मेदार नागरिक है और ऊंची जानवाला है! इसलिए भविष्यनके प्रस्तावों एवं समाचारपत्रोंके लेखोंमें इस बातपर स्पष्टताके साथ जोर दिया जाय कि 'राजनैतिक केदी' शब्दका अर्थ है, वे सब केदी जो कैद भुगत रहे हैं, चाहे अपराधी साबित होकर या न होकर, चाहे व्यक्तिगत कार्योंके लिए, (मैं तो वास्तवमें इसका अर्थ ही नहीं समझता!) उन कामोंके लिए जो केवल राजनैतिक उद्देश्योंसे किये गये और माने गये हैं''! राजनैतिक और साधारण कैदियोंका भेद, उद्देश्यकी कसौटीसे करना चाहिए, जिसके कारण कार्य हुआ है; कार्यकी कसौटीसे नहीं। कोई भी कार्य स्वयं राजनैतिक न होता है न हो सकता है। क्यों कि यदि अपनी दाल रोटीके लिए ही मैं विद्रोह करूं तो वह राज-

नैतिक नहीं है, न उसके लिए लोगोंमें सहानुभूति उत्पन्न होना चाहिए। सहानुभूति तभी उत्पन्न होगी जब मेरा सत्कार्य, हाथमें लिया हुआ दूसरोंका मामला हो और सर्व-साधारण अधिकारों एवं विशेषाधिकारोंको प्रकट करने तथा स्थापित करनेके लिए किया गया हो। ठग लोगोंने भी लडाइयां लडी हैं, पर सर्वसाधारणकी भलाईकी दृष्टिसे वे राजनैतिक नहीं कहे जा सकते। परन्तु सम्पत्तिका नाश तथा मुख्य प्रधानको कोडे मारनेका भी सफ्रेजिस्टोंका कार्य इंग्लैंडकी ब्रिटिश सरकारने राजनैतिक मान लिया है, क्योंकि आन्दोलनकारियोंका उद्देश्य व्यक्तिगत प्रभाव जमाना अथवा बदला लेनेकी गरजसे प्रेरित नहीं था; वरन् सामाजिक हितका करना ही था। साधन चाहे गलत हों, चाहे अपराधपूर्ण हों; पर कार्यके नैतिक मूल्यकी दृष्टिसे मुख्य बात है हेतु—और यहां, कार्यकी राष्ट्रीय दृष्टिसे सम्बन्ध है। मैं यह बात विशेष जोरके साथ लिख रहा हूं, इस वजहसे, कि यदि कैदियोंको माफी दी जाय—जिसकी मुझे आशा नहीं है, तो यह मुद्दा हमारे मार्गमें रोडे अटकायेगा, क्योंकि सरकार कोइ असम्बद्ध भेद-भाव स्वीकार कर लेगी और 'राजनैतिक कैदी' का अर्थ अपनी सुविधाके अनुसार वास्तविक नहीं करेगी। जिन जिन लोगोंके पास तुम जा सको उन सबको यह बात ठीक तरहसे समझा दो ताकि हमारे समाचारपत्रों एवं नेताओंको सदा इस भेदका ध्यान रहे।

जब कभी कोई प्रान्तीय परिषद् इस आशयका प्रस्ताव स्वीकृत करे तब मुझे जरूर लिखना। यह भी लिखना कि गत [illegible] कांग्रेसकी विषय-निर्धारिणी कमेटीमें इसपर चर्चा हुई अथवा

नहीं। कितने समाचारपत्रोंने पूरी लगनसे इस विषयमें लिखा तथा इस वर्षकी कांग्रेसमें कुछ होने जैसा है या नहीं। जब इस विषयमें तुम लिखो तब केवल उन्हीं मामलोंका उल्लेख करो जिनके लिए सर्व-साधारणने माफी चाही है। केवल थोडेसे नजरबंदोंका ही उल्लेख मत करना।

सार्वजनिक प्रार्थनापत्र भेजनेके आन्दोलनका क्या हुआ? तुमने इस विषयमें अपने पत्रमें कुछ भी नहीं लिखा है। वह विचार छोड मत दो। मेरा ख्याल है कि युद्धका अंत होने पर इस मामलेको अधिक परिणामकारी रीतिसे आगे बढानेके इरादेसे तुमने उसे स्थगित कर दिया है। यदि ऐसाही है तो ठीक है। यहां आये हुए एक पत्रसे मुझे मालूम हुआ कि मि० माण्टेगू जिस समय हिन्दुस्थान में आये थे उस समय राजनैतिक कैदियोंकी रिहाईके लिए उनसे दरखास्त की गयी थी। क्या यह बात ठीक है? एक बार तुमने लिखा था कि तुम सभाएं कर रहे हो। यह आन्दोलन जारी रखो, एक बारही नहीं वरन प्रतिवर्ष इसे करते रहो। कांग्रेस, राजनैतिक परिषदें, व्यक्तिगत प्रार्थनापत्र, कुटुंबोंके प्रार्थनापत्र, इसी विषयके लिए की गयी सभाएं, समाचारपत्रोंका ध्यान, वाइसराय एवं प्रान्तीय परिषदोंमें प्रश्न, पार्लियामेंटमें प्रश्न, ये सब—इनमेंसे प्रत्येक—बातें व्यवस्थाके साथ और दृढताके साथ वर्षभर करते रहना चाहिए, जब तक कि क्षमा देनेका प्रश्न वहांकी राजनीतिका प्रश्न न बन जाय। अपने प्रत्येक पत्रमें इन विषयोंमें जो कुछ किया जाय, उसका सारांश लिखते रहो और जब कभी प्रस्तावों या लेखोंमें अथवा जन-

नामें या सरकारमें, इस विषयकी चर्चा चले तब 'राजनैतिक कैदियों' शब्दका अर्थ स्पष्ट करनेसे मत चूको।

मैं स्पष्ट रीतिसे इस बातको स्वीकार करता हूं कि आंदोलनके वास्तविक परिणामपर मैं ध्यान नहीं दे रहा हूं, वरन उसके नैतिक परिणाम पर। मैं जानता हूं और सरकारको भी स्पष्टताके साथ गत वर्ष एक प्रार्थनापत्रमें लिख चुका हूं कि भारतमें उन्नति-शील एवं वास्तविक संगठित शासन स्थापित करनेका प्रश्न सर्व-साधारण राजनैतिक कैदियोंकी माफीके साथ दृढता और आवश्यक रीतिसे सम्बद्ध है। माफीका अवसर शीघ्रताके साथ एवं सर्वप्रथम ही नहीं मिलेगा। इस लिए हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि वास्तविक परिणाम शीघ्र ही नहीं होगा तथापि नैतिक परिणामोंको हमें भुला न देना चाहिए। नैतिक परिणामोंसे ही हमारे राष्ट्रका चरित्र एवं प्रभाव बढेगा; राष्ट्रको अपने सिपाहियों, धर्मवीरों, एवं उन बलियोंके कष्टोंका स्मरण होगा जो उनके सर्वसाधारण कामकी सफलताके लिए लडे हैं। लोगोंका उत्साह बढेगा और वे लडाईको जारी रखकर विजय सम्पादन करेंगे। शहीद हुए सिपाहियोंका कृतज्ञताके साथ स्मरण करनेसे ही लडाई जारी रखने वाली नयी भरती मिलती है।

जिस प्रार्थनापत्रका मैं उल्लेख कर चुका हूं उसमें मैंने मि. मांटेगू तथा वाइसरायके सामने इस मुआफीके मामलेको साफ साफ तौरपर रख दिया था। उस प्रार्थनापत्रकी मुख्य बातें आगे दी हैं। मैंने लिखा था कि जब सरकार भारतीय शासन-सुधारके प्रश्नका

विचार कर रही है तब सरकारको इस बातको मानना पड़ेगा कि यदि वह हिन्दुस्थानमें उत्तरदायी शासनकी स्थापना करना चाहती है तो हमको और अधिक समयतक जेलोंमें बंद रखना निष्फल होगा। क्यों कि यदि वास्तवमें ही उत्तरदायी शासन दिया जाय और राजनैतिक कैदियोंको माफी न दी जाय तो नयी शासन-पद्धतिके गलेमें राजनैतिक कैदियोंका चक्कीका पाट अड़चन उपस्थित करेगा। यदि हम लोग जेलोंकी पाषाणमय दीवालों और कोठरियोंमें बंद रखे गये तो लोगोंको जनता और सरकारके बीचकी कटुता एवं पुराने संदेहोंका ध्यान अवश्य आवेगा; फिर बदले हुए 'दृष्टि-कोण' तथा परस्पर सहकारिता एवं विश्वासकी, चाहे जितनी, बातें सरकार कहे और स्वीकार करे, पर उसका कुछ मतलब न निकलेगा! क्योंकि यदि लोगोंको होमरूल (स्वायत्त शासन) दे भी दिया जाय और साथमें उनके राजनैतिक कैदियोंको क्षमा प्रदान न की जाय तो देशकी अशांतिकी जड़ किस प्रकार कट सकती है? जिस देशमें भाईसे भाई जुदा किया गया हो, जहांके सहस्रों आदमी कारागारके पिंजरेमें सड़ रहे हों और देशसे बाहर जेलोंमें रखे गये हों और जहांके प्रत्येक कुटुम्बमें किसीका भाई, किसीका पुत्र, किसीका पिता, किसीका मित्र, किसीका प्रेमी हृदयसे छीन लिया गया हो और जुदाईकी सूखी, जलहीन मरुभूमिमें सूख सूख कर मरनेके लिए रखा गया हो, वहां शांति और संतोष और विश्वास किस तरह पैदा हो सकते हैं? इसी तरह यदि राजनैतिक कैदियोंको रिहा किया जावे और भारतके लिए उत्तरदायी शासन देनेका सच्चा और असली प्रयत्न न किया जाय तो भी यह बात वृथा होगी।

न:में या सरकारमें, इस विषयकी चर्चा चले तब 'राजनैतिक कैदियों' शब्दका अर्थ स्पष्ट करनेसे मत चूको।

मैं स्पष्ट रीतिसे इस बातको स्वीकार करता हूं कि आंदोलनके वास्तविक परिणामपर मैं ध्यान नहीं दे रहा हूं, वरन उसके नैतिक परिणाम पर। मैं जानता हूं और सरकारको भी स्पष्टताके साथ गत वर्ष एक प्रार्थनापत्रमें लिख चुका हूं कि भारतमें उन्नति-शील एवं वास्तविक संगठित शासन स्थापित करनेका प्रश्न सर्व-साधारण राजनैतिक कैदियोंकी माफीके साथ दृढता और आवश्यक रीतिसे सम्बद्ध है। माफीका अवसर शीघ्रताके सा: एवं सर्वप्रथम ही नहीं मिलेगा। इस लिए हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि वास्तविक परिणाम शीघ्र ही नहीं होगा तथापि नैतिक परिणामोंको हमें भुला न देना चाहिए। नैतिक परिणामोंसे ही हमारे राष्ट्रका चरित्र एवं प्रभाव बढेगा; राष्ट्रको अपने सिपाहियों, धर्मवीरों, एवं उन बलियोंके कष्टोंका स्मरण होगा जो उनके सर्वसाधारण कामकी सफलताके लिए लडे हैं। लोगोंका उत्साह बढेगा और वे लडाईको जारी रखकर विजय सम्पादन करेंगे। शहीद हुए सिपाहियोंका कृतज्ञताके साथ स्मरण करनेसे ही लडाई जारी रखने वाली नयी भरती मिलती है।

जिस प्रार्थनापत्रका मैं उल्लेख कर चुका हूं उसमें मैंने मि. मांटेगू तथा वाइसरायके सामने इस मुआफीके मामलेको साफ साफ तौरपर रख दिया था। उस प्रार्थनापत्रकी मुख्य बातें आगे दी हैं। मैंने लिखा था कि जब सरकार भारतीय शासन-सुधारके प्रश्नका

विचार कर रही है तब सरकारको इस बातको मानना पड़ेगा कि यदि वह हिन्दुस्थानमें उत्तरदायी शासनकी स्थापना करना चाहती है तो हमको और अधिक समयतक जेलोंमें बंद रखना निष्फल होगा। क्यों कि यदि वास्तवमें ही उत्तरदायी शासन दिया जाय और राजनैतिक कैदियोंको माफी न दी जाय तो नयी शासन-पद्धतिके गलेमें राजनैतिक कैदियोंका चक्कीका पाट अड़चन उपस्थित करेगा। यदि हम लोग जेलोंकी पाषाणमय दीवालों और कोठरियोंमें बंद रखे गये तो लोगोंको जनता और सरकारके बीचकी कटुता एवं पुराने संदेहोंका ध्यान अवश्य आवेगा। फिर बदले हुए 'दृष्टि-कोण' तथा परस्पर सहकारिता एवं विश्वासकी, चाहे जितनी, बातें सरकार कहे और स्वीकार करे, पर उसका कुछ मतलब न निकलेगा। क्योंकि यदि लोगोंको होमरूल (स्वायत्त शासन) दे भी दिया जाय और साथमें उनके राजनैतिक कैदियोंको क्षमा प्रदान न की जाय तो देशकी अशांतिकी जड़ किस प्रकार कट सकती है? जिस देशमें भाईसे भाई जुदा किया गया हो, जहांके सतसों आदमी कारागारके पिंजरेमें सड़ रहे हों और देशसे बाहर जेलोंमें रखे गये हों और जहांके प्रत्येक कुटुम्बमें किसीका भाई, किसीका पुत्र, किसीका पिता, किसीका मित्र, किसीका प्रेमी हृदयसे छीन लिया गया हो और जुदाईकी सूखी, जलहीन मरुभूमिमें सूख सूख कर मरनेके लिए रखा गया हो, वहां शांति और संतोष और विश्वास किस तरह पैदा हो सकते हैं? इसी तरह यदि राजनैतिक कैदियोंको रिहा किया जावे और भारतके लिए उत्तरदायी शासन देनेका सच्चा और असली प्रयत्न न किया जाय तो भी यह बात वृथा होगी।

मैंने यह बात सचाई और ईमानदारीके लिए लिखी है यद्यपि वह मेरे व्यक्तिगत लाभके विपरीत है। उस देशमें रहना हमारे लिए असहनीय होगा जहां, उन्नतिके प्रत्येक मार्गपर लिखा हुआ है, 'इस रास्ते जानेवाले दंडित होंगे,' जहां सन्देह भरे मार्गपर पांव रखे बिना चलना ही मुश्किल है, जहां आगे बढाये हुए प्रत्येक कदमके साथ आगे बैठे हुए सुलतानकी नाराजगी होती है और पीछे हटाये हुए कदमके लिए व्यक्तिकी आत्म-प्रतिष्ठा और विवेक-बुद्धि नाराज होती हैं, जो कि अपनी सख्तीमें सुलतानोंसे कम नहीं हैं। इसलिए होमरूल और माफी—दोनों साथ साथ ही होना चाहिए। एकके प्रभावशाली होनेके लिए दूसरेका उसके साथ होना अनिवार्य रूपसे आवश्यक है। उस प्रार्थनापत्रमें मैंने यह भी लिखा था कि इस प्रार्थनापत्रके भेजनेका मेरा उद्देश्य और हेतु सर्वसाधारण क्षमाका दिया जाना है। इसलिए यदि मेरा नाम ही माफीके मार्गमें बाधक हो और मुझे यदि माफी न भी दी जाय तो मैं इस बातसे जरा भी असंतुष्ट नही होऊंगा! यदि सरकार कभी इस तरह विचार करे—और मैं देखता हूं कि मि० मांटेगूकी प्रकाशित की हुई शासन—योजनाके एक पैराग्राफमें आशा प्रगट की गयी है और वह आशा इसी ढंगके प्रश्नके उत्तर स्वरूप है कि—क्रांतिकारियोंको अब वैध आंदोलन द्वारा अपनी आशाओं और इच्छाओंकी पूर्तिका साधन मिल जायगा और वे अपना विचार बदलकर उपयोगी कार्यके मार्ग पर आजावेंगे; यदि सरकार इस तरह विचार करे और ऐसा वास्तविक उत्तरदायी शासन प्रदान करे, जिसमें वाइसरायकी कौन्सिलमें लोकप्रतिनिधियोंका दृढ बहुमत रहे, ऊपर कौन्सिल आफ स्टेटकी प्रतिमा

की सत्ता न रहे, जिससे कि वाइसरायकी कौंसिलके वरदानोंमें यह दूसरी संस्था शापोंका मिश्रण न कर सके तो; मैं कहता हूं कि, यदि चुने हुए प्रतिनिधियोंका बहुमत वाइसरायकी कौंसिलमें रहे और यदि इसके साथ ही राजनैतिक कैदियों तथा अमरीका यूरोप आदि विदेशोंमें रहनेवाले राजनैतिक कार्यकर्ताओंको दयाके साथ सर्व-साधारण माफी दी जाय तो मैं और अन्य बहुतसे लोग भी, जिन्हें मैं जानता हूँ, हृदयसे ऐसे संगठनका स्वीकार करेंगे और यदि हमारे लोग उचित समझें तथा सरकार इजाजत दे तो, उस संगठनमें काम करेंगे तथा अपने जीवनका उद्देश्य कौंसिलोंमें पूरा करेंगे। ये कौंसिलें अभी तक हमारे लिए सिवाय बुराईके और कुछ नहीं करती रही हैं। इन्होंने अभी तक तक यदि कुछ किया है तो यही किया है कि हमारे हृदय उनके तथा उनकी नीतिके प्रति कटुतासे भर जायँ। भला ऐसा कोई भी आदमी संसारमें होगा जो केवल आमोद-प्रमोदके लिए अग्निको अपनी बलि चढाये और संकटोंके मार्गपर लहू-लुहान पांवोंसे चले! ऐसा आदमी शायद ही कोई होगा और शायदही कोई देशभक्त एवं मनुष्यतावादी ऐसा होगा जो लापर्वाहीके साथ खूनी तथा अत्याचारपूर्ण क्रान्तिका आश्रय लेवे——उस समय जब कि अधिक सुरक्षित अधिक श्रेष्ठ एवं अधिक नैतिक और इसी लिए अधिक परिणामकारी तथा कम झगडेका——मार्ग, वैध आंदोलनका मार्ग, उन्नतिके लिए उसके सम्मुख खुला हुआ हो और उसका वह उपयोग कर सके! जहां संगठित शासनही नहीं है वहां वैध आन्दोलनकी बात करना एक प्रकारसे मखौल उडाना है। परन्तु क्रांतिकी इस तरह चर्चा करना, मानों वह गुलाब जल है, और वहभी ऐसे समय जब कि

इंग्लैण्ड अथवा अमरीका जैसा, घट बढ़ सकनेवाला प्रगतिकारी शासन संगठन मौजूद हो—केवल मखौलही नहीं है वरन उससे भी बदतर है, अपराध है।

हूबहू यही बात मैंने सरकारको गत अक्तूबर मासमें लिखी थी। वर्तमान समयके परिवर्तनोंको देखकर मुझे आशा है, कि जब स्वराज्य-योजनाका बिल स्वीकृतिके लिए पार्लियामेण्टके सन्मुख आवेगा, उस समय यदि ठीक ढंगसे संगठित आंदोलन किया जायगा तो पार्लियामेंटसे हमें स्वीकार-योग्य शासन-योजना मिल सकेगी। मैं इस विषयपर वाइसरायका ध्यान फिरसे आकृष्ट करना चाहता हूं और जानना चाहता हूं कि मेरी दरख्वास्तपर सरकारने कोई निश्चय किया है अथवा नहीं। * मुझे वाइसरायकी सरकारसे ता: १-२-१८ को जवाब मिला है कि राजनैतिक कैदियोंको क्षमा प्रदान करनेका प्रश्न भारत सरकारके विचाराधीन है। मुझे मालूम हुआ है कि सरकारने इस माफीके प्रश्नको, लड़ाईके बाद तय करनेका

* क्रांतिकारियोंके राजनैतिक विचार प्रकट करने वाली दरख्वास्त और विशेषकर श्री० वि० दा० सावरकरकी दरख्वास्त, इसी आशयसे लिखी गयी थी कि पार्लमेंटमे सुधार-योजना शीघ्र पास करनेके लिए सरकारपर वजन पडे। श्री० सावरकरजीके पास कई कारण ऐसे उपस्थित थे जिनसे मालूम होता था कि सरकार जानना चाहती है कि क्रांतिकारियोंका सुधार-योजनाके प्रति क्या व्यवहार रहेगा। अंदमानके अधिकारी कई बार सावरकरजीके पास गये थे और उन्होंने अपने राजनैतिक विचार प्रकट करनेके लिए उनसे कहा था। सावरकरजीका विश्वास हो चुका था कि सुधार-योजना विशेष कर क्रांतिकारियोंके लिए ही थी।

विचार किया है ! तुम स्वयं इस बातका पता लगा लो, क्योंकि आपकी कार्रवाईकी उलझनमें इन बातोंके लिए मुझे बहुत खुशामद करनी पड़ती है !

तुमने पिछले पत्रमें पूछा है कि हमें दूसरी श्रेणीके कैदी बनाये जानेसे क्या क्या सहूलियतें मिली हैं। अच्छा सुन लो, सहूलियतें मिली हैं या नहीं। जेलके बाहर जानेकी इजाजत मिली ? नहीं। लिखने-पढ़नेकी सामग्री मिली ? नहीं। भाईके साथ रहने या मिलनेकी आज्ञा मिली ? नहीं। अनिवार्य सख्त परिश्रमसे छुटकारा हुआ ? नहीं। वार्डरका काम मिला या जेलकी कोठरीका ताला खुला ? नहीं। हमारे साथ बेहतर अथवा सुखकर व्यवहार होता है ? नहीं। चिट्ठियां अधिक लिख सकते हैं ? नहीं। घरमें किसीको यहां मिलने आनेकी इजाजत मिली ? दूसरोंको पांच वर्ष बाद ही इजाजत मिलती है, मुझे यह आठवां वर्ष चल रहा है पर इजाजत नहीं मिली। फिर भी यदि तुम पूछते ही हो कि दूसरी श्रेणीके कैदियोंमें रखे जानेसे क्या लाभ पहुंचा तो सुन लो, लाभ यही पहुंचा कि मैं दूसरी श्रेणीका कैदी समझा गया ! समझे, डाक्टर ?

यह तो हुई जेलके सुभीतोंकी बात। ये सब कष्ट मैं सह सकता था, जबतक मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक था। परन्तु इस वर्ष मेरी अड़चनोंमें एक महत्वकी अड़चन और आ मिली है, क्योंकि मेरा स्वास्थ्य बिलकुल नष्ट हो गया है। तुम जानते हो कि मैं इस तरहकी भाषा न लिखता, परन्तु इस समय उस बातको स्पष्टतासे

प्रकट कर देना मेरा कर्तव्य है। मुझे विश्वास है कि गीताका अध्ययन करने वाला व्यक्ति, मेरा निजी भाई, किन्हीं अड़चनोंसे भय न खायगा। विधाता हमपर जो कुछ संकट लाना चाहे, लावे, पर तुम उन सब तूफानोंका मुकाबला करते हुए दृढ़ताके साथ डटे रहोगे। प्रति वर्ष, एक दिन, मेरे लिए पूरी खुशीका हुआ करता था—वह दिन था घर पर पत्र भेजनेका दिन। इस वर्ष वह दिन उतनी खुशी का नहीं है। क्योंकि यद्यपि मैं अपनी स्मृतिको प्रसन्न करता हुआ तुम्हें पत्र लिख रहा हूं—सभी आल्हादकारी दृश्य, प्रिय-जनोंके मुख, कृतज्ञता भरी स्मृति मेरे सम्मुख जी उठते हैं तथापि इस पत्रके लिखनेकी मेहनतसे मुझे थकान आ रही है। शरीर शिकायत करता है और मैं आराम किये बिना आगे लिख नहीं सकता। गत वर्ष मार्च मासमें मेरा वजन ११९ रतल था। इस वर्ष ९८ रतल है। यहांके अधिकारी उसी वजनको यहांकी पुस्तकोंमें लिखते हैं जो कैदीके यहां पहुंचनेपर तौला जाता है। यह जांच गलत है, क्योंकि कैदी यहां तब पहुंचता है जब वहां वर्षोंतक जेल और हिरासतमें सड़ता रहता है। मैं जब यहां आया था तब भी मेरा वजन ११२ रतल था। आरम्भमें चिकित्साकी लापर्वाहीके कारण मुझे अब संग्रहणी हो गयी है जिससे मैं सूखकर हाडका कंकाल मात्र हो गया हूं। आठ सालतक मैं वजनको उठाता रहा। मेरे शरीरपर अन-गिनत तथा नयी नयी कठिनाइयोंने वार किया। क्रोध धमकी एवं आहोंकी, मनको कमजोर करनेवाली और दिलको तोड़नेवाली वायुकी दुर्गंधने मेरे जीवनके श्रेष्ठ श्वासको रूंधना चाहा, पर परमात्माने मुझे सहनेकी, दृढ़ताके साथ सहने की शक्ति दी और इन आठ सालोंतक मैं इनका मुकाबला करता रहा।

अब मुझे मालूम होता है कि शरीरको ऐसा धाव पहुंचा है जिसका सुधरना कठिन है और जिसके कारण शरीर धीर २ घुल रहा है। कुछ दिनोंसे यहांका मेडीकल सुपरिण्टेण्डेण्ट मेरी कमजोरीकी ओर कुछ विशेष ध्यान देने लगा है। मैं अभी भी ड्यूटीपर जाता हूं, काम करता हूं, अस्पतालमें नहीं पहुंचाया गया हूं। फिर भी मुझे अस्पतालकी खुराक दी जाती है जो कुछ अच्छी पकी होती है। मैं सिर्फ भात खाता हूं और मुझे दूध एवं रोटीके मिलनेकी इजाजत है। खाना तो कुछ ठीक है और शायद कुछ और भी सुधर जाय। परन्तु संभावना तो यह मालूम होती है कि मेरी यह सदाकी कमजोरी किसी भयंकर बीमारीमें न बदल जाय, या शायद जेल का सदाका मित्र—जो अंदमानकी जेलमें विशेष रूपसे है—वह मित्र क्षय न हो जाय। केवल एक ही बातसे तबीयतके सुधरनेका मुझे विश्वास है। वह बात है जलवायुका परिवर्तन। 'जेलकी भाषामें जिसे परिवर्तन कहते हैं वह नहीं, क्योंकि यहां परिवर्तनका अर्थ ही अधिक बुरी हालतमें जाना है। मैं परिवर्तन चाहता हूं, भारतीय जेलके किसी अच्छी जलवायु वाले स्थानमें। यहांकी उदासीनता दिलको तोड़ रही है। फिर भी तुम हमारी अधिक चिंता मत करो। यहांकी हालत बुरी जरूर है पर वह आखिरी फैसला न कर सकेगी। जेलोंमें मनुष्यको जिंदा रखनेकी बड़ी शक्ति है। वहां आदमी घुला दिया जाता है, पर मारा नहीं जाता। वह सड़ गल भले ही जाय, पर उसे रक्षक लोग कायम रखेंगे। यहां कई कैदियोंके ऐसे भी उदाहरण मौजूद हैं, जो दुर्बल होनेपर भी ८०-८० वर्ष तक जिंदा रहे! इस लिए शरीर चाहे जितना दुर्बल हो जाय, तथापि भयकी

कोई आवश्यकता नहीं है——कमसे कम तब तक तो नहीं है जब तक तबियत अधिक नहीं बिगडती।

पर ये सब बातें शरीरके लिए——मांसके लिए——ही है। जलती हुई ज्वालाओंके ढेरपर खडा रहकर कोई आदमी उन ज्वालाओंके भयसे मुक्त नहीं हो सकता। तथापि मेरी आत्मा आजभी कांपनेवाले शरीरपर हुकूमत चला सकती है। वह आजभी अधिक कष्ट सहनेके लिए खुशीके साथ, एक पांव भी पीछे हटाये बिना तैयार है। भाईका स्वास्थ्य मुझसे अच्छा है। यद्यपि सिर दर्दके कारण उनका वजनभी १०६ रतल रह गया है।

प्रिय मेहम कामाको मेरा प्रेम एवं सादर प्रणाम निवेदन करना। आशा है कि उनका स्वास्थ्य ठीक होगा। हँसते-खेलते बालकोंके मधुर संगीतमें जीवन बितानेके बजाय उन्हें देश-निकालेका जीवन व्यतीत करना पड रहा है! हमारी बहिन माईका क्या हाल है? उसे कहो कि जितने कष्ट होवे, होने दो। उनकी पर्वाह मत करो। उसे स्मरण दिला दो कि उसके भाइयोंको उससे अधिक कष्ट सहना पडते हैं। उसके साथ उसका वसंत तो है, उसका सुख देखकर वह जीवनके दुःखों एवं कष्टोंको भूल सकती है! प्रिय यमुनाबाइ एवं मेरी सालियोंसे प्रेम कहना। शांताका सुधार सुनकर प्रसन्नता हुई। प्रिय डाक्टर, जिस मित्रका तुमने उल्लेख किया है, उससे मेरी ओरसे क्षमा-याचना करना। जब कभी उनसे भेंट होगी तब वे जानेंगे कि मैं उनका कितना मूल्य करता हूँ। उनके जैसे अभिन्न-हृदय मित्र संसारमें बहुत कम होते हैं। मुझे खेद है कि मैं उनके लिए

अथवा अपने साले बाल्लू अन्नाके लिए तथा अन्य लोगोंके लिए, कालेजके दिनोंके चुने हुए मित्रोंके लिए अथवा अपने प्यारे सहकारियोंके लिए कुछ नहीं कर सकता। मैं उनका कृतज्ञतापूर्ण हृदयसे स्मरण मात्र करता हूँ। छोटे रंजनका क्या हाल है? मुझे पहचानता है? मैंने सुना है कि तुम्हारे वहाँ प्लेगके होनेकी संभावना है। इस लिए सावधान रहो और अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करो, क्योंकि वही हमारा जीवन है।

तुम्हारा भाई
तात्या।

ग्यारहवां पत्र

—※—

ॐ

श्रीराम

कारा-कोठरी
पोर्टब्लेयर
२१-९-१९१९

मेरे प्रिय बन्धु,

मेरा खयाल था कि तुम बंबई पहुंचते ही पत्र लिखोगे और इसी लिए मैं मामूलीसे अधिक समयतक बाट जोहता रहा। परंतु आजतक तुम्हारा पत्र नहीं आया इस लिए तुम्हारे पत्रकी अधिक देरतक राह न देखनेका मैंने निश्चय कर लिया है। पिछला पत्र जब मैंने तुमको लिखा था उसके बादसे मेरा स्वास्थ्य उसी तरह है जैसा अपनी भेंटके समय तुमने देखा था। तुम्हारे यहांसे जानेके पश्चात एक दो सप्ताह तक स्वास्थ्य ठीक रहा परन्तु फिर फसली बुखार अथवा पेचिशसे मेरी तबीयत बिगड़ी और मेरे शरीरके वजनसे पाउण्ड दो पाउण्डका कर इन बीमारियोंने वसूल किया। फिर एक दो सप्ताह तक स्वास्थ्य अच्छा रहा। बस इसी तरहसे स्वास्थ्यका हाल चलता रहता है और इसी वजहसे मेरा वजन, जो गत वर्ष औसतन ९९ रतल था, घटकर पिछले एक दो महीने से ९६ और ९५ रतल रह गया है। वास्तवमें स्वास्थ्य इससे भी बुरा हो जाता यदि भोजनमें कुछ सुधार न होता और रहनेके लिए

कुछ अच्छी कोठरी न मिलती। यह सुविधा भी बहुत देरीसे दी गयी है। इधर वजन प्रति दिन घटता ही जाता है, परन्तु भूख सुधर रही है और अस्पताली खुराकके कारण पेटकी तकलीफ कम होती है। गत १० माससे अस्पताली खुराक मिल रही है। इसके अलावा मेरी दुर्बलता एवं फसली बुखारके हमलोंके कारण मैं अब अस्पतालका मरीज समझा जाने लगा हूं और सख्त मेहनतके कामोंसे मुझे छुट्टी मिली है। जहां तक यहांके जेल-जीवनका सम्बन्ध है, वहांतक मैं प्रसन्नताके साथ कहूंगा कि मैंने जबसे तुमको स्वास्थ्यके बिगडनेकी सूचना दी है तबसे यहांका जेल-सुपरिण्टेण्डेण्ट अपनी शक्तिके अनुसार सुविधाएं देनेका प्रयत्न कर रहा है।

परन्तु इससे यह बात अधिक बलके साथ प्रगट होती है कि मुझे यहांके अस्वास्थ्यकर एवं बुखारवाले जलवायुसे शीघ्रसे शीघ्र हटाना कितना आवश्यक है। जेल सुपरिटेण्डेण्टकी पूरी कोशिशके बाद भी मेरा स्वास्थ्य और वजन घटही रहा है और एक भी पखवाडा बुखार या पेटकी शिकायतके विना नहीं बीतता। मैं तुम्हें विश्वास दिला सकता हूं कि यहांका जलवायु बिल्कुल अस्वास्थ्यकर मान लिया गया है और ऐसे स्थानमें बंद कोठरीका जीवन तो दुगना भयंकर है। बलवान शरीरका आदमी, जिसे जीवनभर कठिन काम करनेकी आदत रही हो, उसका भी स्वास्थ्य यहां नष्ट हो सकता है। प्रत्यक्ष सरकारी डाक्टरोंने यह बात मान ली है।

कैदियोंकी क्षमाके सम्बन्धमें, इंग्लैण्डके शान्ति-उत्सवके दिन यहां एक आज्ञा पढ़ी गयी थी। शायद तुम लोगोंको, हिन्दु-

, इसकी कुछ जानकारी न होगी। उस दिन, तथा उस दिन
सजाकी कमीके कारण, कुछ कैदी इस अपराधियोंकी बस्तीसे
ये गये हैं। परन्तु राजनैतिक कैदियोंके विषयमें असद
उनके सिवाय और कुछ नहीं किया गया। अभीतक एक
कमी भी किसीको नहीं मिली है—हां, दो-एक बंगाली
क कैदियोंको मिली है। सेक्रेटरी ऑफ स्टेट तथा सरकारके
एक आज्ञा यहां पढी गयी थी कि राजनैतिक कैदियोंकी
म करनेके विषयमें सरकार विचार कर रही है। इस विचार
न पडेगा, भिन्न भिन्न प्रांतीय सरकारोंका और जेलके चाल
से जेलके अधिकारियों द्वारा की गयी सिफारिशका। इसके
किसी निर्णयपर पहुंचनेके पहले प्रत्येक राजनैतिक कैदीके
मतोंका ध्यान-पूर्वक विचार किया जायगा। इस भाषाका
मतलब निकाला जा सकता है परन्तु सम्भवतः इसका
अर्थ न होगा। किस समय सरकार निर्णय करेगी—इसका
नहीं। इस बातके साथ साथ जब यह बात भी स्मरण
कि चार वर्ष पहले भारत सरकारने मुझे विश्वास दिलानेकी
थी कि माफीका प्रश्न विचाराधीन है, तब मनमें पक्का
उत्पन्न होता है कि फिरसे उन्हीं शब्दोंको दुहरानेसे शायद
और चार वर्ष लेना चाहती है। इसी तरह
मतों'का जो उल्लेख किया गया है, वह तो
गोंके लिए शाप-स्वरूप है जो राजनैतिक कैदी
हैं। क्योंकि यदि 'व्यक्तिगत मतों'से मतलब हिन्दुस्थानकी
परिस्थितिके विषयमें व्यक्तियोंके मतसे है, तब तो यह

खास कुछ अर्थ रखती है और स्वाभाविक भी है—पर सरकार मनोंको जानेगी किस प्रकार ? यदि व्यक्तियोंकी कैफियतसे ही जाने तो कुछ कहनेकी आवश्यकता ही नहीं। परन्तु यदि कहा–सुनी एवं गुप्त रिपोर्टोंसे मालूम करे—जैसा होनेकी अधिक संभावना है—तब तो सरकार एवं जनताको यही साफ साफ कहना चाहिए कि वे इस विषयपर विचार ही नहीं करना चाहते। क्योंकि चोरों, डकैतों तथा स्वाभाविक अपराधियोंकी सोहबतमें—केवल इन्हीं लोगोंकी सोहबतमें रहनेके लिए बाध्य किये जानेके कारण—,इस बातकी संभावना कम है कि ये लोग हमारे राजनैतिक विचारोंको ही अधिकारियोंके सन्मुख प्रकट करेंगे। ये लोग अणुमात्र भी नहीं जानते कि राजनैतिक विचार किसे कहते हैं ! इन लोगोंका स्वभाव ही इस तरहका बन जाता है कि जिस किसीके विचारोंकी रिपोर्ट देनेके लिए अधिकारी इन्हें कहते हैं, उससे ये स्वभावसे ही द्वेष करने लगते हैं। ज्योंही सरकारी अधिकारी इन 'सभ्यों'को किसी व्यक्ति 'अ' या 'ब' को पहचानने और उसके विषयमें जानकारी रखनेके लिए कहता है त्योंही ये लोग अपने मनमें निर्णय कर लेते हैं कि उक्त व्यक्तियोंके विरुद्ध ही 'रिपोर्ट' करनेसे अधिकारियोंकी निगाहमें उनकी प्रतिष्ठा बढेगी। जेल सरीखी संस्थामें बडेसे बडे अधिकारीको भी उन्हीं आदमियोंकी रिपोर्टोंपर अवलंबित रहना पडता है—वे आदमी जो स्वयं अपराधी और गुनहगार हैं और जो दुरंगी चालोंकी वजहसे ही जेलकी ओहदेदारीकी जगहोंपर मुकर्रर किये जाते हैं। इस लिए मैं सोचता हूं कि यदि जनता ये सब बातें सरकारको समयपर ही साफ साफ न बतला देगी तो सेक्रेटरी ऑफ स्टेटकी

सदिच्छाके होते हुए भी सरकारके वचन-दानका कुछ भी परिणाम न निकलेगा।

तुम्हें इस प्रतिज्ञाके विषयमें कुछ मालूम है? वहां यह बात प्रगट की गयी है? यदि प्रकाशित की गयी है तो क्या प्रांतीय सरकारोंसे अपने अपने मत देनेके लिए कहा गया है, और यदि कहा गया है तो क्या उन्होंने अपना अपना मत प्रकट किया है? क्या किसीने यह प्रयत्न भी किया है कि समय निश्चित किया जाय या कमसे कम सरकार उसे साधारणतया ही प्रकाशित कर दे? मैं फिरसे कहता हूं कि जबतक जनता इस बातको बिलकुल स्पष्ट न कर दे—ठहर ठहरकर अधूरे तौरपर नहीं वरन व्यवस्थाके साथ—कि जनता एकमतसे, हृदयसे तथा दृढताके साथ चाहती है कि शांतिके उत्सवोंका अवसर बीतनेके पहले ही राजनैतिक कैदियोंकी रिहाई कराई जाय, तबतक भारतीय सरकारका, इस विषयमें कुछ करनेका विचार ही नहीं हो सकता और यदि विचार हो भी तो वह स्वयं अधिक कुछ नहीं कर सकती। यह अस्पष्ट प्रतिज्ञा केवल लोकमत जाननेके लिए ही की गयी है और यदि जनता पहलेसे ही इस प्रस्तावित क्षमाके सम्बन्धमें अपनी इच्छा और सहानुभूति प्रगट न करे तो कमसे कम मैं तो सरकारको, यदि वह क्षमा प्रदान न करे, तो अधिक दोष न दूंगा।

यदि कानूनकी १०९ तथा ३०२ दफाका इल्जाम मेरे लिए सत्य है तो सभीके लिए सत्य है। और यदि मैं केवल इसीके लिए मुक्त न किया जाऊं तो कहना होगा कि हिन्दुस्थानमें

'राजनैतिक कैदी' हैं ही नहीं। मैं तो केवल दलीलोंका दिग्दर्शन मात्र करा रहा हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम इस कामको, मैं यहाँ जितना कर सकता हूँ, उससे अधिक अच्छी तरह कर सकते हो। दूसरी बात है 'जेलके चालचलन'की। पिछले ५ वर्षोंमें एक बार भी मुझपर इस इल्जाममें मामला नहीं चला। मेरा विश्वास है कि यहाँके अधिकारियोंको इस विषयमें मेरे विरुद्ध शिकायत करनेका मौका न मिलेगा।

तीसरी बात 'व्यक्तिगत मतों'की है। जिन जिन लोगोंसे मेरा सम्बन्ध आया है—जिसमें सरकार भी सम्मिलित है—उन सबके सन्मुख मैं अपने विचार निश्चित रूपसे साफ साफ बतला चुका हूँ। सन १९१५ में और फिर १९१८ में मैंने अपने विचारोंकी साफ २ कैफियत अपने मनसे ही भेजी थी, यह जानते हुए कि यदि मेरे विचारोंका गलत मतलब लिया जायगा तो मेरे छुटकारे का अवसर भी मेरे हाथसे निकल जायगा। गत वर्ष मैंने अपने पत्रमें तुम्हें जो कुछ लिखा था, ठीक वही बात मैंने सरकारको लिख भेजी थी। मेरा कहना जनताके भी सम्मुख है। इस लिए न तो सरकार और न जनता ही मेरे विचारोंसे अनभिज्ञ रह सकती है। मेरा विश्वास है कि ज्योंही शासन-सुधार किया जायगा, और यदि वह शीघ्र किया जाय, तथा कमसे कम वाइसरायकी कौन्सिलमें लोकमत प्रकट हो सके, तो मैं जराभी संकोच न करते हुए इस शासन-संगठनके आरम्भको सफल बनानेमें पूरी शक्ति लगाऊंगा—वह शक्ति चाहे सूक्ष्मातिसूक्ष्मही क्यों न हो। मैं कानून और व्यवस्थाका समर्थन करूंगा क्योंकि उसीपर सर्व

साधारण समाजकी नींव जम सकती है और विशेष कर हिन्दू सभ्यता की। क्या स्वयं स्कॉच लोग अथवा बोअर्सका बहुतांश इस साम्राज्यमें, जिसमें उनकी उन्नतिके अच्छे अच्छे साधन उन्हें प्राप्त हो सकते हैं, भाग लेनेके लिए तैयार नहीं है ? भारतवर्ष भी—इतनाही नहीं कोई भी राष्ट्र—साम्राज्य एवं कामनवेल्थके बनानेमें स्वभावतः सहायक होगा और होना भी चाहिए। उनको इसके विरुद्ध होनेकी आवश्यकता ही क्या है, जब ऐसा सर्व-साधारण जीवन, अलग अलग विभाजित अकेले व्यक्तित्वसे अधिक फलदायी हो सकता है ? मनुष्य समाज-प्रिय जीव है, वैसेही राष्ट्र भी समाज-प्रिय होता है। इसी लिए, मनुष्यकी सामाजिक प्रवृत्तिके स्वाभाविक विकाससेही साम्राज्य बने हैं और बनना चाहिए, जैसे कि उसके इसी स्वभावके कारण कुटुम्ब और राष्ट्रका भी समाजमें संगठन होता है।

अच्छा प्रिय बाल! पिछले दो दिनोंसे सर्दीके कारण मुझे बुखार आ रहा है, इसी लिए जो कुछ मैं तुमको लिखना चाहता था, उसमेंसे बहुत कुछ छोडना पडता है। तुम अपने स्वास्थ्यका पूरा पूरा ध्यान रखो और हमारे या किसी और बातके लिए मनको दुःख मत पहुँचने दो। अपना काम सरलता-पूर्वक चलने दो। जब तुम्हारी भेंट हुई थी, तब कौटुम्बिक बातोंके विषयमें तुमसे जो कुछ कहा था, उसे भूल मत जाना। खर्च कम करना और थोडी बहुत बचत करते रहना। प्रिय यमुनाने मुझसे कहा था कि बादाम और मिश्री और मिठाई की एक बहुत बहुत बडी पार्सल शीघ्र ही भेजूंगी। पर शायद बहुत

बडी होनेके कारण ही पार्सलके बनानेमें महीनोंका समय लग गया है। वह जब यहां आई थी तब उसकी भेंटसे, तथा यह देखकर कि पहिलेकी तरह ही वह धीरजवाली एवं प्रेमी है, मुझे बहुत सुख हुआ था। परन्तु प्रिय भावजके इस संसारसे उठ जानेके कारण मैं बहुत दुखी हूं। यदि यहांसे मुक्ति होनेपर मैं घर जाऊं, जहां मेरी भावज मेरे स्वागतके लिए तैयार न रहेगी, तब मुक्तिकी खुशी आधीभी न रह जायगी। मेरी मित्र, मेरी बहन, मेरी माता और मेरी सहकारी, सभी वह थी। वास्तवमें उसकी मृत्यु सतीकी ही मृत्यु है। हमारी मातभूमिकी बलिवेदीपर उसने अपनी शांत आत्माकी बलि चढाई। जिस तरह कोई धर्म-वीर अपने देश अथवा धर्मके लिए मरता है, उसी तरह आजकल भारतीय कन्याएं तडपती हुईं, मुरझाती हुईं, अपने प्रियतमोंको मिलनेकी राह देखती हुईं, मर जाती हैं! उनके प्रियतमोंकी भेंट विधाताने ही लिखी नहीं है। चुपचाप कष्ट सहते हुए, किसीको मालूम न होते हुए, देशकी सेवा कर लोक-विख्यात होनेकी आशा न रखते हुए, अपनी बलि चढाकर ये हिन्दू कन्याएं सूख सूखकर, अपने धर्मके लिए, अपनी मातृभूमिके लिए मर जाती हैं! सर्व-साधारण स्त्री जाति ही असीम प्रेमी होती है। परन्तु हिन्दु कन्या! उसका तो कहनाही क्या है! वह जलन पैदा नहीं करती बरन दुःखको मिटाती है, उसको भूल जानेपर भी वह स्मरण रखती है। प्रत्येक हिन्दू कन्या सीताकी अमर कथाकी नयीसे नयी आवृत्ति है। बडे भाईका कहना है कि उनकी ओरसे तुम मथुताईको धीरज दिलाना। भाईको भावजकी जुदाईकी अपेक्षा मथु-ताईके लिए अधिक दुःख है। जब तुम यहां आये थे तब यह देख-

कर मुझे प्रसन्नता हुई कि तुम पूर्णतया स्वस्थ थे और तुम्हारे नस नसमें जीवनका संचार था। इससे भी अधिक स्वस्थ रहनेका प्रयत्न करो। मेरे भावोंकी अधिकता तथा मेरी वर्तमान परिस्थितिके कारण मैं उन लोगोंके प्रति अपनी कृतज्ञता तथा धन्यवाद पूरी तरहसे प्रगट नहीं कर सकता, जिन्होंने व्यक्तिगत अथवा सार्वजनिक सम्बन्धसे, हम लोगोंके साथ इतनी अधिक सहानुभूति प्रगट की और हमारे लिए कुछ न कुछ सुविधा दिलानेका प्रयत्न किया। यह बात सत्य है कि लोगोंकी सहानुभूतिके कारण ही मेरा स्वास्थ्य अधिक न बिगड़ सका और पेचिश तथा मलेरिया बुखार और जेल जीवनके होते हुए भी मैं इस वर्ष जीवित रह सका। मुझे हमेशा इस बातका ध्यान रहा कि मेरे भारतवर्षमें बहुतसे आदमी ऐसे हैं जो मेरी उदासीनतामें हाथ बंटाने एवं मेरा बोझ हलका करनेके लिए तैयार हैं; ऐसे मित्र मौजूद हैं जिन्होंने मेरे विषयमें पूंछताछ की, समाचारपत्रोंने मेरे विषयमें लिखा, कुछ लोग मेरी व्यक्तिगत मित्रता तथा पहचानके कारण प्रयत्नशील रहे और कुछ लोगोंने केवल सच्ची मनुष्यताके कारण मुझसे सहानुभूति प्रगट की। शांताका क्या हाल है? उसे लिखने पढ़नेके लिए अधिक कष्ट मत दो। पर मेरी सखी यमुना को इस विषयमें खूब कष्ट दो। उसने मुझसे प्रतिज्ञा की है कि जब कभी मैं वापिस लौटकर आऊंगा तब वह टाइप-राइटर तथा क्लर्कका काम, वेतन न लेकर, केवल देशभक्तिके लिए करेगी। प्रिय बाबू, अण्णा तथा मेरे सभी सालोंको प्रेम।

तुम्हारा भाई
तात्या—

बारहवां पत्र

—*—

ॐ

श्रीराम

कारा—कोठरी
पोर्ट ब्लेअर।
६—७—१९२०

प्रिय बाल!

तुम्हारा बड़े भाईके नाम भेजा हुआ पत्र ता० २-६-२० का हमें मिला, जिससे हमारी चिन्ता मिटी। तुम्हारा यहां आनेका विचार बार बार स्थगित होता रहा है, इसी वजहसे हमारी चिन्ता बढ़ गयी थी। स्वास्थ्य वैसाही है जैसा तुमने देखा था। न वो सुधराही है न अधिक बिगड़ाही। परन्तु तुम्हारी भेंटके बादसे बड़े भाईका स्वास्थ्य बिगड़ताही जा रहा है। अब उनकी बारी है। शिकायत वही है—अन्नका न पचना और शिरका बिगाड़। उनका वजन १०६ पौण्ड है। मैं इतना लिखता हूं इससे यह न समझ लेना कि हमारा स्वास्थ्य और भी अधिक बुरा है। ऐसी बात नहीं है। जैसी हालत है, ठीक वैसीही मैं लिख रहा हूं। अगर कोई खराबी पैदा हो जायगी तो तुम्हें लिखूंगा।

आखिर सबको क्षमा प्रदान की ही गयी। सैकड़ों आदमी छूट रहे हैं। बम्बई नेशनल यूनियन, हमारे नेता और देशभक्तोंको

धन्यवाद है कि उन्होंने राजनैतिक कैदियोंकी रिहाईके लिए एक सार्वजनिक प्रार्थनापत्र भेजनेका आंदोलन उठाया, उसका समर्थन किया और प्रार्थनापत्रपर हस्ताक्षर किये। इतने थोडे समयमें ७५००० से अधिक आदमियोंके हस्ताक्षरोंका होजाना ही सरकार-पर बहुत प्रभाव डाल सकता है, यद्यपि उस प्रभावको सरकार स्वीकृत न करेगी। कमसे कम इस सार्वजनिक प्रार्थनापत्रने राज-नैतिक कैदियोंकी हैसियत, नैतिक दृष्टिसे तो बढा दी। और उनकी ही नहीं, वरन जिस सत्कार्यके लिए वे लडे और काम आये, उसकी भी प्रतिष्ठा बढी। अब यदि हमें मुक्ति मिले तो वह स्वीकार योग्य होगी, क्योंकि जनता हमारी वापसीकी इच्छा प्रगट कर चुकी है। हम लोगोंके लिए हमारे देशवासियोंने जो चिंता और सहानुभूति प्रगट की है उसके लिए हम पूरी तरहसे धन्यवाद भी नहीं दे सकते। हमारी जितनी योग्यता थी उससे भी अधिक आदर उन्होंने हमारा किया है। उनके प्रयत्न बिलकुल ही वृथा न हुए। यद्यपि हम दोनों क्षमा-प्रदानसे वंचित रखे तथा घोषित किये गये हैं और आजभी बंद कोठरियोंमें सड रहे हैं, तथापि जिस आन्दोलनको हम गत ८ वर्षोंसे हडतालों, पत्रों, दरखास्तों, समाचारपत्रों तथा व्या-ख्यानों द्वारा, यहां और अन्य स्थानोंमें कर रहे हैं, उसके कारण सैंकडों राजनैतिक कैदियों एवं सहकारियों, तथा समदुखियोंको मुक्त हुए देखकर हमें संतोष होता है और हम समझते हैं कि हमारे आंदोलनका हमें पूरा फल मिल गया।

हालकी दी हुई शाही मुआफीके विषयमें मैंने अभी २-४-२० तारीखको भारत सरकारको एक दरखास्त दी है।

उक्त दरखास्तमें सैकड़ों राजनैतिक कैदियोंकी रिहाईके लिए तथा अपनी सन १९१८ की दरखास्तको कुछ अंशमें स्वीकार कर लेनेके लिए, सरकारको धन्यवाद देनेके पश्चात मैंने सरकारसे प्रार्थना की है कि वह शाही मुआफी उन लोगोंको भी देवे जो अभी जेलमें ही हैं और उनको भी जो विदेशोंमें रहते हैं। हिन्दुस्थानकी राजनैतिक अवस्थाके सम्बन्धमें मैंने अपने विचार फिरसे निश्चित रूपसे लिख दिये हैं; विशेष कर उन प्रश्नोंके सम्बन्धमें, जो आज भी सरकारी कर्मचारियोंमें बार बार चर्चाके विषय बन रहे हैं और जो स्वयं कुछ अफसरों द्वारा अभी हालहीमें मुझसे पूंछे गये थे।

हम ऐसे सर्वव्यापी राज्यमें विश्वास रखते हैं, जिसमें मनुष्य मात्रका समावेश हो सके और जिसकी समस्त पुरुष और स्त्रियें नागरिक हों, और वे इस पृथ्वी, सूर्य, जमीन और प्रकाशके उत्तम फल प्राप्त करनेके लिए मिलकर परिश्रम करते हुए उन फलोंका समान रूपसे उपभोग करें; क्यों कि यही सब मिलकर वास्तविक मातृभूमि या पितृभूमि कहाते हैं। अन्य विभाग और भिन्नताएं यद्यपि अनिवार्य हैं तथापि वे अस्वाभाविक हैं। राजनीति-शास्त्र एवं हुनरका उद्देश्य ऐसा मानुषी राज्य है या होना चाहिए; जिसमें सभी राष्ट्र अपना राजनैतिक अस्तित्व अपनी ही पूर्णताके लिए मिला देते हैं; ठीक उसी तरह जैसे सूक्ष्म पिंड (सेल्स Cells) इन्द्रियमय शरीर की रचनामें, इन्द्रियमय शरीर पारिवारिक समूहमें, और पारिवारिक समूह संघमें और संघ राष्ट्र-राज्योंमें मिल जाते हैं। मनुष्यत्व सब प्रकारकी देशभक्ति और देशाभिमानके भावोंसे ऊंची है, इस

लिए जो साम्राज्य अथवा कामनवेल्थ (सर्व-सम्पद) विरोधी जातियों एवं राष्ट्रोंको एक-जीव करके, यदि सम-जातीय नहीं तो, एकतान पूर्णतामें इस तरह परिणत कर देना है कि उसमेंका प्रत्येक भाग, जीवनकी सभी श्रेष्ठ अवस्थाओंको समझने, वृद्धिगत करने एवं उनका उपभोग करनेके लिए अधिक योग्य बन सके, वह साम्राज्य आदर्शकी पूर्ति करने वाला है; अतएव मैं कामन-वेल्थके बनानेके प्रयत्नमें हृदयके साथ सम्मिलित हो सकता हूं। वह कामनवेल्थ न तो ब्रिटिश होगा और न हिन्दुस्थानी, वरन जबतक कोई अन्वर्थक नाम न मिले तबतक वह आर्यन कामनवेल्थ—आर्य जातीय राष्ट्रोंका संघ—कहलावे ! इसी आदर्शको सामने रखकर मैंने पिछले वर्षोंमे काम किया है। इसी उद्देश्यसे आगे भी काम करनेके लिए मैं तैयार हूं। इसलिए मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि सरकारने अपना दृष्टि-कोण बदल दिया है और यह इरादा कर लिया है कि हिन्दुस्थानके लिए वैध मार्गोंसे स्वतंत्रता, शान्ति, सम्पन्नता एवं जीवनकी पूर्णताका मार्ग सम्भव हो सके। मुझे विश्वास है कि कई क्रांतिकारी ऐसी अवस्थामें मेरे ही समान अपने मार्गोंको छोड़ देनेके लिए तैयार होंगे और सुधरी हुई कौन्सिलों जैसी अध-कच्ची भूमिमें इंग्लैण्डके साथ प्रतिष्ठा-पूर्ण संधि करनेके लिए तैयार होंगे तथा जबतक उन्नतिके मार्गपर आगे बढ़नेकी सूचना न मिले तबतक वहीं काम करते रहेंगे।

मनुष्यता ही ऊंची देशभक्ति है। इसी सिद्धान्तको माननेके कारण, जब हमने देखा कि मनुष्य जातिका एक भाग अपनीही धाक जमा रहा है और विषैले घावकी तरह इस ढंगसे बढ़ रहा

है कि समस्त मनुष्य जातिको उससे हानि पहुंचनेकी सम्भावना है, तब हम बेचैन हो गये। इसी सिद्धान्तने, अन्य परिणामकारी साधनोंके अभावमें हमें चीर-फाड करने वाले डाक्टरके समान, शस्त्रोंके उपयोग के लिए बाध्य किया। हमारा विश्वास था कि इस समय क्षण भर के लिए की गयी सख्ती आगे चलकर दयाका कार्य कहलायगी। परन्तु शक्तिसे ही शक्तिका मुकाबला करते हुए भी हम अत्याचारसे हृदयसे नफरत करते रहे और आज भी करते हैं। क्योंकि अत्याचारका अर्थ है अपनी धाक जमानेके लिए किया गया शक्तिका उपयोग—वह शक्ति जो जीवन नष्ट करनेवाली है। मैंने स्वप्नमें भी कभी कोई धाक जमानेकी महत्वाकांक्षा—व्यक्तिगत अथवा राष्ट्रीय—नहीं की। अत्याचारमें भाग लेना तो अलग रहा, मैं तो उसका अपनी पूरी शक्तिभर विरोध करता रहा। जब कभी मैंने किसी शक्तिशाली संघको किसी बलहीन परन्तु सत्य-पथावलम्बी शत्रु पर अत्याचार करते देखा, तभी मैंने उसका विरोध किया। पिछले दिनों, महत्वाकांक्षी मनुष्यों एवं राष्ट्रों द्वारा किये गये अत्याचारोंका, केवल हिन्दुस्थानके बाहरके अत्याचारोंका नहीं परन्तु हिदुस्थानके भीतर भी, मैंने घोर विरोध किया है। मैंने हिन्दुस्थानकी जाति-पद्धति और अछूत पद्धतिका भी उतनाही विरोध किया है जितना, उसपर (भारतपर) बाहर रहकर हुकूमत चलाने वाले, विदेशियोंका।

इस तरह हम लोग अपनी खुशीसे नहीं, वरन आवश्यकताके कारण, क्रांतिकारी बने थे। हमने देखा कि भारतवर्ष और इंग्लैण्डके

हितके लिए आवश्यक है कि उनका आदर्श उन्नतिकारी तथा शांति-मय ढंगसे और परस्पर सहायता एवं सहकारितासे प्राप्त किया जाय। यदि आज भी वह बात हो सकती हो तो मैं शांतिमय मार्गोंका पहले ही अवसरपर उपयोग करूंगा। और क्रांति अथवा अन्य उपायोंसे तैयार किये गये, पहले वैध साधन रूपी छिद्रमेंसे—वह छिद्र चाहे कितना ही तंग क्यों न हो—स्वराज्य-गढ़में प्रवेश करूंगा और उस छिद्रको चौड़ा बनानेका यत्न लगातार करता रहूंगा, जिससे विकासका प्रवाह बिना रोक टोक बहता चला जाय।

यदि सरकारद्वारा प्रस्तावित शासन-सुधार पूरी कोशिशके साथ काममें लाये जायँ तो वे उपरोक्त वैध छिद्रका निर्माण करेंगे और तब क्रांतिका कार्य समाप्त हो जायगा और हम सब लोगोंका आदर्श एवं रण-गर्जन होगा, विकास। और मैं, मातृभूमिके एक तुच्छ सिपाहीकी हैसियतसे अपनी पूरी कोशिशके साथ सुधारको सफल बनानेका प्रयत्न करूंगा, अर्थात उनका इस तरह उपयोग करूंगा कि वे हमारी पीढ़ीके उच्च ध्येयकी, हिन्दुस्थानको स्वतंत्र श्रेष्ठ एवं प्रभावशाली बनानेके उद्देश्यकी, नींवका काम दें और हम मनुष्य मात्रके निश्चित अंतिम ध्येय तक दूसरोंके अगुआ बनकर अथवा दूसरोंके साथ मिलकर आगे बढ सकें।

क्रांतिकारियोंकी छावनीमें कार्य करते समय मेरे यही विचार थे। और आज १२ वर्षतक एकांत कारा-कोठरीमें मुंदे जानेके पश्चात भी मेरे विचार यही हैं। यह बात सत्य है कि हम उन कानून-कायदोंके प्रति वफादार नहीं रह सके और न उनसे प्रेम कर

सक जो तलवारके बलपर जमाये गये हैं तथा उन शासन-संगठनों को भी हम नहीं मान सके जो अत्याचारके भयानक स्वरूपको छिपानेके लिए आवरण मात्र हैं; तथापि यह सत्य है कि हमने इस बातको अन्तःकरणसे अनुभव किया और आज भी करते हैं कि कानूनकी सहायता करना हमारा धर्म है। 'कानून'से हमारा मतलब स्वतंत्र राष्ट्रके उस धर्म-संमत निश्चयके प्रकाशनसे है, उस शासन विधानसे है, जो स्वतंत्र पुरुषों और स्त्रियोंके प्रयत्नोंको, मनुष्यमात्रकी भलाई तथा ईश्वरकी प्रतिष्ठा तक पहुंचनेके लिए सम्मिलित संगठित और एकरस बनाता है।

भारतीय मंत्रियों जैसे कुछ उच्च अफसर तथा अन्य कुछ लोग प्रायः प्रश्न पूछते हैं कि "यदि तुमने भारतके पुरातन राजाओं के खिलाफ बगावत की होती तो क्या नतीजा हुआ होता? ये लोग विद्रोहियोंको हाथीके पांवके नीचे कुचलवा देते थे!" इसके उत्तरमें मैं कहूंगा कि सिर्फ हिन्दुस्थानमें ही नहीं वरन इंग्लैण्डमें तथा संसारके अन्य देशोंमें भी किसी समय विद्रोहियोंकी यह हालत हुई होती। परन्तु फिर कोई यह बतलावे कि ब्रिटिश लोगोंने दुनियाभरमें इस बातकी हाय हाय क्यों मचाई थी कि जर्मनोंने हमारे कैदियोंके साथ बुरा बर्ताव किया और उन्हें ताजी रोटी और मक्खन खानेके लिए नहीं दिया? अगर जर्मन इनसे कहते कि "ताजा मक्खन और रोटी माँगते हो! एक समय ऐसा भी था जब जिंदा कैदियोंकी खाल खिंचवायी जाती थी और उन्हें थार या मोलोक जैसे युद्धके देवताओं पर बलि चढाया जाता था?," तो ये लोग क्या जवाब देते! असल बात यह है कि मनुष्यने

आज सभ्यतामें जो स्थान प्राप्त किया है वह सारी मानव जातिके प्रयत्नोंका परिणाम है और इसी लिए वह सभ्यता मानव जातिकी संपत्ति है एवं सबको उसका लाभ पहुँचता है। यदि जंगली लोगोंके समयके साथ तुलना करके कहा जाय तो यह बात ठीक है कि मेरी जांच की गई और इन्साफके साथ मुझे सजा दी गयी; मनुष्य-भक्षक जंगली जातियोंकी अपेक्षा सरकार अपने कैदियोंके साथ अच्छा व्यवहार करती है और इन्साफके साथ सजा देती है! यदि इसी तारीफसे सरकारको सन्तोष होता हो तो वह अपना पूरा संतोष करले। परन्तु इसके साथ यह नहीं भूलना चाहिए कि यदि पुराने समयमें राजा लोग अपने कैदियोंकी जिन्दा खाल खिंचवाते रहे हैं तो विद्रोही लोग भी जब, उनकी बारी आती थी, तब शासकोंकी खाल खिंचवाते रहे हैं! और यदि ब्रिटिश लोगोंने मुझसे या अन्य विद्रोहियोंसे अधिक इन्साफका व्यवहार किया, अर्थात कम जंगली-पन किया, तो मैं उनको विश्वास दिलाता हूं कि यदि भाग्य-चक्रके फेरमें भारतीय विद्रोहियोंकी बारी आवे तो वेभी ब्रिटिश शासकों को इतनी ही नर्मी और इन्साफ के साथ रखेंगे।

जहां तक हमारी मुक्तिका सम्बन्ध है, तहांतक इस दरखास्त से अधिक आशा मत रखना। हमने अपनी आशाको कभी बढ़ने नहीं दिया है। इसलिए यदि हम मुक्त न भी किये जायें तो भी हम अधिक हताश न होंगे। जो कुछ होगा, उसका मुकाबला करनेके लिए हम तैयार हैं। तुम अपना पूरा प्रयत्न कर चुके हो और तुम्हारे ही अथक परिश्रमके कारण राजनैतिक कैदियोंकी

मुक्तिका प्रश्न इतना महत्वपूर्ण हो सका और यद्यपि हम दोनों मुक्त न हुए, तोभी अन्य सैकड़ों भाइयोंको आजादी मिल गयी।

आशा है तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा। सभी मित्रों एवं सम्बंधियोंको प्रेम और प्रणाम।

तुम्हारा भाई
वान्या—

मरणोन्मुख शय्यापर

(सन १९१९ से १९२१ तक अंदमानकी कारा-कोठरीमे श्री० विनायकराव सावरकरका स्वास्थ्य बिगडता ही गया। डाक्टरोंको भी भय मालूम होने लगा कि शायद् सावरकरजीको क्षय हो जाय। एक साल तक वह केवल दूधपर ही रहे और बिस्तर न छोड सके। ऐसी अवस्थामें तो वे मृत्युको भी अच्छा समझने लगे और मृत्युके आगमनकी संभावना भी दिखाई देने लगी। ऐसे समय उन्होंने मराठी भाषामें एक अतुकांत कविताकी रचना की। इस कविताका छंद मराठी-काव्यमें बिलकुल नया है। उक्त कविताका भावार्थ नीचे दिया है।)

मृत्यो! यदि तू आनेके लिए तैयार ही है, तो खुशीसे आजा। ये कोमल फूल कुम्हलानेसे डरते हैं, रससे सराबोर अंगूर सूखनेसे डरते हैं, पर मैं तुझसे क्यों डरूं? मैं अपने प्यालेमें आंसुओंकी शराब पीता रहा हूं, पर वह अभीतक समाप्त नहीं हुई है! यदि उसका नैवेद्य (भोग) खाना तुझे पसंद है, तो आजा।

और यदि तू कहे कि अभी तो तेरे दिन बाकी हैं तथा तू जवान भी है! तो मैं कहूंगा कि बहुतसे छोटे-बडे, दिन भरका काम करके समाप्त हो चुके हैं। जोड-तोड लगाकर मैंने अपने जन्मका ऋण चुका दिया है। कभी श्रुति-जननीके चरण-तीर्थका सेवन कर, कभी संतोंके ध्रुव चरणोंको पकडकर और आशाकी इस श्मशानभूमिमें

१२ वर्षतक तपस्या करके मैंने ऋषि-ऋण चुकाया। लडाईका शंख फूंककर तथा दुंदुभि नाद करके और रघुवीरकी प्रथम रणाज्ञाके होते ही, उसी समय पहिला हमला करके देव-ऋण चुकाया! उस रण-यज्ञाग्निमें अस्थि और मांस ईंधनकी तरह जल गया और आज मेरे यौवनकी राख ही अवशिष्ट है! इसलिए शास्त्रोंके अनुसार पितृ-ऋण चुकानेको मैंने दत्त-विधानसे निपुत्रिकत्व हटाया है। ये भारतके नवयुवक मेरे ही पुत्र हैं। जहाँ जहाँ पलनेमें नयन--कमल चमकते हैं, वहाँ वहाँ मैं सृष्टि के कुतूहलको देखता हूं! जिस जिस स्मित-मधुर मुखपर कैशोरी कोमलता दिखाई देती है; उस उसको देखकर मेरे प्रेमपूर्ण हृदयमें वत्सलता उमड पडती है और नवयुवकोंके भाल-पटल पर जब कभी उदयोन्मुख तरुण तेजस्विता दिखाई देती है तब मेरे हृदयमें भी हमारे भविष्यत वंशके गौरवकी नयी आशाएं और उच्च आकाक्षाएं उदित होती है। केवल भारतीय ही नहीं वरन मानवीय वंशके गौरवके लिए ये सभी कोमल नव-बालक मेरे ही पुत्र है। अखिल मानव जातिके यौवनमें ही मैं अपने यौवनका अनुभव करता हू और मेरे पितर इसीमें प्रेमतर्पण अनुभव करेंगे। इस लिये मृत्यो! यदि तू आना चाहे तो आनन्दसे आ जा। तोड-जोड करके मैंने इस तरह अपने ऋण चुका दिये हैं।

और प्राय: दिनके काम भी सब समाप्त हो चुके है। दिन कब उगता है कब डूबता है, किस दिन कौनसा काम करना चाहिए आदि बातोंके विषयमें पंचांग और ज्योतिषि-पंडित मुझे भिन्न भिन्न बातें कहते हैं। तथापि लोक-संग्रहके लिए मानवीय हितकी प्राप्तिके लिए, सज्जनों द्वारा अनुमोदित कामों को ही मैंने धार्मिक

कार्य समझा और तदनुरूप एक व्यक्तिका जितना भाग हो सकता है उतना बोझ प्रसन्नताके साथ यथाशक्ति यथापरिस्थिति, किसी भयके कारण अपने संकल्पित व्रतको न तोड़ते हुए, मैंने उठाया।

सत्कुलमें मैंने जन्म ग्रहण किया। अव्यंग देह मिला। जनक और जननी परम दयालु थे। उनसे भी अधिक वत्सलताके साथ मेरा भरण-पोषण करने वाला तपस्वी ज्येष्ठ भ्राता मुझे मिला। मूर्तिमान विनय सरीखा छोटा भाई मिला। प्रिय-करोंका प्रेम-पुण्य मुझे मिला। मनुष्यके जीवनको सार्थक करने वाला, उसकी आयुके समयको रम्य बनाने वाला तथा उसके चरित्रको पवित्र बनाने वाला महान आदर्श मैंने सामने रखा। कुछ जप-तप किया। थोड़ासा यश मिला। कविरत्नोंसे विभूषित शारदा-मंदिरके सभामंडपमें मान सन्मान भी मिला। नाना प्रकारके रसोंका स्वाद लिया। सैकड़ों प्रदेशोंके जलवायुके ललित सुगंधोंको मैंने सूंघा। पंचाग्निके प्रखर दाहक उत्तापसे लेकर प्रीतिके मृदु एवं स्निग्ध आलिंगनोंतक शीतल शीतोष्ण उष्ण आदि सभी स्पर्शोंका अनुभव किया। सैकड़ों सुर, सैकड़ों भाषाएं, सैकड़ों मंजुल कण्ठोंके नवीन गीत सुने और मृत्युके सैकड़ों कठोर कण्ठोंकी घरघराहट भी सुनी। नाना प्रकारके देश, जाति और लोगोंको देखा। संसार रूपी महासंग्रहालयमें घूमते हुए अनेक दृश्य देखे। सुन्दरता सुरूपता सुलक्षितताको आंखोंने थोड़ासा देखा। मृत्यो! यदि तेरी इच्छा हो तो इन आंखोंको तू सदाके लिए मूंद दे।

तू यदि आंखोंको बंद करना चाहे तो कर, पर आंखोंने बहुत कम देखा है। प्रीतिके मधुर रसका मैं ——द करने ही

वाला था कि सदाके लिए मेरा विरह हो गया। और इस तरुणाव-स्थामें जिस धुराको प्रौढ वृषभ भी नहीं उठा सकता वह मुझे भरी दुपहरमें उठानी पड़ी है। इस लिए आयुकी चांदनीमें खेलनेकी इच्छा अभी पूरी नहीं हुई है। मैं जानता हूं कि ययाति राजाने अपनी समस्त आयुभर खेल किया तोभी उसकी लालसा तृप्त नहीं हुई। मैं देखता हूं कि इच्छाके बीजसे भोगका फल पैदा होता है पर उसमें भी फिर इच्छाका बीज फलता ही है। मैं इस बा-तका भी अनुभव करता हूं कि एक भोजनसे एक भूखको जो तृप्ति होती है वही हजारवें भोजनसे हजारवीं भूखकी भी होती है। मेरे जीवन-ग्रंथके भविष्यतके पृष्ठ यदि पिछले पृष्ठोंकी पुनरावृत्तिसे ही भर-ने हैं तो मैं तुझे स्वयंही कहूंगा कि इस जीवन-लेखको यहीं इसी पृष्ठपर समाप्त कर दे। मैंने दिन वृथा नष्ट नहीं किया है इस लिए मुझे दिनके डूबनेका भी दुःख नहीं है।

मुझे कलका भी भय नहीं है। मृत्युकी भरी हुई अंधकार-पूर्ण लतापर ही यदि दूसरा दिन खिलनेवाला हो तो भी मुझे भय नहीं है। बड़े लोग कहते हैं कि हम जो कुछ यहां बोते हैं वही वहां फल-ता-फूलता है। और मैंने उन बीजोंके बोनेमें कष्ट उठाया है जो परमात्माने अत्युत्तम समझ एवं चुनकर फलकी आशा न रखते हुए बोनेके लिए मुझे दिये थे। "तू जिस तरह कार्य करेगा, सम-परि-स्थितिमें अन्य लोग भी वैसाही कार्य करेंगे, अतएव जिससे लोक-विनाश न होवे ऐसा कार्य तू करना।" इस आज्ञाके अनुसार कार्य करते रहनेका मैंने बचपनसे ही प्रयत्न किया। 'तु अन्योंको अपने

साथ जिस तरहका व्यवहार रखते देखना चाहता है वैसाही व्यवहार तू उनके साथ कर।' इस संत-वचनका प्रत्येक क्षणमें पालन करनेका मैंने यत्न किया है। यदि मैंने किसी अन्य मार्गका अवलम्बन किया है तो आपद्-धर्म समझकर, क्योंकि स्वयं धर्मने ही मुझे आपत्तिके हाथों सौंप दिया था। अपने कारागारके आंगनमें जब कभी मैं हरी घासके गलीचेपर दुबा कदम घूमता, तब मेरा चित्त आत्मौपम्यमें विलीन हो जाता और मेरे पांवका चलना बन्द होकर एक एक घड़ी तक मैं खड़ा रहता, उन कोमल तृणांकुरोंको कुचलनेके लिए मेरे पांव आगे न बढ़ते। भोजन करते समय हाथका कौर हाथमें ही रह जाता, यह सोचकर कि इसमें जो अन्न-कण हैं वे सब बीज ही हैं। जितने बीज हम खाते हैं उतनी भ्रूणहत्याएं करते हैं। मुझे मालूम होता था कि मैं पागल हो गया हूं। सभी वस्तु मात्रको अपने जैसा समझकर तदनुसार बरतनेका जब मेरा मन प्रयत्न करता तब पद पद पर मुझे मरणप्राय दुःख होता, यह देखकर कि विचारके अनुसार पूर्ण आचार रखना असंभव है। तथापि मैंने यत्न किया। अज्ञता अथवा अशक्यताके कारण ही यदि भूल हुई हो तो हुई हो। इस लिए मुझे भविष्यका भय नहीं है। श्मशान-भूमि पर-तट अज्ञात प्रदेशमें यात्राको सुलकर करानेवाला परिचय-पत्र, स्वयं भगवान श्रीकृष्णका, हमारे पास है। वह पत्र सज्जन धर्मात्मा एवं योगियोंके घरके पतेका है। उसमें लिखा है 'नहि कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति।' कल्याणकारी कार्य करनेवालेकी कभी दुर्गति नहीं होगी, नहीं होगी। निरीश्वरवादी निसर्गवादी लोग भी यही कहते हैं।

इस लिए, यदि जो कुछ कहा जाता है वह सब सत्य हो, स्वर्ग नरक, जन्मांतर, बंध, मुक्ति आदि निज कर्मोंका परिपाक ही हो, तो जिस अदृष्ट नगरमें मौतका दरवाजा खुलता है वहांके बगले हमने पहलेसेही कर्म और धर्मका नियत बयाना देकर अपने लिए रक्षित (रिजर्व) कर रखे हैं।

परन्तु यदि स्वर्ग, जीव, बंध या कर्म आदि केवल इसी जीवनका मृगजल है, यदि संघातसे उत्पन्न होनेवाला भावही जीव हो और उसका पृथक्करण होकर अभाव होनाही मृत्यु हो, तब तो और भी अच्छा है। मृत्यु, तब एक सुदृढ़ अथवा प्रत्यक्ष मुक्ति है। पांचों भूतोंके अपने अपने भाग अलग होकर नये मिश्रण में स्वेच्छानुसार अथवा अकेले ही शून्यमें विहार करेंगे। चमकीले इंद्रधनुकी तरह संज्ञाके आकाशमें यदि थोडी देर तक 'मैं' शोभायमान रहूं और शीघ्र ही मेरा 'मैं' समस्त विश्वके अंतर्हित 'मैं' में अंतर्धान हो जाय, तो, मृत्यो! तू मृत्यु नहीं, मुक्ति है!

परन्तु मृत्यो, शर्त यही है कि शीघ्र आजा। यदि आना हो तो शीघ्र आजा। संसारमें लोग तेरी निंदा करते हैं, तुझसे द्वेष करते हैं, वह इस लिए नहीं कि तू स्वयं निर्दय अथवा निंद्य है—क्या तुझे देखकर कोई वापिस आया है जो कह सके कि तू कैसा है?—पर मृत्यो! तू संसारमें अप्रिय है, तेरी अग्रगामी, पीडक, भयंकर एवं क्रूर रोग-सेनाके कारण। मुझे ही तू अप्रिय नहीं है, वरन्, जो संसारमें अजात-शत्रु कहाया, जिसे प्रिय अप्रिय, हानि लाभ समान थे, उस भगवान श्री गौतमको भी रोग अप्रिय था।

'धम्मपद'में भगवानने कहा है कि 'संसारमें आरोग्यके समान दूसरा लाभ नहीं है।' इस लिए जो तेरे लिए स्वेच्छासे दरवाजे न खोले, जीवनके उन हठी दुर्गोंको जीतनेके लिए कष्टप्रद रोगोंका दल तू वहां भेज। मैं तो अपने घरके दरवाजे—जो यदि मैं न खोलूं तो तोड दिये जायंगे—स्वयं ही खोलकर तेरे अनिवार्य स्वागतके लिए तैयार हूं! इसलिए, अखिल-वीर-विजेता मृत्यो! तू अकेला ही, किसीको पहिले भेजे बिना, अकस्मात ही आजा।

पर यदि अकेला आना तेरे लिए असंभव हो तो, रोगोंकी क्रूर सेनाकी पीडाका कष्ट सहनेके लिए भी मैं प्रस्तुत हूं। तू देखना ही है कि गत दो वर्षोंसे मैं बिस्तरपर पड़ा हुआ हूं। जिसे जीवनका मधु मधुर मालूम हुआ, जिसकी आंखोंने प्रकाशका उपभोग किया; जिसके हृदयने प्रीतिका अनुभव किया; वह मैं उन सब सुखोंके मूल्यके तौरपर मृत्युकी यातनाएं भी कर्तव्य समझकर सहनेके लिए तैयार हूं।

---

* अनुक्रमणिका

* अनुक्रमणिकामें लिखी गयी संख्यायें पृष्ठोंकी सूचक हैं। सम्पादक